भोजपुरी अकादमी

पत्रिका

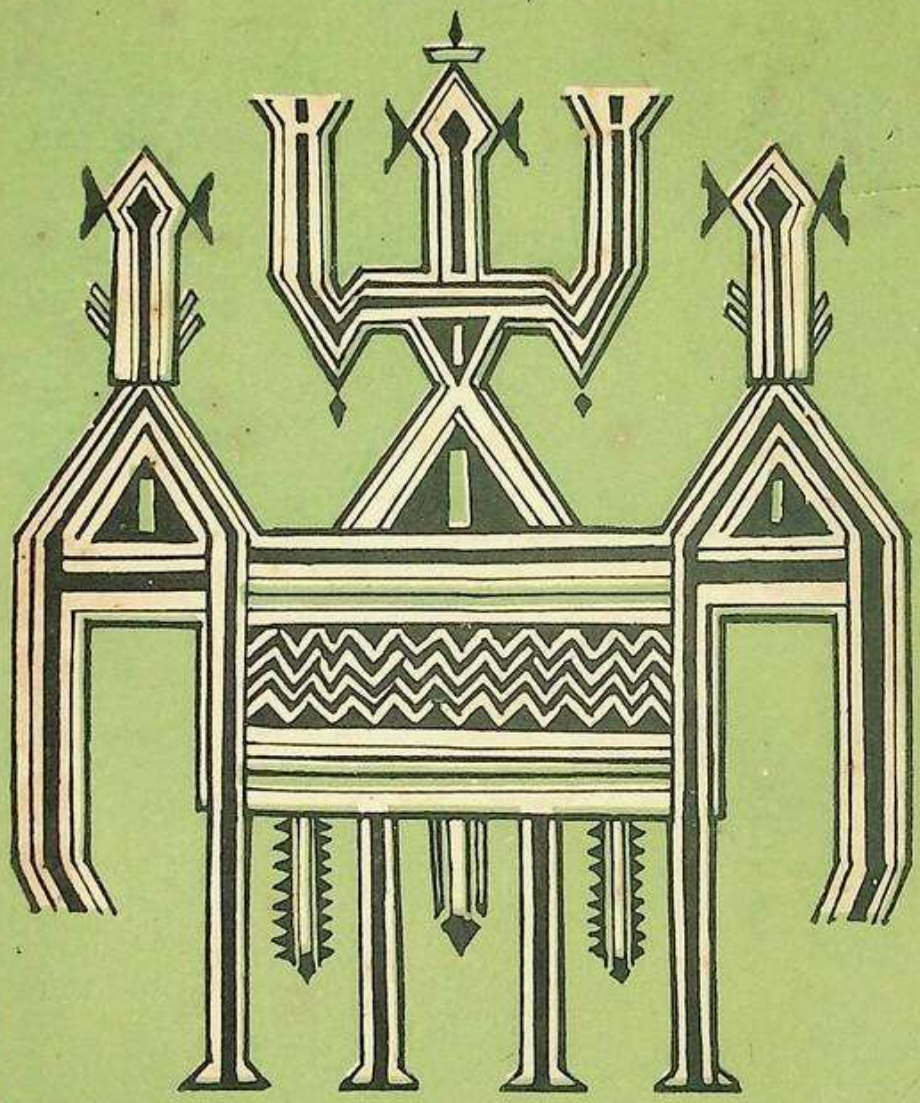

प्रधान सम्पादक

मर्यादा त्रिपाठी स

पुस्तक पुरस्कार-योजना

भोजपुरी अकादमी सन् १९७८ तक के प्रकाशित भोजपुरी पुस्तकन पर पारितोषिक देबे के निरनय कइले बा। सन् १९७८ तक ले प्रकाशित भोजपुरी के गद्य आ पद्य के पुस्तकन पर रू० ५०१/- (पाँच सौ एक) के, दूनू विधन पर पुरस्कार आ प्रशंसा-प्रमानपत्रो दिहल जाई। पुरस्कार-प्रतियोगिता में भाग लेबे खातिर पुस्तक के चार-चार प्रति अधोहस्ताक्षरी का पास ५ मार्च, १९८० ई० तक आ जाये के चाहीं।

हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय'
निदेशक
भोजपुरी अकादमी,
बोरिंग रोड, पटना-८००००१

सूचना

भोजपुरी अकादमी (पटना) संकल्प लेलसि हा कि भोजपुरी भाषी इलाका के सन १८५७ ई० से १९२९ ई० तक के चाहे १८५७ के पहिलहूँ के नामी बिद्वानन, साहित्यकारन, गायकन, बादकन, नर्तकन, पहलवानन, खेलाड़ियन, बीरन, समाज-सेवीन अउर संतन के परिचय के संकलन कइके पुस्तकाकार प्रकाशित करी। अपने सभसे अनुरोध बा कि अपना इलाका के एह तरह के लोगन के परिचे भा जीवनी भेजीं। विशेष जानकारी ना होखे त उन्हुकर खाली नावों-गाँव अउर पता भेजीं। भेजेवाला लोग आपन नाँव-गाँव अउर पता जरूर भेजसु, ताकि उल्लेख कइल जा सके कि अमुक के जरिए ई सूचना मिलल हा। एकर सूचना आ परिचे नीचे लिखल पता पर आवे के चाहीं।

निदेशक
भोजपुरी अकादमी
बोरिंग रोड, पटना-८०० ००१

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी अकादमी पत्रिका

[भोजपुरी अकादमी, पटना के मुखपत्र]

बरिस : १ अक्टूबर-दिसंबर, १९७९ अंक : ६-७

संपादक-मंडल

श्रीगणेश चौबे
डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय
डॉ० रामवचन राय
श्रीविश्वनाथ सिंह
श्रीरामेश्वर सिंह 'काश्यप'
श्रीरामेश्वरनाथ तिवारी

संपादक

हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय'

भोजपुरी अकादमी

बोरिंग रोड, पटना—८०००१

दाम : तीन रुपया

www.bhojpurisahityangan.com

बरिस १ : अंक ६-७] [अक्टूबर-दिसम्बर १९७६

भोजपुरी अकादमी पत्रिका

रचना-सूची

क्रम-संख्या		पृ० सं०
१. संपादक के ओर से		३
२. भोजपुरी लोक साहित्य में चोर आ चोरी	श्री रसिकबिहारी ओझा 'निर्भीक'	७
३. भोजपुरी कारक के विभक्ति	श्री विंध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव	९
४. भोजपुरी में भाव अउर अरथ के प्रदर्शन	डा० शालिग्राम ओझा	१३
५. मेघदूत के अलका नगरी	श्री हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय'	१६
६. भोजपुरी भासा के बारे में कुछ विचार	प्रो० आनन्द मूर्त्ति	२२
७. नया युग (एकांकी)	श्री विष्णु कमल डेका	३५
८. बहेलिया के सोनपिंजरा आ फुलसुंघी चिरइयाँ	श्री भृगुनन्दन त्रिपाठी	३९
९. अमर एगो बा परान (कविता)	श्री लालमुनि 'निर्मोही'	४३
१०. चलऽतनी गइयाँ के ओर (कविता)	श्री वीरेन्द्रकुमार मिश्र 'अभय'	४४
११. गाँव के राति (कविता)	श्री आदित्यप्रसाद सिन्हा	४५
१२. हमार संसार (कविता)	श्री माधव पाण्डेय 'निर्मल'	४६
१३. गीत (कविता)	श्री रामेश्वर प्रसाद सिन्हा	४६
१४. हमरो नगर तनी आ जइतऽ वदरू (कविता)	श्री मनज	४७
१५. गजल	श्री अभयनाथ तिवारी	४७
१६. ज्वून बेटा (कहानी)	श्री रामवृक्ष राय 'बिधुर'	४८
१७. काहे हो भाई ? (कविता)	श्री कुबेरनाथ मिश्र 'विचित्र'	५१
१८. भोजपुरी जनपदन के संत कवि (निबंध)	प्रो० आद्याप्रसाद द्विवेदी	५२
१९. भाई (कहानी)	श्री भगवती प्रसाद द्विवेदी	५५
२० शैतानी खेल इन्सान के : बलि (निबंध)	डा० अशोक द्विवेदी	५९
२ . कमलापति प्रसाद : हमार बाबूजी (संस्मरण)	डॉ० आशा सहाय	६३
२२. धरिछन काका (रेखा-चित्र)	श्री व्रजकिशोर दूबे	६६
२३. गंदा गली (कहानी)	श्री राधाकृष्ण प्रसाद	६८
२४. क्रिकेट कमेंट्री (ललित निबंध)	श्री रामेश्वर सिंह 'काश्यप'	७१
२५. तिनका के काट (कविता)	श्री प्रभुनाथ सिन्हा	७३
२६. हमार रचना (कविता)	श्री रामवचन लाल श्रीवास्तव	७३
२७. भल लोग (झलकी)	श्री रंजनकुमार मिश्र	७४
२८. श्री रामकथा (प्रथमचरित्र) भोजपुरी काव्य (समीक्षा)	श्री तैयब हुसैन 'पीड़ित'	७९

www.bhojpurisahityangan.com

संपादक के ओर से—

भोजपुरी जनपदन के विशिष्ट लोग

'भोजपुरी अकादमी' के कार्यसमिति अपना एगो पछिलका बैठक में प्रस्ताव कइले रहे कि भोजपुरी जनपद के विशिष्ट साधु-सन्त, वीर-पुरुष, नेता, कवि, उपन्यासकार, गायक, खेलाड़ी आ पहलवान लोगन के नाम-पता मँगावल जाय अउर उन्हुकर जीवनी लिखवा के पुस्तक रूप में अकादमी से प्रकाशित करावल जाय। काहे कि कवनो एगो जातीय एकाई के आपन अलग संस्कृति आ विशेषता होला, जेकरा से ओकर आपन महानता साबित होला। एकरा खातिर पटना के 'आर्यावर्त्त' अउर काशी के 'आज' दैनिक-पत्र में विज्ञापनो निकलवावल गइल। 'भोजपुरी अकादमी पत्रिको में ई सूचना छपवावल गइल। मगर केहू कतहूँ से नामावली ना भेजल। एह से हमनीं के जीवन्तता के सहजे पता चल जाता! दू-चार गो लोग भेजबो कइल, त आपन नाँव अउर अपने जीवनी। अन्त में कार्यसमिति हमरे के भार देलस कि एगो नामावली तइयार करीं, तब ओकरा में विचार कइके कुछ छोड़ल-जोड़ल जाई। ओह निरनय के मोताबिक हम एगो जिलावार सूची तइयार क के इहवाँ दे रहल बानीं। अब अपने सभे से अनुरोध बा कि एह तालिका में जोड़े खातिर अपने सभ अपना-अपना जिला के नामी-गरामी लोगन के-जे एह तालिका में नइखे—नाँव-पता आ जीवनी भेजे के किरिपा करीं। अकादमी अपने सभे के सुकुर-गुजार होई अउर अपनेके एह सहयोग खातिर लिखित रूप में आभार परगट करी। जिलावार नाम-सूची नीचे दिहल जाता :—

भोजपुर-रोहतास

१. बाण भट्ट
२. ईशान
३. मिहिर भोज
४. प्रताप धवल
५. चेरो राजा मुकुन्द
६. देवराज
७ सोमराज
८. लोरिक अहीर
९. मुल्कराज
१०. भोजराज
११. गजपति
१२. शेरशाह
१३. आदिलशाह
१४. हेमू
१५. गजराज सिंह
१६. प्रताप सिंह
१७. संग्राम सिंह
१८. दरियादास
१९. ईश्वरी सिंह
२०. कुँवर सिंह
२१. अमर सिंह
२२. हरकिशन सिंह
२३. निशान सिंह
२४. कवि हरिनाथ
२५. रामेश्वर दास
२६. महाराज राधाप्रसाद सिंह
२७. महाराज कुमार हरिहर प्रसाद सिंह
२८. भवानी दयाल संन्यासी
२९. राजकुमारी सखी
३०. विजयानन्द त्रिपाठी
३१. शिवनन्दन सहाय
३२. यशोदानन्दन अखौरी
३३. व्रजनन्दन सहाय
३४. महामहोपाध्याय सकलनारायण शर्मा
३५. सच्चिदानन्द सिन्हा
३६. राजा राधिकारमणप्रसाद सिंह

www.bhojpurisahityangan.com

३७. महामहो० रघुनन्दन त्रिपाठी
३८. ईश्वरी प्रसाद शर्मा
३९. हरप्रसाद जैन
४०. पारसनाथ त्रिपाठी
४१. श्रीमती धरोछना कुँवरि
४२. शिवपूजन सहाय
४३. दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह
४४. सरदार हरिहर सिंह
४५. मनोरंजन प्रसाद सिंह
४६. महादेव सिंह 'घनश्याम'
४७. शिवनन्दन मिश्र
४८. अम्बिका प्रसाद 'नन्द'
४९. बाबा रामचन्द्र गोस्वामी
५०. विश्वनाथ प्रसाद शैदा
५१. जगजीवन राम
५२. त्रिदण्डी स्वामी
५३. रामानन्द तिवारी
५४. शिवनन्दन कवि
५५. रामवचन द्विवेदी 'अरविन्द'
५६. शिवनाथ (घावक)

सारन-सिवान-गोपालगंज

१. कवि घाघ
२. सिताब सिंह
३. लक्ष्मी सखी
४. रूपकलाजी
५. धरणी दास
६. श्री बसंतनारायण शाही
७. श्री मजहरूल हक
८. महामहो० रामावतार शर्मा
९. श्री महेन्द्र प्रसाद
१०. नारायण बाबू
११. टंगरिया बाबा
१२. जीवाराम
१३. फतहनारायण शाही
१४. स्वामी भिनक राम—सीवान
१५. श्री व्रजकिशोर प्रसाद
१६. श्री राजेन्द्रप्रसाद
१७. भिखारी ठाकुर
१८. तोफा राय
१९. रघुवीर नारायण
२०. महेन्द्र मिश्र
२१. सैयद महमूद
२२. जयप्रकाश नारायण
२३. कवि सुरज लाल
२४. अमर सहीद फुलेना प्रसाद
२५. तारा देवी
२६. सैयद बली मुहम्मद शाह
२७. शंकर दास
२८. रामजी
२९. मूसा कलीम
३०. आचार्य नलिन विलोचन शार्मा
३१. चन्देश्वर भारती
३२. श्री भूपनारायण शर्मा 'व्यास'
३३. महेन्द्र शास्त्री
३४. महामायाप्रसाद सिंहा

चम्पारण जिला

१. बेतिया के महाराज
२. रामनगर के राजा
३. भीखम राम
४. श्री टेकमन राम
५. श्री विपिनविहारी सिंहा
६. श्री प्रजापति मिश्र
७. श्री राजकुमार शुक्ल
८. श्री जगेश्वर दास परमहंस
९. श्री शिवशरण पाठक
१०. श्री श्यामबिहारी तिवारी 'देहाती'
११. श्री केदार पाण्डेय
१२. श्री गोपाल सिंह 'नेपाली'

गाजीपुर

१. पलटू दास
२. श्री मन्नन द्विवेदी 'गजपुरी'
३. सुखदेव राय—बेटावर
४. सहजानन्द सरस्वती

www.bhojpurisahityangan.com

५. भोलानाथ तिवारी
६. मंगला राय (पहलवान)
७. शिवप्रसाद सिंह
८. हरिनारायण राय—कुंड़ेसर
९. अब्दुल हमीद
१०. शिवपूजन राय—भोरपुर
११. राम नगीना राय

गोरखपुर—देवरिया

१. महाराज खड्ग बहादुर मल्ल
२. बाबा राघव दास
३. श्री मोती बी० ए०
४. देवराहा बाबा
५. मृदंगाचार्य रामशंकर दास उर्फ स्वामी पागलदास
६. श्री चंचरीक जी
७. धरीक्षण कवि
८. डॉ० स्वामीनाथ सिंह
९. डॉ० राजबलि पाण्डेय

बलिया—आजमगढ़

१. परमहंस शिवनारायण स्वामी
२. भीखा साहब
३. बाबा नवनिधिदास
४. बाबा रामायण दास
५. सुवचन दासी
६. कवि विश्वनाथ
७. लालमणि
८. रामनारायण तिवारी (वैयाकरण)
९. मदन मोहन सिंह
१०. श्रीकृष्ण त्रिपाठी
११. डॉ० उदयनारायण तिवारी
१२. डॉ० गणेशी
१३. श्री दूधनाथ उपाध्याय
१४. सभापति पाण्डेय
१५. परशुराम चतुर्वेदी
१६. पं० बलदेव उपाध्याय
१७. कृष्णदेव उपाध्याय
१८. भागवतशरण उपाध्याय
१९. चीतू पाण्डेय
२०. श्री भोला राय, उजियार
२१. डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी
२२. ठाकुर विश्राम सिंह (आजमगढ़)
२४. मिट्ठू कवि (आजमगढ़)
२३. महापंडित राहुल सांकृत्यायन
२५. श्री राम विचार पाण्डेय
२६. प्रसिद्धनारायण सिंह
२७. डॉ० शिवदत्त श्रीवास्तव "सुमित्र"
२८. काशीनाथ शास्त्री—छाता
२९. रामअवध द्विवेदी

काशी जिला

१. सर्वश्री दामोदर पंडित (ग्यारहवीं सदी)
२. स्वामी रामानन्द
३. कबीर दास
४. कीनाराम औघड़
५. कमालदास
६. चेत सिंह
७. ईश्वरी प्रसाद सिंह
१५. डॉ० भगवान दास
१६. गोपीचन्द्र कविराय
१७. महामहो० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी
१८. राजा लक्ष्मण सिंह
८. भारतेन्दु हरिश्चन्द
९. बेनी राम
१०. तेगअली तेग
११. राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द
१२. शिवप्रसाद गुप्त
१३. महामना मदनमोहन मालवीय
१४. सुधाकर द्विवेदी, गणितज्ञ
३५. विनोदशंकर व्यास
३६. शायर मारकण्डे
३७. चुन्नी लाल
३८. भैरो कवि

www.bhojpurisahityangan.com

१९. अम्बिकादत्त व्यास
२०. सुन्दर वेश्या
२१. लाला भगवान दीन
२२. रायकृष्ण दास
२३. रामकृष्ण शर्मा 'बलवीर'
२४. देवीप्रसाद शुक्ल चक्रवर्ती
२५. श्यामसुन्दर दास
२६. डॉ० श्रीप्रकाश
२७. प्रेमचन्द
२८. रामचन्द्र वर्मा
२९. लक्ष्मण नारायण गर्दे
३०. बाबू राव विष्णु पराड़कर
३१. रामचन्द्र शुक्ल
३२. श्री जयशंकर प्रसाद
३३. डॉ० मोतीचन्द्र
३४. डॉ० सम्पूर्णानन्द

६९. खलील और अब्दुल हबीब
४०. लल्लर सिंह
४१. दिमाग राम
४२. रूपन कवि
४३. फणीन्द्र मुनि
४४. कवि कैद
४५. गूदर
४६. भग्गूलाल और बुझावन
४७. रसिक किशोरी
४८. महादेव कवि

गोरखपुर

१. गुरुगोरखनाथ
२. श्री रघुवीर सहाय फिराक 'गोरखपुरी'
३. हीरानन्द शास्त्री
४. विद्यानिवास मिश्र
५. अज्ञेयजी
६. रामप्रसाद बिस्मिल

मिर्जापुर

१. काशीप्रसाद जायसवाल
२. रामकिंकरजी
३. पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'

एह सूची में हमरा सीमित जानकारी के कारने पलामू, आजमगढ़, बस्ती के कवनो व्यक्ति के नाँव नइखे। ओइसहीं मिर्जापुर, गाजीपुर, देवरिया आ गोरखपुर के लोगन के नाँव बहुते कम बा। अपने सभ से सहयोग आ सुझाव के उमेद राखल जा रहल बा।

—'सहृदय'

मगध विश्वविद्यालय के सराहे जोग निरनय

मगध विश्वविद्यालय के पछिलका सिनेट के बइठक, एगो प्रस्ताव पास कइके भोजपुरी आ मगही के अपना पाठ्यक्रम में सामिल करे के जे निरनय कइलस, ओकरा खातिर हमार करोड़ो-करोड़ धन्यवाद ! सुनल गइल कि एह प्रस्ताव के रखले—अनुग्रह मेमोरियल, गया के प्राचार्य श्री विश्वनाथ सिंहजी, जेकरा के सिनेट के सभ सदस्य लोग खुशी-खुशी आपन समर्थन दिहलन। अइसन उत्तिम निरनय खातिर विश्वनाथ बाबू के साथे-साथ सभ सदस्य लोग के प्रति भोजपुरी जनपद के लोग आपन आभार परगट करता।

भोजपुरी प्रेमी लोग के भारी अजरज रहे कि बिहार-विश्व-विद्यालय जब भोजपुरी के अपना पाठ्यक्रम में राखि लेले बा, तब मगध-विश्वविद्यालय—जेकरा महाविद्यालयन में चाहे खास विश्वविद्यालये में भोजपुरी भासी छात्रन के संख्या बहुते जादे बा, तब काहे नइखे अपना पाठ्यक्रम में ओकरा के सामिल करत। खैर, देर आयत दुरुस्त आयत !

अब दोसर निहोरा मगध विश्वविद्यालय के कुलपतिजी से बा कि उहाँ के अपना सिनेट के एह निरनय के जल्दी-से-जल्दी महाविद्यालयन में लागू कराईं। देखल गइल बा कि सिनेट के बहुते निरनय खटाई में फूलते रह जाला। मगर हमनीं भोजपुरी भासीन के विश्वास बा कि एह निरनय के ऊ हाल ना होई, आ जल्दीए पाठ्य-विषय में भोजपुरी के लागू कइ दिहल जाई।

—'सहृदय'

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी लोक-साहित्य में चोर आ चोरी

श्रीरसिकविहारी ओझा 'निर्भीक'

साधारण भाषा में 'लोक' के मतलब होला—लोग, जे अपना शिक्षा, सभ्यता, पहनाव-ओढ़ाव आ रस्म-रिवाज के लेके अपना देश में जियादा संख्या में होखे आउर ओह देश के विशिष्ट कहायेवाला लोगन के बराबरी में ना आवत होखे। अइसन लोगन के जवन साहित्य होला, ऊ विशिष्ट लोगन के साहित्य से कवनो माने में कम ना होखे; बलुक बहुत माने में जादा उमदा होला। उन्हका साहित्य में अनुभव कइल अनुभूति आ भोगल घटनन प हृदय के सही-सही भाव रहेला। एह से ऊ आजे सही आ सत्य बा आ अइसन जनात बा कि कवनो सोधालय से शोधल-साधल जिनिस होखे। हम अइसना लोगन के सभ तरह के साहित्य के बारे में चर्चा करे नइखीं जात, बलुक ओकरा खाली दूगो पहलू—'चोर' आ 'चोरी'—के बारे में चरचा करबि।

ई सभ केहू जानत बा कि बहुत प्राचीन काल से अदिमी के समाज में चोरी होत बा। चोर आ चोरी के क्रिया-कलाप के बारे में जे लोककथा आ लोकोक्ति प्रचलित बाड़ी सँ, ओकर हम चर्चा इहवाँ करबि :

'चोर' आ 'मोट' बन्हइले के मोल हऽ। आनी 'चोर' आ 'मोट' जतना बँढ़ियाँ से बन्हाई, ओतने अच्छा होई। चोर के पकड़ते ओकरा के ठीक तरह से बान्हि देबे के चाहीं, तबे ऊ ठीक रही। एही तरे 'मोट' आनी कुआँ से पानी निकाले के चमड़ा के बनल बड़ घोकरी जवना से खेत पटावल जाला के ठीक तरह से गिरहियावे के चाहीं ना त खुलि के कुआँ में गिर जाई त पानी पटवे के काम रुकि जाई। एह दूनो चीज के कसि के बान्हे के चाहीं। ('मोट' के मतलब इहवाँ 'मोटरी-गठरी' हऽ।—सं०)

मारल चोर आ उपासल पाहुन फेनु ना लवटे। एह कहाउति में दू गो मनई, जे दूनो उलटा प्रकृति आ प्रवृति के बा, के समान तरह से दुरबेवहार भइला प एके हाल हो जाला के देखावल गइल बा।

कवनो चोर पकड़इला के बाद खूब पिटाइल आ सतावल गइल होखे त फेनु ऊ ओह जगहा चोरी करे के हियाव ना करे, जइसे कवनो अतिथि (हित) के रातिभर उपासे छोड़ि दिआइ त ऊ दुबारा ओह हित किहाँ गइल ना चाही।

हम अपना सुरक्षा विभाग में नौकरी के बीरान एह बात के सचाई के प्रमान पवले बानी। एगो चोर सात बेरि कारखाने में चोरी करत पकड़ाइल। हमनी का सातो बेरि प्राथमिक सूचना रीपोर्ट (एफ० आई० आर०) के साथ ओकरा थाना में दे आवत रहलीं जा। ऊ जमानत पर छूट जात रहे। अदालत में तारीख प ओकरा हाजिर होखे के पड़त रहे। एकरा खातिर ओकरा पइसा के जरूरत रहे। एह से ऊ फेनु चोरी करे कारखाना में चलि आवत रहे। दुर्भाग्य बस ओकर 'इन्वेस्टिगेटिंग ऑफिसर हमहीं हो जात रहीं। ओकरा पकड़इला प कई दफा जाड़ा के राति में हमरा घर से आवे के पड़ल रहे। आखिरी दफा हम ओकरा के बेरहमी से पीटाई कइलीं। ऊ थूकलस आ चटलस आ वादा कइलस कि अब हम एह कारखाना में कबो चोरी करे ना आइबि। एकरा बाद ऊ कबो ना पकड़ाइल। एही से चोर के बनाइ के पीटे के चाहीं। ई लोक विश्वास ह—इहे लोक मान्यता ह।

चोर के किरिये के आसरा ह।:—अकसरहाँ चोर आपन विश्वास जमावे खातिर किरिया खाले सँ। एकरा सिवाय दोसर उन्हनी के पास कुछ चारा ना रहे। बाकी चोर के किरिया जादेतर झूठ होला। ऊ अपना छूटे खातिर झूठो के बाप, मतारी, लइका, लइकी भा भगवान के कच-कच किरिया खाले सँ। एह से चोर के किरिया प विश्वास ना करे के चाहीं। अइसन इन्वेस्टिगेशन एण्ड डिटेक्सन् सेक्सन' में काम करत हमार अनुभव रहल बा।

अनदेख चोर साधु बराबर:—यदि चोर के चोरी करत केहू देखले ना होखे त ऊ अइसन बतिआई कि एक

www.bhojpurisahityangan.com

हम साधु हूं। बाकी ओकरा शरीर में छिपावल सामान अगर निकल जाला, तब ओकरा बढ़ि-चढ़ि के बात बनावल आ ओकरा धांखाबाजी के अन्दाज लागि जाला।

सह गो राजा के बुद्धि चोर के होला—चोर बहुत बुद्धिमान होले सें। कमजोर दिमाग के आदमी चोरी नइखे कर सकत। एकरा खातिर हिम्मत आ तेज दिमाग के भइल जरूरी होला। चोरी होखे के एगो रास्ता बन्द क दिआला त ऊ सभ दोसर रास्ता बना लेले सें। जब हमरा अपने कारखाना से पानी निकलेवाला बड़-बड़ नाला (टनेल) के लोहा के रेल से बन्द क दिआइल त चोर 'गैस कटर' ले आ के काटि देलेसें भा ट्रक के 'जैक' से रेल के लोहा के टेढ़ क के अन्दर कारखाना में प्रवेश क के चोरी क लेलन सें।

'जइसन खीरा के चोर तइसन हीरा के चोर'—चोर चोरे ह। चाहें उ ढेर रूपया के कीमती सामान के चोरी कइले होखे भा कम रोपया के साधारन सामान के। दूनो चोरे कहाई। एही से ई लोकोक्ति बन गइल कि 'जइसन खीरा के चोर तइसन हीरा के चोर।' दूनों जना चोरे कहइहें।

'चोर के मुंह चान अइसन':—चोर हरदम अपना के निर्दोष साबित करे के कोसिस करेला। एह से अपना मुंहप अपराध के जल्दी सिकुरन ना आवे दे। भरसक अपना मुंह के चरनमा लेखा ऊजर आ साफ जाहिर करे के कोसिस करेला।

'चोर चोरी से गइल त का तुम्बाफेरियो से गइल':—चोर के सोभाव जल्दी ना बदले। एह प एगो लोक-कथा बा। एगो चोर अपना चोरी के आदत से ऊबि के चोरी कइल छोड़ि देलस। ऊ साधुन के जमात में चेला बनि के रहे लागल। बाकी ओकर चोरी करे के लकम हरदम उदवेसले रहे। राति खा जब सभ साधु सूति जासु, ओकरा नीनि ना आवे। ओकर चोरी करे के लत ओकरा के सुते ना दे। ऊ चोरी ना करे के प्रतिज्ञा कइले रहे। एह से ऊ कतहूं बाहर चोरी करे ना जात रहे। बाकी ऊ साधुन लोगन के तुम्बन के एक दोसरा से बदलि देत रहे। सबेरे साधु सभ आपुस में झगड़ि जात रहले। एही प ई लोकोक्ति बनि गइलि।

'चोर-चोर मौसेरा भाई':—चोरन के आपुस में बहुत जल्दी मित्रता हो जाला। ओहनी के अलगा-अलगा कवनो जाति ना होखे। सभ चोर एके जाति के होले। उन्हनी के समान क्रिया-कलाप उन्हनी के एक गांठ में बान्हे के काम करेला, भले ऊ कवनो जाति आ धरम के होखे।

'एक दिन चोरी कइल भा दस दिन चोरी कइल बराबरे ह':—आनी कवनो आदमी एक दिन चोरी कइले होखे भा दस दिन चोरी कइके छोड़ि देले होखे। दूनो के चोरे कहल जाई। भोजपुरी लोक साहित्य में एक तरह के चोर आ चोरी से संबंधित ढेर मुहबरा, लोकोक्ति आ लोक-कथा बाड़े सें।

रोड ए, क्वार्टर-टी-६, टेल्को कॉलोनी जमसेदपुर-८३१००४

क्षमा-याचना

"पत्रिका के पांचवां अंक में 'भासा के बारे में संपादक मंडल के निर्णय' शीर्षक से जे एगो टीपनी छापल गइल रहे, ओह निर्णयन पर जहां-तहां प्रधान-संपादक 'सहृदयजी' के द्वारा अपनो मंतव्य के टीपनी जड़ देल गइल रहे, जवना से संपादक-मंडल के सदस्य लोगन के बुरा लागल। प्रधान संपादक के कहनाम रहे कि भासा-संबंधी ई निर्णय तबतक खातिर कामचलाऊ भइल रहे, जबतक कि भोजपुरी के कवनो प्रामाणिक व्याकरण नइखे बन जात। एह से आगे के व्याकरण खातिर सुझाव दिहल जरूरी रहे। मगर 'सहृदयजी' के बात हमरो ठीक ना लागल। काहे कि अगर सुझावे देबे के रहे, त उहां के एगो अलग से लेख लिखल चाहत रहे, निर्णयन पर टीपनी जड़ल ना चाहत रहे। हम एकरा के गलती मानत बानीं आ एह खातिर अध्यक्ष के नाते मंडल के सदस्य लोगन से क्षमाप्रार्थी बानीं।

प्रेस के बेवस्था के कारने पत्रिका के प्रकाशन बहुते पिछड़ गइल बा। एकरो खातिर पाठकन से क्षमा-याचना करत बानीं। हम एह प्रयास में बानीं कि आगे अंकन के प्रकाशन समय के साथ हो जाय।"

अध्यक्ष

देवेन्द्रप्रसाद सिंह

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी कारक के विभक्ति

श्रीविन्ध्याचलप्रसाद श्रीवास्तव, एम० ए० (द्वय)

[एह लेख में भोजपुरी कारकन के चिन्हन के बारे में जे बिचार परगट कइल गइल बा, ऊ सब लेखक के आपन बिचार हऽ। एह लेख के कई अंश से सहमत ना भइलो पर लेख छापल जा रहल बा, जे से लोग जानसु कि भोजपुरी व्याकरन के बारे में हमनीं भोजपुरी लेखकन के कहाँतक पइठ बा।—सम्पादक]

भोजपुरी में कर्त्ता कारक के तीन गो विभक्ति बा—'शून्य, से, का'। 'शून्य' विभक्ति के माने भइल जे कर्त्ता कारक का साथ कवनो विभक्ति ना बा या ना होला। कर्त्ता का लिंग, वचन, पुरुष आ क्रिया का काल से एकरा पर कवनों प्रभाव ना पड़े।

जइसे—हम जा तानी। लरिका गिर गइल।

बाढ़ आई। लड़की सब गावत बा।

'से' के प्रयोग कर्मवाच्य आ भाववाच्य में होला। अइसन हालत में कर्त्ता पद जब सर्वनाम होला, त ओकर रूप 'संबंध' कारक का लेखा हो जाला। संज्ञा का साथ अइसन ना होय।

जइसे—

संज्ञा–दादा से रोटी ना खाएल जाए।

मोहन से गिलास फूट गइल।

भैया से दौड़ल ना जाय।

सर्वनाम - हमरा से रोटी ना खाएल जाय।

उनका से गिलास फूट गइल।

तोहरा से दौड़ल ना जाय।

प्रयोज्य कर्त्ता का साथ 'से' के प्रयोग होला:—

जइसे:–तूँ नोकर से पानी भरावऽतारऽ।

'का' के प्रयोग इच्छा आ मनोभाव व्यंजक वाक्य में होला।

जइसे:—लरिका का जाड़ लागता। राम का जाए के बा। हमनी का भूख लागल बा।

संज्ञा का जगह पर जब सर्वनाम आवेला त ओकर संबंध कारक के रूप प्रयोग होला।

जइसे:–हमरा जाए के बा। तोहरा डर लागऽता।

कर्त्ता का विभक्ति का रूप में 'से' के प्रयोग का बारे में हिन्दी-व्याकरण का विद्वान लोग में मतभेद बा। कुछ लोग प्रयोज्य (प्रेर्य) कर्त्ता के प्रेरणार्थक क्रिया के कर्त्ता मानऽता।

कुछ लोग ओकरा के करण कारक मानता।

जइसे:--तूँ नोकर से पानी भरवावऽतारऽ।

एह वाक्य में 'तूँ' प्रेरक कर्त्ता, नोकर प्रयोज्य (प्रेर्य) कर्त्ता बा, काहे कि पानी भरे के काम नोकर करता। एह से ऊ प्रयोज्य कर्त्ता भइल। बाकी कुछ लोग 'साधकतमं करणम्' का आधार पर नोकर के पानी भरे के साधन मान लेता। एह से ओकरा के करण कारक मानता। एकर आधार संस्कृत के वाक्य-रचना प्रक्रिया बा।

जइसे: सः पुत्रेण इदम् कार्यम् कारयति।

इहाँ 'पुत्रेण' करण कारक में बा।

एही आधार पर एकरा हिन्दी रूपान्तर के करण कारक मान लिआइल। संस्कृत वाक्य रचना के ई नियम बा कि प्रधानकर्त्ता का साथ तृतीया विभक्ति के प्रयोग करके वाक्य में रचना-सौन्दर्य देखावे के।

"सः अकथयत्" के "तेन उक्तम्" (तेनोक्तम्) कहे के। विचार करेके बात ई बा, जे वच् धातु का एह रूप कृदन्तीय रूप के करेवाला के बा। अगर ऊ ('सः') ना बा त ओकरा के करत के बा ? एह से हमरा विचार से एह प्रयोग के कर्त्ता कारक माने के चाहीं। तृतीया का रूप के उक्ति-सौन्दर्य माने के चाहीं।

कर्म कारक

कर्म कारक के विभक्ति भोजपुरी में 'के' बा। प्रयोग में 'के' का लोपो से कर्मकारक के ज्ञापन हो जाला।

www.bhojpurisahityangan.com

एसे ओकर शून्य विभक्तिओ होला। भोजपुरी में (खास करके पूर्वी क्षेत्र मे) कर्म का लिंग-भेद से क्रिया का प्रभावित ना भइला से कर्म का उक्त या अनुक्त रहला से कवनो फरक ना पड़े। शून्य 'को' का अलावे 'इ' संश्लिष्ट रूप आ 'से' के प्रयोग भी होला। जब वाक्य में मुख्य कर्म आ गौण कर्म दूनू रहेला, त गौण कर्म का साथ 'के' के प्रयोग होला।

जइसे:—

मोहन किताब किनलन। (शून्य)

लरिका के बोलावऽ। (के) आदेशात्मक वाक्य

हम राम के किताब दलीं। (गौण कर्म)

तूं हमरा के देखलऽ। (संश्लिष्ट)

हमरा से जनि कहऽ। (वैकल्पिक प्रयोग)

भोजपुरी में कर्म में विभक्ति के संश्लिष्ट प्रयोग खाली सर्वनाम का साथ होला; उहो सभ पुरुष में ना होय। 'हमें, तोहें, 'ओके' जइसन प्रयोग होला।

लोकगीतन में कुछ अधिका रूप मिलेला। 'से' के प्रयोग भोजपुरी-हिन्दी में एके लेखा होला। करण-अपादान के विभक्ति भइलो पर कर्म का विभक्ति का लेखा ओकर प्रयोग होला। "हमरा से जन कहऽ (भो०)" मुझसे मत कहो (हि०)। इहाँ सर्वनाम कर्त्ता के रूप संबंध कारक जइसन हो जाला। संश्लिष्ट प्रयोग जहाँ होला, उहाँ सर्वनाम का कर्म कारक के विभक्तियुक्तो प्रयोग होला।

जइसे:- तूं हमरा के देखल (भो०), तुमने हमें देखा (हि०)

करण कारक

करण कारक के विभक्ति 'से' हऽ। संश्लिष्ट रूपो करण कारक में प्रयोग होला।

जइसे:—'ए' मात्र (ॅ) आ कहीं ए / एँ स्वर के प्रयोगो होला। 'से' मुख्य रूप से साधनभूत संज्ञा-सर्वनाम का साथ विभक्ति रूप में प्रयुक्त होला।

उदाहरण:-माटी से घइला बनेला।
कान से सुनल जाला।
हम अपने हाँथ से लिखलीं।
लाठी से साँप मारल गइल।
} साधनभूत संज्ञा

उनका से ई काम ना होई = साधन भूत सर्वनाम

संश्लिष्ट प्रयोग:— अनाज हाँथे उठावऽ।

लाते जन मारऽ। भूखे चलल नइखे जात।

पिआसे परान निकलत बा।

ए / एँ के प्रयोग लोकगीत में होला।

"कथिए समोधबो समधी राजा दशरथ।"

कहूँ-कहूँ 'वे' के प्रयोगो मिलेला। वस्तुतः इ 'वे' भोजपुरी के बहुत प्रचलित प्रत्यय 'वा[1]' के रूप हऽ।

"तोसिए का तेलवे गोरिया मथला बन्हवले।"

संस्कृत में करण कारक के विभक्ति के जहाँ-जहाँ प्रयोग होला, उहाँ साधारणतः हिन्दी व्याकरनो में करण कारक मान लियाइल बा। एकर द्योतक शब्द साथ/साथे, हीन, बिना, मारे. आदि शब्द बा। हिन्दी में द्वारा, जरिए भी करण कारक के द्योतक शब्द बा। 'जरिए' के प्रयोग भोजपुरीओ में होला।

'बिना', 'साथे' आदि शब्द विभक्ति रूप में भोजपुरीओ में प्रयोग करण कारक में होला।

बहुवचन संज्ञा का साथ कहीं-कहीं शून्य विभक्ति के प्रयोगो होला।

जइसे:—लातन-मुकन पीटि के घर देलस।

"भोजपुरी 'से' की उत्पत्ति 'सम्-एन' से मानी गयी है जो क्रमशः सएँ 7 सइ \ से \ से होता गया है।[2] ब्रज-भाषा में इसका रूप 'सों' होता है।'

सम्प्रदान कारक

सम्प्रदान के सभसे जादे प्रयोग में आवेवाला विभक्ति 'ला' हऽ। गोरखपुर का तरफ 'बदे' प्रयोग कइल जाला। एकरा अलावे 'खातिर' 'वास्ते' के प्रयोगो खूब होला। लोकगीतन में लागि, 'लेखे', 'जोगे' के प्रयोग होला। ई प्रयोग बोलचाल का आधुनिक रूप मे उठ गइल बा।

प्रयोग:—हमरा ला एगो किताब ले ले अइहऽ।

हम ओही खातिर गइलीं।

'मोरा लेखे नीके नइहरवा' (लोकगीत)

संस्कृत में सम्प्रदान के मुख्य पहचान मानल बा— "तादर्थ्ये चतुर्थी" जेकरा ला कौनो काम कइल जाय। एकरा मोताबिक "दा" धातु के जहाँ प्रयोग होई, उहाँ संस्कृत में चतुर्थी के प्रयोग होला। हिन्दी में संस्कृत का एह विधान के बहुत जगह पालन होला।

---

१. घर—घरवा, लोटा—लोखा, किताब—कितबवा।

२. भोजपुरी भाषा और साहित्य—डा० तिवारी, पृष्ठ १९०

www.bhojpurisahityangan.com

भूखे को अन्न, प्यासे को पानी दो।[१]
हरि मोहन को रुपये देता है।[२]
चेले ने गुरु को पूजा दी।[३]
पिता पुत्र को रुपये देता है।[४]
राम ने राजीव को गाय दी।[५]

व्रजभाषा में:— जल को गये लक्खन हैं लरिका।[६]

भोजपुरी में :— ऊ बाम्हन के दान दिहलें।[७]

ऊपर का सभ वाक्य में खाली सं० 'दा' हिन्दी 'देना' के प्रयोग भइल बा। बाकी ऊपर का कवनो किताब में दोसरा क्रिया का साथे कर्म का, 'को' विभक्ति के सम्प्रदान का विभक्ति का रूप में प्रयोग नइखे देखावल। हालांकि खोजला से अइसन बहुते प्रयोग मिल जाई।

संस्कृत नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलं, वषट् शब्द का साथ, भोजपुरीओ में सम्प्रदान का लेखा प्रयोग होला।

कुछ उदाहरन :—

बाबूजी के परनाम। राजू के आशीर्वाद। अगिन के स्वाहा। अपने के भला होखे। देवता के नइबेद चढ़ावऽ।

कर्म के विभक्ति 'के' के सम्प्रदान के विभक्ति का लेखा प्रयोग करे में गड़बड़ी के बहुत सम्भावना बा।

हमरा के एगो चीज कीन दीं।
हमरा के एगो रुपया दीं।

इहाँ पहिला वाक्य में सम्प्रदान कारक आ दोसरा में कर्म कारक बा। असल में 'के' से जहाँ 'तादर्थ्य' के ध्वनि होय, ओतहीं सम्प्रदान माने के चाहीं।

जइसे : - ऊ पानी के गइलन।

इहाँ 'के' 'ला, वास्ते, खातिर' आदि निमित्तार्थ एकदम साफ बा।

सम्प्रदान के संश्लिष्ट प्रयोगो होला, जे क्रिया में 'ए' का संयोग से सम्पन्न होला।

ऊ खाए गइलन। लरिका पढ़े गइल।

'के का अलावे 'का' के प्रयोगो सम्प्रदान में होला।

लरिका का खेल बड़ा रुचेला।
मिठाई सभका नीमन लागेला।

इहाँ 'का' से कर्म कारक के झलक मिलत बा, बाकी ध्वनि सम्प्रदान के बा, जे संस्कृत का विधान—'रुच्यर्थानां प्रियमाणः' का अनुरूप बा।

अपादान कारक

'अलगाव' का अर्थ में अपादान कारक में भोजपुरी में 'से' के प्रयोग होला।

गाछ से फर गिरल।

पूरुबी उत्तर प्रदेश में 'से' का जगह 'ले' के प्रयोग होला।

पेंड़ ले पतई गिरल।

'से' का समानान्तर 'का' के परयोगो होला :—

ऊ गाँव से बाहर रहे लगलन।
ऊ गाँव का बाहर रहे लगलन।

डर, भय, उत्पत्ति, तुलना, दिशाबोध, शिक्षाप्राप्ति आदि अनेक अर्थ में अपादान में 'से' के व्यापक प्रयोग होला। कहूँ-कहूँ संश्लिष्ट प्रयोगो होला।

जइसे :—पिटाये का डरे ऊ इस्कूल ना गइलन।

सम्बन्ध कारक

भोजपुरी में संबंध कारक के दूगो विभक्ति बा—"का, के"। एकरा प्रयोग में अन्तर बा। अगर अन्तर ना होइत त दूगो रूपो ना होइत। अब एह अन्तर पर बिचार कइल जाय।

---

१. आचार्य रामलोचन शरण (हिन्दी व्याकरण चन्द्रोदय)।
२. डा० वासुदेव नन्दन (आधुनिक हिन्दी व्याकरण)।
३. पं० रामदहिन मिश्र, पं० नलिन विलोचन शर्मा (हिन्दी व्याकरण कौमुदी)।
४. डा० अवधेश्वर अरुण (व्याकरण रत्नाकर)।
५. डा० वचनदेव कुमार (व्याकरण भास्कर)।
६. तुलसी (कवितावली)।
७. डा० उदय नारायण तिवारी (भो० भा० और सा०)।

www.bhojpurisahityangan.com

संबंध कारक के विभक्ति कई गो अर्थ में प्रयोग कइल जाला । जइसे—

१. स्वामित्वबोध: २. संबंध-संबंधी भाव

१. जब कवनो चीज पर कवनो आदमी के अधिकार बताबे के होय, कवनो चीज से दोसरा चीज के (अभिन्न) संबंध होय, उहाँ 'के' के प्रयोग होला । जइसे—

(क) राम के किताब हऽ। भाई के छाता हऽ।

(ख) गाय के दूध हऽ। लोहा के टुकड़ा हऽ।

ऊपर (क) मे स्वामित्वबोध बा। किताब के मालिक राम, छाता के मालिक भाई। ओइसहीं (ख) में संबंध-संबंधी भाव बा—'गाय' आ 'दूध' में; 'लोहा' आ 'टुकड़ा' में।

एमें स्वामित्वबोध नइखे।

२. जब संबंध कारक के तीन गो पद के लगातार प्रयोग होए त पहिला स्थान पर 'का' आ दोसरा स्थान पर 'के' के प्रयोग होला। जइसे

'उन्हुका घर के हाल ठीक नइखे।'

'मोहन का बेटा के नाँव जगरूप हऽ।'

'आम का तख्ता के अलमारी;

बेटा का कमाई के आसरा।

नदी का किछार के माटी।

ऊपर का उदाहरण से ई बात खुलासा हो जाता कि जब वाक्य में संबंध वाचक लगातार दू जगह आवे त पहिला दूसरा पद का बीचे 'के' के प्रयोग होई।

३. जब संबंध कारक का बाद दोसरा कारक का विभक्ति के प्रयोग होए त संबंध कारक में 'का' के प्रयोग होई। जइसे—

संबंध अधिकरण—'भारत का दखिन में समुन्दर बा।'

संबंध आपादान— लइका का हाथ से कलम गिर गइल।'

संबंध अधि० 'गाछ का फुनगी पर चिरई बइठल रहे।'

संबंध कर्म 'हम रमेश का बेटा के ना देखली।'

संबंध करण— 'ऊ भाई का कलम से चिट्ठा लिखलन।'

संबंध सम्प्रदान— 'बाबा का आँख के दवाई हऽ।'

शंकरजी के पूजा ला बेलपत्तर चाहीं।'

४. जब संबंध कारक का बाद अव्यय आ अव्यय बोधक पद के प्रयोग होय त दूनू जगह 'का' के प्रयोग होई। जइसे—

'बाढ़ का उतरला का बाद'

'सन् ४२ का आन्दोलन का समय'

'घर का जरला का पहिलहीं।'

५. जब शुरू में कवनो दोसरा विभक्ति के प्रयोग होय तबो अगिला स्थान पर 'का' के प्रयोग होई। जइसे—

अपादान— 'गाँव से अइला का बाद',

अधिकरन— 'गाछ पर चढ़ला का बाद',

कर्म— 'मरीज के देखे का पहिले',

करन— 'बन्दूक से मारे का पहिले',

अधिकरन— 'पोखरा में कूदे का समय।'

६. समय, स्थान सूचक आ तुलनावाचक का पहिले 'का' के प्रयोग होई। जइसे—

'बाढ़ का पहिले, दउड़ला का बाद, खाए का बेरा; घर का पिछुआरा, आँख का अलोता, भइँस का आगा; रोटी का लेखा, डर का मारे।

अधिकरण कारक

'में' 'पर' भोजपुरी हिन्दी में अधिकरण कारन का विभक्ति का रूप में एके लेखा प्रयोग होला।

गाँव में मन्दिर बा।

गाछ पर चिरई बइठल बा।

औपश्लेषिक, वैषयिक आ अभिव्यापक तीनू अरथ मे एह दूनू विभक्ति के प्रयोग होला। एहू कारक में 'ए' प्रत्यय के संश्लिष्ट प्रयोग होला।

भाई गाँवें गइलन।

घरे देखऽ ना।

माथे चढ़ा लेलीं।

गाछे कटहर, ओठे तेल (कहावत)

लोकगीतन में माँहि, 'बीच' 'बीचे' के प्रयोग मिलेला। कबहीं-कबहीं विभक्ति के लोपो हो जाला।

नदी का किनारा एगो मन्दिर बा।

साइकिल दुअरा बा।

हम तोहरे भरोसे बानी।

'हि' के संश्लिष्ट प्रयोगो अधिकरण में होला।

ऊ घरही बाड़न। (बाकी १५ पे० के नीचे)

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी में भाव अउर अरथ के प्रदर्शन

डॉ० शालिग्राम ओझा

भोजपुरी भाषा एगो निठाह भाव-दर्शक भाषा हटे। एकरा में सभसे अधिक प्रधानता बा बिम्ब अउर प्रदर्शन के। कवनो भाषा में बिम्ब-विधान के विशेष प्रतिक्रिया ना होखलो प बिम्ब अपने-आप प्रतिबिम्बित होखे लागेला, जवना के निखार अउर सरूप वैज्ञानिक ढंग से अपने आप निहारल जा सकेला; बाकिर ओकर भीतरी तत्त छिपल रहेला। भाषा के निखार तड़क-भड़क, आकर्षक योजना, आपन उक्ति के चमत्कारे से हो जाला। जइसे भिखारी ठाकुर के नाटकन में निखार के प्रवृति। भाव अउरी भाषा के विशेष सम्बन्ध होखेला। कवहीं-कवही भाषा के बारजाल में भाव अइसन ना फसि जाला, जवना के निकलल मुश्किल हो जाला; बाकिर भोजपुरी भाषा के भावो डहकत घीव अस करकरात रहेला। सिद्धान्त सिद्धान्त हउ, ओकरा के हम अलग ना कर सकीं। अंग्रेजी साहित्य के महान आलोचक श्री आई० ए० रिचार्ड्स अपना किताब Principles of literary criticism लिखले बानीं कि—

A diligent search will still find many mystie Being sheltering in verbal thickets..... While carrent attitudes to language persist, this difficulty of the linguistic phantom must still continue.

उहाँ के सुझाव ठीके बा। लेकिन भोजपुरी भाषा के गहराई में गइला प ई पता लागत बा कि एह भाषा में ढेर छल-कपट नइखे। ई साझ भासा हटे, जवना में बिम्ब-विधान बिना मजवले सजि जाला। उदाहरन खातिर अगर कवनो आल्हा गावे वाला से आल्हा गवावल जाय त सुननिहार के बाँहि फरके लागी। बूढ़ो में तलवार पकड़े के जोश आ जाई। भिखारी ठाकुर के 'बेटी बेचवा' के दृश्य देख के भाव, भूत बनि के ना झांको मगर ऊ आपन परभाव घरी भर में देखला दीही अउरी दर्शक लोगन के आँखि से अंसुअन के धारा बहे लागी। ई जरूरे सोचे के बात बा कि कवहूँ-कवहूँ अरथ के अनर्थ होखे लागेला। तुलसीदास के चौपाइन के अरथ के पाँच दस गो माने लाग जाला। भिखारी ठाकुरो रहस्यवाद के प्रेरक तत्वन के अपना शृंगारिक भावना में पीरो देले बानीं। उहाँ के अरथों में अनेकता अउरी रसिकता ले आइल जाला। इहाँ तक कि फारसी के मशहूर शायर लोगन्हि के शृंगार वाली उक्तिन के आध्यात्मिक अरथ दीहल जाला; बाकिर बहुत से अरबी अउरी फारसी के विद्वान लोग उन्हकर शृंगार प्रदर्शित भावना और राष्ट्रवल के आध्यात्मिक माने खातिर सहमत नइखन। उन्हुकर बात कुछुओ होखे भोजपुरी भाषा अउरी साहित्य में निरूपन अउरी बिम्ब के प्रधानता बा। कवनो विशेष तरक करे के गुंजाइस नइखे। "अभिज्ञान शाकुंतल" रस से लबालब भरल कालिदास के किरती हटे, बाकिर एकरा के हम अश्लील अउरी पूर्ण शृंगारिक ना कहि के सामाजिकता से एकर गठबंधन करा सकीले। हर प्रतिभा-पूर्ण लेखक के शैली के अउरी भाव के आपन अलग-अलग मूल्य बा—जइसे कबीरदास, सूरदास, तुलसीदास ओगएरह। ओसहीं भोजपुरी के कवि, गायक अउरी नाटककारो के आपन-आपन विशेष प्रतिभा बा, जवना के एके पगहडोर में बान्हि के खींचल ठीक नइखे।

भासा के निखार पर अउर बनावट पर बौद्धिक तत्व के अधिक आवश्यकता रहेला। भोजपुरी भाषा ओह भोजपुर प्रदेश के बोली हउ जवना के स्थिति भौगोलिक रूप से भारत के बीच में बा अउर गंगा-सोन-सरजू एकरा बीच से बहत होखसु। बौद्धिक तर्क पर अगर साधल जाय त अंग, बंग, मगध, कोसल, चोल, द्रविड़ आदि जातिन्ह से गाढ़ा निकटाव बा। भोजपुरिन्ह के सिन्धुघाटी सभ्यता में रहेवाला लोगन्ह से राजपूतन्ह के इतिहास देखला प अइसन मालूम पड़ता बा कि राजपूत लोग पहले सिन्धु नदी के किनारे रहे, बाकिर

www.bhojpurisahityangan.com

धीरे-धीरे फैलत-फैलत उत्तर भारत, राजस्थान आदि जगहन में फइल गइले। फेर आगे बढ़ि के राजा भोज के विशाल भोजपुरी प्रान्तो तक चलि अइले, जेकरा के मध्य देश कहल गइल बा। "कुँअर सिंह' भोजपुरी महाकाव्य में परम पूज्य भोजपुरी गीत के गंगोत्री बटोहिया के रचयिता स्व० श्री रघुवीर नारायणजी के जेष्ठपुत्र हरेन्द्र-देव नारायणजी लिखले बानी –

"मध्य देश में गरजल रानी,
सहसा अइली युद्ध भवानी ॥
मँड़ई, मेड़, खिलानी जागल,
सूतल राजमहल सब जागल ॥
"जुग के जादूगरनी जागल
आँगन आँगन नाचे लागल
संतावन में अँधिया घुमड़ल
हुँकड़ हुँकड़ डाकिनिया घुमड़ल ॥"

एह से इहो पता चलत बा कि भोजपुरी प्रदेश भारत के मध्य में बाटे अउर मध्य देश के ललकार जन-जन में गुँजेला। अवहियों जब कबो गाँवन में लड़ाई होखेले त गाँव के सीवाना पर समर बन्हाला। आने आधुनिक गोरिल्ला युद्ध अउर पैदल सेना-युद्ध (इन्फैन्ट्री) के तौर प ई लोग लड़ेले। भले लड़ाई लाठी-डंडे के हो। बरात में आजुओ लाठी, भाला, बरछा गाड़ी प लाद के लड़िका के बरियात सजाला। आने अगर सामरिक तरीको से कन्या के बरण करे के होखी त नौकरो खातिर ई लोग तइयार रहेला। ई सब राजपूती सभ्यता के मुख्य विषय हवन सँ, बाकिर भोजपुरी सभ्यता में एकर पूरा निखार देखल गइल बा। शब्द के उत्पत्ति बनावट, कर्मठता अउर बुद्धि समान पर के सोभा बनेला। अगर हम विशेष रूप से आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक तत्वन के रूप पर अलग अलग अध्ययन करीं त इहे बुझाला कि यूरोप में रीएक्सन के बाद आध्यात्मिकता के चर्चा भइल; मगर भोजपुरी मिजाज में त आध्यात्मिकता जड़ तक घूसल बा। जे ना गावे के जानत बा, ना मंत्र जानत बा, उहो एक लोटा जल राम राम कहि के शिवजी के मूड़ प ढार देला। एही तरह मुल्लाजी लोगो खुदा खुदा कर के आपन समाज के रस्म अपना लेलन। आधिदैविक अउरि आधिभौतिक तत्वन के निखारत इन्हिका रहन-सहन संस्कृति अउरि रीति में पावल जात बा। ई लोग कलाकार ना रहलन। परन्तु कला के उपेक्षा ना कइले। संगीत-नृत्य, अउर वास्तुकला में भोजपुरी प्रदेश के खास हाँथ पहीलहूँ रहे। गाँवे-गाँवे तुलसीदासजी के रामायण गावल जाला। नाच-गान भोजपुरी भासा के प्रधान अंग बाटे अउरि घर बनावहूँ में ई लोग माहिर होखेला। हम त एके बात जानत बानी कि ई निच्छल लोग आपन काम से मतलब राखेला। इन्हिका के दोसरा के आलोचना कइला के कवनो खास जरूरत ना रहे। ई लोग काव्य कलावाद में फँसे ना। जइसे सब भासा के आपन सरूप होखेला, ओकरा में लोच आदि के निखार आवेला त ऊ दृष्टिकोण से भोजपुरी भासा एगो अपने-आप स्वयं विकसित भासा हटे। एकर आपन शब्दन में भाव-जनित अरथ होखेला। जइसे अन्हमुन्हार, अन्हरिया, कुच कुच करिया, छेंवकल, छिछिआइल, छछनल।

ई शब्दन के अध्ययन से अइसन मालुम होख ता कि भोजपुरी के समाज के भाव भासा अउरि शब्द ने से निखर जात बा। ई कहे में कवनो अतिशयोक्ति ना होखी। यूरोपो में फैशन के परम्परा चलल। जेकरा से काव्य के ऊपर खूब प्रभाव पड़ल। उन्हुकर काव्य में प्रकृति के अधिक प्रदर्शन भइल। धीरे-धीरे भारतो में तो यूरोपी सभ्यता के अनुकरण होखे लागल। भोजपुरी भासो में एकर छाप पड़े लागल, तबहूँ एकरा पर असर कमे परल। ई बात जरूरे बा कि जर्मन सौन्दर्यशास्त्री लोगन के ऐस्थेटिकल एक्सपीरीयन्स के कुछ हवा के झोंका भोजपुरी भासा में आ गइल अउरी ग्राम्य बोधावस्थो में गीत लिखाये लगले सँ।

"छुरा से कटा के पट्टी
गोड़ में पीतर के चट्टी
दँतवा में सोनवा मढ़वले झरेलवा।"

शायर लिखे वाला के गाँव-नाँव त नइखे मालूम, बाकिर ई गाना के खूब प्रचलित बा। काव्य के सिद्धान्त में इहवों ऐस्थेटीकल भाव प्रदर्शित होखत बा। डॉ० ब्रैडले आपन सौन्दर्यशास्त्री अनुभव के बारे में कहले बाड़न कि "सौन्दर्य सम्बन्धी अनुभव आपन लक्ष्य अपने में रखले

www.bhojpurisahityangan.com

रहेला। एकर आपन निराला मूल्य होखेला। अपना खास क्षेत्र के बाहरो एकर दोसरा तरह प्रकार के मूल्य होखेला।

कवनो काव्य से अगर शिक्षा मिले, धरम अउर शिष्टाचार मिले त ओकरा के उपयोगी समझल जाला। ओकर कदर होखेला। बाकिर ई काव्य के असली जाँच ना हटे। एकर- उत्तमता तृप्तिदायक कल्पनात्मक अनुभव विशेष से होखेला अउर ओकर परीक्षा भीतरे-भीतर हो जाला। अगर आलोचना के तराजू प ओकर बाहरी मूल्य देखल जाई त ई घट जाई। ई बात ठीक बा कि कविता के अगर हम विशुद्ध क्षेत्र से बाहर ले जाइब त ओकर स्वरूप कुछ विकृत हो जाई, काहे कि ओकर आकृति के सत्ता ना त प्रत्यक्ष जगत के कवनो अंग हटे, ना अनुकृति के। एकर आपन दुनियाँ निराला हऽ—एकांत, स्वतः पूर्ण अउर स्वतंत्र।"

एह तरह से देखल गइल बा कि डॉ० ब्रेडले के सौन्दर्य शास्त्रीय सिद्धान्त भोजपुरी साहित्य आ गीतन में कूटि-कूटि के भरल बा। भोजपुरी नाट्यसम्राट रायबहादुर भिखारी ठाकुर अपना नाटकन में सामाजिकता, सौन्दर्य अउर हाव-भाव खींचिन भर देले बाड़न। उन्हुकरा हावे-भाव से अर्थ अपने-आप चूए लागत रहे। उहाँ के खुदे मंच प प्रदर्शन करत रहीं अउर दर्शक लोगन में अनयास आनन्द के अनुभूति होखे लागत रहे। एह से उहाँ के नाटक सफल समझल गइले सें, जवना के अनुमोदन अउर स्वीकृति करोड़न भोजपुरी दर्शक दिहले।

एह तरह से देखल जात बा कि भोजपुरी भाषा अउर साहित्य में बिम्ब अउर स्वरूप के निखार खातिर कवनो जियादा प्रयास नइखे करे के पड़त। अरथ के तुरथ बोध भोजपुरी भाषा के प्रधान गुन हटे। एह से सफल आर्य भाषा में भोजपुरिओ के आपन एगो मानल स्थान मिले के चाहीं, जवना खातिर ई हर तरह से हकदार बाटे।

✣

(पेज १२ के बाकी)

कारक का विभक्तियन के प्रयोग संश्लिष्ट-विश्लिष्ट दूनू तरह से होला। लोपो हो जाला। संश्लिष्ट प्रयोग मात्रा रूप आ व्यंजन रूप दूनू तरह होला। एमें अधिकांश विभक्ति परसर्ग भा पूर्ववर्ती भसन के अवशिष्ट रूप बा। जइसे 'में' के उत्पत्ति सं० मध्ये > प्रा० मम्झे, > मोझे माँझ > में। पर के उत्पत्ति सं० उपरि > परि; के के उत्पत्ति करे से भइल बा।

ए, एँ (अधिकरन) सं० स्मिन् से, ए एँ (करण) के उत्पत्ति सं० करण कारक एक वचन तथा संबंध कारक से 'ए' के प्रयोग कई गो कारक में होला। संश्लिष्ट विभक्ति 'ए' 'हि' 'रा', 'रे', 'ना' 'ने' के प्रयोग मूल पद का साथे होला; बाकी से, के, का, पर के प्रयोग शब्द से अलग होला।

विभक्तियन के वैकल्पिक प्रयोगो होला। एके गो विभक्ति कइ कारक में प्रयोग कइल जाला। जइसे—

'के', 'से', 'पर' 'ए' विभक्ति बा। कई बेर इ कारक का विभक्ति का अलावे दोसरो अरथ में प्रयोग कइल जाला। जइसे—

चले के। = (चलना चाहिए)
के हऽ। = (कौन है)
देख के। = पूर्वकालिक क्रिया।

✣

www.bhojpurisahityangan.com

मेघदूत के अलका नगरी

हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय'

महाकवि कालिदास के "मेघदूत" के भौगोलिक विवरन में मध्यप्रदेश के रामगिरि, आम्रकूट पर्वत, भेड़ाघाट के प्रपात, दसारन देस, विदिसा, नीचई पहाड़ी, अवन्ती देस, उज्जइनी सिप्रा नदी के मादक बयार, गम्भवती नदी में कुलेल करत नवोढन के झुंड, महाकाल मन्दिर, गम्भीरा नदी, देवगिरि, चम्बल नदी, दसपुर, ब्रह्मावर्त, कुरुक्षेत्र, सरस्वती नदी अउर तब अनुकनखल के नाँव आइल बा। एकरा बाद विरही जच्छ मेघ के अलका नगरी में पहुँचावे खातिर हिमालय के तराई में घुसावत बा, जहवाँ 'शरभ' मिरिगन से भेंट करावत बा। एही तराई भाग में एक जगह शिव के चरन चिन्ह के भँवर भरे के कहत बा, काहे कि एकरा दर्शन से सिद्धि मिल जाला। एकरा बाद जच्छ मेघ के 'क्रौंच' नाँव वाला 'रन्ध्र' (पहाड़ी दरार) होइ के उत्तर दिशा में बढ़े के कहत बा। एकरा बाद कोई के फूल अइसन सफेद हिमालय के ऊँचाई प चढ़े के कहत बा। तवना के बाद वियोग के मारला जच्छ अनकन हाव-भाव अउर विलास के बरिसत मेघ के गिरिराज कैलास पर्वत माला में घुस जाये के कहत बा। एही पर्वतमाला मे 'अलका नगरी' बाड़, जवन अलका कैलास रूपी पिया के गोद में एगो कामिनी नारी अइसन सज-धज के बइठलि बिया। अलका अपना ऊँच-ऊँचा अट्टालिका रूपी माथा पर करिया बदरिन में उजर-उजर जल के बूँद-जाल गँथले सोभत बिया, एह से अइसन लागता बिया, जइसे कवनो कामिनी अपना केस में मोतीन के सफेद गोटी गँथले, प्रीतम के गोद में, बइठल होखे। कामा से मतला के कारने कामिनी के डाँड़ के साड़ी जइसे नीचे के ओर सरक जाला, ओइसहीं कैलास के गोदी में बइठला अलका नगरी के कटिभाग से गंगा के सफेद जलधारा रूपी साड़ी नीचे में सरकि के बहल होई। जच्छ अलका नगरी के अइसन पहचान मेघ के बतलवले बा।

सवाल बा कि 'अनुकनखल' से ले के हिमालय अउर कैलास के ई सभ जगह कहाँ रहन सँ—खास कइके 'क्रौंच रन्ध्र' हिमालय के कवन दरार हइ अउर अलका नगरी के ठाँव कहाँ रहे? एह जगहन के बारे में 'मेघदूते' से विचार कइल ठीक होई, दोसरा प्रमानन से ना। काहे कि हम इहाँ मेघदूते के क्रौंच-रन्ध्र अउर 'अलका नगरी' के ठाँव पर विचार करे बइठल बानीं।

सभ से पहिले हम "तस्माद् गच्छेरनुकनखलं शैलराजावतीर्णाम्' के 'अनुकनखल' जगह के बारे मे कहल चाहत बानीं। एह डाँड़ि के अरथ बहुते टीकाकार लोग कइले बाड़न—"इसके बाद जहाँ हिमालय से गंगाजी उतरती हैं, उस कनखल को जाना।" इहाँ तक ले कि श्री बासुदेव शरण अग्रवालोजी अइसन पहुँचल विद्वान इहे अरथ कइले बाड़े। बाकिर इहवाँ कालिदास साफ-साफ 'हरद्वार' में गंगा के उतरला के चरचा करत बाड़न। एही से 'अनुकनखल' कहत बाड़न—आने कनखल के पास भा कनखल के पीछे। एह से साफ बुझात बा कि कालिदास के समे हरद्वार एगो तीरथ के रूप में त जरूर रहे, बाकिर कवनो नगर ना बनल रहे आ ना हरद्वार नाँव परल रहे। मगर एह घरी हरद्वार में जवन गंगा के धारा बा, ओह धारा के हाल ओहू घरी अइसने रहे—'त्वं चेदच्छस्फटिकविशदम्'।

एह हरद्वार के बादे मेघ पहिले हिमालय के तरिआनी (उपतट) में घुसत बा। आजु-काल्हु हिमालय के तीन भाग मानल गइल बा—बाहरी हिमालय, मध्य हिमालय अउर भीतरी हिमालय। कालिदास बाहरी हिमालय के उपतट (घाटी) कहत बाड़न, मध्य हिमालये के 'हिमालय' अउरी भीतरी हिमालय के 'कइलास' कहत बाड़न। कालिदास 'रिसिकेस' से 'नन्दप्रयाग' तक के भाग के उपतट मनले बाड़न अउर 'नन्दप्रयाग' से 'जोशीमठ' ले मध्य हिमालय। एह नन्दप्रयाग से जोशीमठ तक के जायेवाला राह के 'क्रौंचरन्ध्र' कहत बाड़न, जे परशुरामजी के बनावल मारग हइ।

www.bhojpurisahityangan.com

कालिदास हिमालय के घाटिए में लागल जंगली आग बुतावे खातिर मेघ के निहोरा करत बाड़न अउर ओला बरिसा के 'शरभ भिरिगन' के छितिर-बितिर कइ देबे के सीख देत बाड़न। एही हिमालय के घाटी में शिवजी के चरन-चिन्ह के भाँवर भरल झुकि के प्रनाम करे के चेतावनी देत बाड़न—'इहवाँ सिद्ध लोग हमेसा बलि चढ़ावेलन अउर जेकरा के देखते सरधालु भगत के इन्द्रिन के चाल 'उर्ध्वगामी' हो जाला अउर उन्हुकर जिनिगी भर के पाप ओही छन धोआ जाला, जे से उन्हुकर गिनती शिवजी के गन में होखे लागेला"। कालिदास के शिव-चरन-चिन्ह के ई जगह के संकेत आजु नइखे मिलत कि ई चरन-चिन्ह कहवाँ रहे। कुछ लोग हर के पैंडीए (हरद्वारे) से एकर पहचान कइले बाड़न, मगर कालिदास एह चरन-चिन्ह के हिमालय के उपतट में कहत बाड़न। एह से हम जे अनुमान कइले बानीं, ओकरा अनुसार ई 'श्रीनगर' पौड़ी में होखे के चाहीं, जे रिसिकेस से ६८½ मील उत्तरपुरुब के कोन में बा। श्रीनगर बहुत पुरान बड़का सिद्धपीठ हऽ, जेकरा बारे में "काका कालेलकर" साहेब 'हिमालम की यात्रा' पृ० १३६ (प्रकाशक, नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद) में लिखले बानीं—"पहले यहाँ एक पत्थर पर श्रीचक्र खुदा हुआ था, जिसकी पूजा हुआ करती थी। कहते हैं, प्राचीन काल में इस जगह हर रोज एक नरमेध होता था। आद्य शंकराचार्य जब श्रीनगर आये, तब मनुष्यबध का यह अनाचार देखकर उनकी धर्मभावना अकुला उठी। उन्होंने एक सब्बल लेकर श्री चक्रवाले पत्थर को औंधा कर दिया और आज्ञा दी कि आज से नरमेध बन्द।" ई चिन्ह श्रीचक्र के ना कालिदास के जरिए बतावल शिव के चरन-चिन्ह रहे। एकरा बाद कालिदास कहत बाड़न—

हिमगिरि तटवा के खास-खास जगहन के,
लाँघत करूँचवा दरार—
जइहऽ, परशुरामजी के जस-पथ हऽ जे
हंसवन के जाये के दुआर।
ओहि राह बढ़िहऽ तुँ उत्तर के दिसवा में;
टेढ़-लाम बनि सोममान
बलि के बन्हन लागि उठल बिशुन के,
सँवरका चरनवाँ समान॥

एह से साबित होता कि नन्दप्रयाग से अलकनन्दा के तट पकड़ि के जवन सकेत राह जोशीमठ तक जात बा, ऊ सचहूँ क्रौंच-पर्वत के बिबर हऽ, जवन एको मील कतहूँ सोझ नइखे चलत। एह राह पर अलकनन्दा नदी जोशीमठ तक हजारन फीट नीचे बहत बिआ अउर माथ प हजारन फीट के ऊँचाई प पहाड़ के देवाल खाड़ बा। एह से एह राह पर चलेवाला के बुझाला कि वाकई आसमान में हम चलत बानीं। जे केहू बदरीनाथ आ जोशीमठ गइल होई, ऊ क्रौंच परवत के एही बिबर से होके गइल होई। अलकनन्दा के एही गली से चले खातिर जच्छ मेघ से कहत बा कि 'टेढ़-मेढ़ होके उत्तर के ओर एह क्रौंच-बिबर से जब चलबऽ, तब बुझाई कि बामन भगवान के साँवर चरन टेढ़-टाढ़ होके आसमान के नापत जात बा।" नन्दप्रयाग से जोशीमठ ले ई राह उत्तरे दिसा के ओर चलत गइल बा आ एकरे ओर कालिदास के इशारा बा—तेनोदीचीं दिशमनुसरेः।

रिसिकेस से नन्दप्रयाग १२६ मील बा अउर अतना दूर के पहाड़ी हिस्सा, हिमालय के उपतट (तरिआनी) हऽ। नन्दप्रयाग के ऊँचाई २८८० फीट बा। एकरा बाद 'नन्द प्रयाग' से 'जोशीमठ' सिरिफ ३८ मील के दूरी पर बा। इहे ३८ मील के रास्ता क्रौंच-रन्ध्र ह, जवन एक तरह से नन्दादेवी परबतमाला के पच्छिमी घाट ह। जोशीमठ ६२०० फीट के ऊँचाई प बसल बा अउर इहाँ तक 'मध्य हिमालय' के भाग मानल जाला।

जोशीमठ के बाद कालिदास हिमालय के उत्तरी भाग के कइलास कहत बाड़न। आने उन्हुका मत में आज जवना एगो परवत खण्ड के कइलास कहल जात बा आ जे मानसरोवर आ राच्छसताल के उत्तरी भाग में बा, खाली उहे कइलास ना ह, बलुक गंगोत्तरी से लेके मानसरोवर तक के 'हिम-पर्वतमाला', जवना के नाँव "चौखम्भा परवत-माला" ह, कइलास हउवे। कइलास के पहचान में ऊ बतावत बाड़े कि "जेकर हर जोड़ रावन के 'भुजोत्तोलन' से ढील (उखड़ल) बा आ जे ऊँच-ऊँच कई सफेद शिखरन से आसमान में फइलि के (वितत्य) खाड़ बा, ऊ कइलास होई।' एह बात के ओर धेयान देल जरूरी बा कि भुजोत्तोलन से ढील भइले के कारन 'कइलास' के हिस्सा

www.bhojpurisahityangan.com

धसकत अउर भसत चलेला, जबना से कतना सरोवर सुखा गइलन अउर घाटी बदल गइल। दोसर बात कि जोशीमठ से कइलास के अतिथि बने खातिर ऊँचाई पर चढ़ि के (गत्वा चोर्ध्वं) जाये के परी। एकरा अलावे कालिदास अलकापुरी के कइलास के गोद में बइठल बतलावत बाड़े-- तस्योत्संगे (पू०मे० ६७)फेरु ओही श्लोक में ओह अलका के छोड़ से गंगा रूपी साड़ी के सरकल बतलावत बाड़े – स्रस्त-गंगादुकूलाम्। अलका नगरी के पहचान में ऊ इहो कहत बाड़े कि ओहिजा के लइकिन के सेवा में 'मन्दाकिनी' के जल से ठंढाइल 'मरुद्गण' लोग हरदम लागल रहेलन --आने कइलास के गोद में बसल 'अलका' नगरी के पड़ोस में मन्दाकिनी नदी बहत बिआ—'मन्दाकिन्याः सलिल-शिशिरैः सेव्यमाना मरुद्भिः।' ई सभ बात देखला से साफ हो जाता कि 'कइलास' के छेत्र गंगोत्तरी से मानसरोवर तक फइलल बा—'यो वितत्य स्थितः खम्।' एह बात के समरथन हिमालय परवत के परिचे देत खा 'कथा सरित्सागरो' (१,१,१५) करत बा—

उत्तरं यस्य शिखरं कैलासाख्यो महागिरिः।
योजनानां सहस्राणि बहून्याक्रम्य तिष्ठति॥

एह से साफ हो गइल कि 'कइलास' कवनो एगो परवत खण्ड ना रहे, बलुक एगो परवतमाला रहे, जे गंगोत्तरी से मानसरोवर तक फइलल रहे। अब ई बतावल जरूरी बा कि 'अलका' नगरी, एह कइलासगिरि में कवना ठाँव रहे? एह बात के जाने खातिर सभसे असल जरि कालिदास के ई कथन बा—स्रस्त-गंगादुकूलाम्—आने 'अलका' नगरी के कटि भाग से गंगा के धारा नीचे के ओर बहत बिया।

आज-काल्ह गोमुख आ गंगोत्तरी से जवन धारा चलत बा, ओकरे के गंगा (भागीरथी) कहल जात बा। मगर कालिदास के समे, चाहे कालिदास के मोताबिक, गंगा के मूल धारा "अलकनन्दा" के धारा ह, भागीरथी के धारा ना हऽ। एह बात के 'श्रीमद्भागवतो' (स्क० ५, अ १७, ८-९) मानत बा—तथैवालकनन्दा दक्षिणेन ब्रह्मसदनाद्बहूनि गिरिकूटान्यतिक्रम्य हेमकूटाद्धैमकूटानि अभिरभसतररहंसा लुण्ठयन्ती भारतमभिवर्षं दक्षिणस्यां दिशि जलधिमभिप्रविशति। अलकनन्दा नदी वाकई गंगा हऽ, एकर सबूत एगो इहो बा कि हिमालय के सातो प्रयाग में से छव गो 'प्रयाग' अलकनन्दे के तट प बनल बा। गंगा में यमुना नदी के संगमे के कारन इलाहाबाद के प्रयाग (यज्ञस्थान) कहल जाला। एह से हिमालय में जहाँ-जहाँ नदिअन के संगम गंगा से भइल बा ओहिजे प्रयाग बनल बा। जइसे भागीरथी-अलकनन्दा संगम प देवप्रयाग, मन्दाकिनी-अलकनन्दा संगम प रुद्रप्रयाग, कर्णावती (पिण्डर)–अलकनन्दा संगम प कर्णप्रयाग, मन्दाकिनी-अलकनन्दा संगम प नन्दप्रयाग, विष्णुप्रिया (धौली)-अलकनन्दा संगम प विष्णुप्रयाग आ सरस्वती-अलकनन्दा संगम प केशवप्रयाग बा। ई छवो प्रयाग अलकनन्दा के तट पर बा, एह से गंगा के असल (मूल) धारा अलकनन्दे हऽ। खाली एगो 'सोमप्रयाग', 'मन्दाकिनी-काली-संगम' पर बनल बा।

अलकनन्दा जहाँ से निकसत बिआ अउर जहाँ आपन 'बसुधारा' प्रपात बनावत बिया, ओहिजे 'कालिदास' के 'अलका' नगरी रहे। एह बात के सभसे बड़ सबूत त ई बा कि 'अलका' नगरी के कटि-तट से बहले के ओजह से एह गंगा के नाँव 'अलकनन्दा' परल, अउर शिव के अलक (जटा) में जवन नगरी बसल, ओकर नाँव 'अलका' परल। दोसर बात कि कुबेर के नगर के अउर 'गंगो' के नाँव 'वस्वोकसारा' हऽ, जे 'बसुधारा' के इशारा दिलावत बा। वस्वोकसारा, बसुधारा, बसुभारा आ बसुसारा—ई सभ नाँव कुबेरपुरी के हऽ। एह से साबित होता कि अलका नगरी अलकनन्दा के तट प 'बसुधारा' के पास रहे। अइसे त चौखम्भा परवतमाला से जतना नदी बहत बाड़ी सँ, सभ गंगे के धारा हई सँ, काहे कि सँउसे चौखम्भा परवतमाला शिव के मुंडभाग हऽ। पुरानन से पता चलत बा कि गंगा जब शिव के जटा से निकलली, तब पहिले ऊ बिन्दुसरोवर में गिरली। चौखम्भा (कइलास) के पाँति में सैकड़ो हिम-सरोवर बाड़े सँ, जवनन के एकठ्ठा रूप में 'बिन्दुसरोवर' (बिन्दसर) कहल जाला—आने बिसुनजी के धाम से हेमकूट प बिन्दु-बिन्दु के रूप में चुअत जवन गंगा गिरली, उन्हुकर इकट्ठे रूप के नाँव "बिन्दुसरोवर" हऽ। एह बिन्दुसरोवर में गोहना सर, चतुरंगी, भृगुसरोवर, केदार सर, साआसर, सुमालासर, डोडीसर, सहस्रसर,

www.bhojpurisahityangan.com

अप्सरासर (अंछरीताल), मातृकासर, नरसिंहसर, सिद्धसर, यमसरोवर, मछेरोसर, पायासर, सतोपंथ सरोवर, देवसर, सूर्यसरोवर, चन्द्रसर, रिसिसरोवर, हेमकुंडसर, लोकपाल सरोवर, कागभुसुंडीसर, रूप सरोवर, गाँधीसर (चोराबाडी ताल), ताराकुंड, दुग्धसर, वाणीसर, भीमसर, राच्छससर, महासूताल, तारकेश्वरसर, शक्ति सरोवर, नचिकेतासर, भंडसर सरोवर, सहस्रबाहुसर, खिद्राताल, ब्रह्मसरोवर, वेणीसरोवर, फाचकंडीताल, सुख सरोवर, देवहरि सरोवर आदि सैकड़ो हिम-सरोवरन के समूह के नाँव 'बिन्दुसर' हऽ, जवना से गंगा के रूप में हजारन जलधारा निकसत बा। बाकिर कालिदास के मेघदूत के गंगा 'सतोपंथ' सरोवर से निकसेवाली अलकनन्दे के धारा हऽ। भासा-सुवारक लोग 'सतोपंथ' से 'सत्यपथ' कहेलन।

चौखम्भा परवतमाला के दक्खिनी-पच्छिमी कोना में 'सतोपंथ' शिखर ७११६ मीटर ऊँचा बा, जहाँ 'सतोपंथ' नाँव के सरोवरो (हिमसर) बा। एह सरोवर के बनावट तिकोना बा, अउर तीनू कोन में तीन गो बहुते सुन्नर गुफा बाड़ी सँ। एहनी में से एगो में ब्रह्मा, दोसरका में विष्णु आ तिसरका में महेश बसेलन, जिन्हिकर पूजा हर एकादशी के दिन आके देवता लोग करेलन। सरोवर ४८१८ मीटर के ऊँचाई प बा आ एकर घेरा ३.२२० कि० मी० में बा। एकरा से अढ़ाई किलोमीटर दूर 'सूर्यकुंड' अउर ३.२२० कि० मी० के दूरी पर 'चंद्रकुंड' बा, जेकर सोभा बाकई सुरुज आ चनरमा अइसन चमकत बा।

एही सतोपंथ सिखर के दक्खिनी ढाल प 'सर्गारोहिनी (स्वर्गारोहिणी) के 'त्रिकूट' बा, जेकरा हिम-खिवर से 'मन्दाकिनी' नदी निकसेले। फरक इहे बा कि जहाँ 'अलकनन्दा' के मूल सोत 'सतोपंथ' से चलेला, ओहिजे 'मन्दाकिनी' के मूल सोत 'चोराबाडी ताल' से। चोराबाडी ताल के अब 'गाँधीसर' नाँव परि गइल बा। मन्दाकिनी पच्छिम मुँहे मुँह कइके केदारनाथ मन्दिर के पासे निकसत बिया, अउर अलकनन्दा 'सतोपंथ' से पूरब मुँहे निकसि के पुरुब-दक्खिन कोन में बहुत 'बसुधारा प्रपात' बनावत बिया। चौखम्भा के पच्छिमी भाग में 'गंगोत्तरी' हिमनद बा, जे ३० कि० मी० लाम अउर २ से तीन कि० मि० चाकर बा। एकरे से गोमुख के पास 'भागीरथी' परगट होखेली। आने अलकनन्दा, मन्दाकिनी अउर भागीरथी के मूल सोतन के जनमदाता अकेले सतोपंथ के हिमशिखर हऽ, जेकरा गोदी में अनेकन सरोवर (बिन्दु सरोवर) भरल बा आ जेकरा से अनेकन गंगा निकसि के अलकनन्दा, मन्दाकिनी आ भागीरथी के गोद भरत बाड़ी जा। इहे चौखम्भा-परवतमाला कालिदास के कैलास हऽ।

'सतोपंथ' हिमसरोवर से 'अलकनन्दा' के धारा पुरुब ओर निकसि के पूरुब-दक्खिन कोन में जब बढ़त बा, तब एकरा से ६.४४० कि० मी० के दूरी प 'चक्रतीर्थ' बा, जेकर सोभा आ सजावट बाकई देवलोक के आनन्द देत रहेला। अलकनन्दा जसहीं पुरुब-दक्खिन में बढ़े लागतिया, तसहीं 'लछिमीवन' के छेत्र के साथे-साथ 'अलका नगरी' के छेत्र शुरू होला। संभव बा कि कुबेर के 'वैभ्राज' नाँव के बगीचा इहे 'लछिमी बन' होखे। एकरा बादे 'भोजपत्र' के जंगल मिलेला, जहाँ अनेकन हिम-सोत मखमली घास के मैदान से आके अलकनन्दा में गिरताड़े। अलकनन्दा लगभग तीन मील जब पूरुब-दक्खिन कोन में चलि लेले, तब एहिजे एकर 'बसुधारा' प्रपात मिलेला, जे १२१.६१ मीटर के ऊँचाई से गिरेला। एह निरझर से 'सतोपंथ' हिमसर १२.८७० कि० मी० दूर ऊपर में पड़ेला।

एही 'बसुधारा' (वस्वोकसारा) के पास कालिदास के अलका नगरी रहे, जेकरा बारे में ऊ लिखले बाड़े—स्रस्तगंगा दुकूलाम्। एहि 'बसुधारा' से पाँच किलो मीटर पुरुब-दक्खिन कोन में 'माणा' (मणिभद्रपुर) नाँव के गाँव बा, जहाँ भारत के उत्तरी सीमा के अन्त हो जाला। 'माणा' के पासे 'सरस्वती' नाँव के नदी उत्तर पूरब के कोन से बहत आइके 'अलकनन्दा' से संगम करे ले, जेकरा ओजह से ई जगह 'केशवप्रयाग' कहाला। इहवाँ एगो बड़ा भारी पुल बा, जेकरा के 'भीमसेतु' कहल जाला। एह संगम प दू गो गुफा बा, जेकर नाँव व्यास-गुफा आ गनेश गुफा हऽ। दूनो गुफन में ७०० से १००० तक के लोगन के बइठे के जगह बनल बा। एही गुफन में व्यास आ गनेश जी रहि के 'महाभारत' के रचना कइल अउर लिखल, ई कथा इहवाँ बड़ा मसहूर बा। 'माणा' से एक मील दूर 'मुचकुन्द' नाँव के गुफो बड़ा रमनीक आ मशहूर बा।

कालिदास के मोताबिक अलकनन्दा के 'बसुधारा'

www.bhojpurisahityangan.com

चौखम्बा पर्वत माला

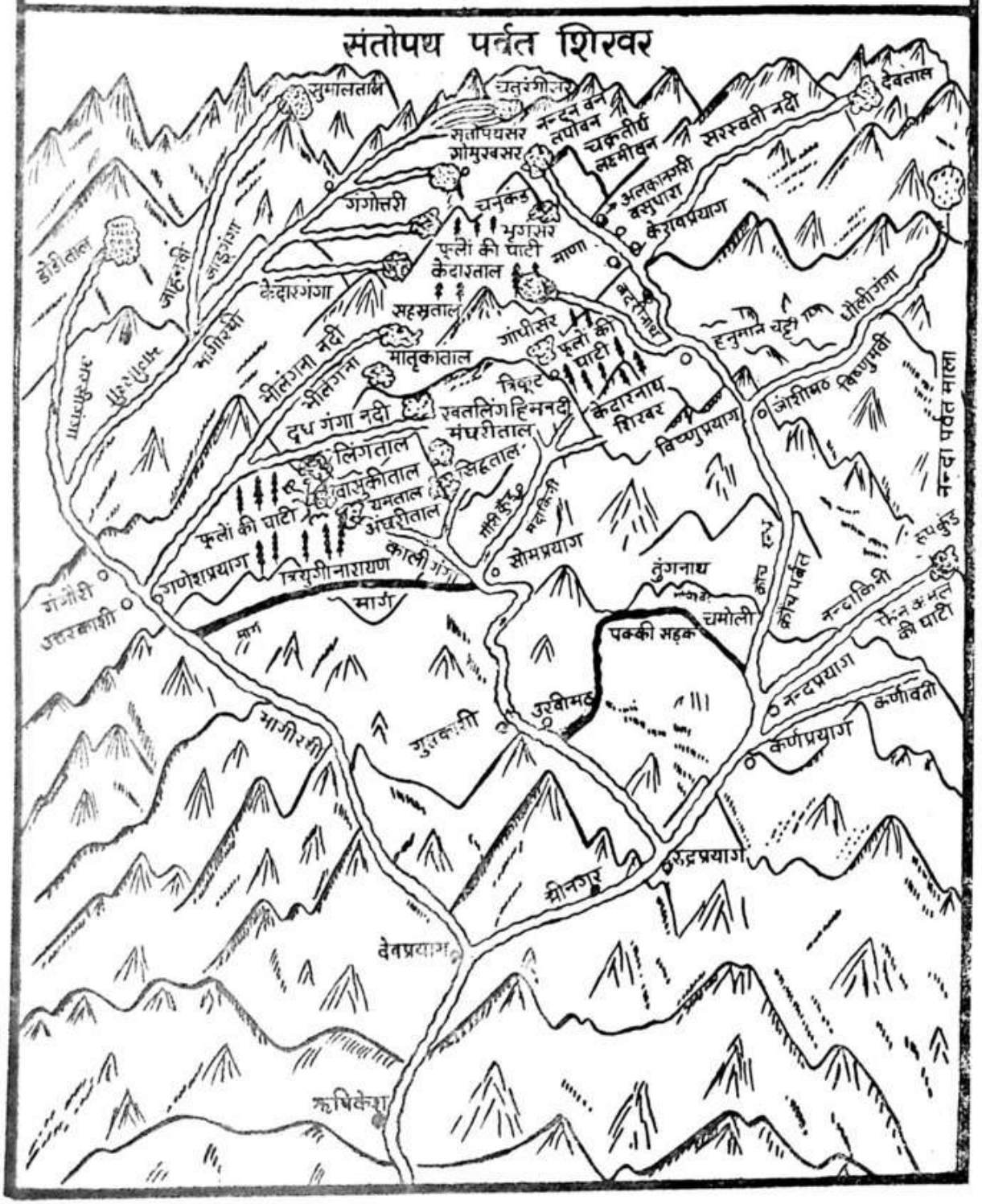

www.bhojpurisahityangan.com

निरझर उन्हुकर 'स्रस्तगंगादुकूलाम्' हऽ। ओहिजे आ 'माणा' से पांच साढ़े पांच किलो मीटर ऊपर, कालिदास के 'अलका' नगरी रहे, जेकरा पास-पड़ोस में एक से एक सुन्दर सरोवर, दरजनन गुफा, रंग-बिरंगी फूलन के बाग आ मखमली घासन के बिछवना बिछल आजुओ मिलेला।

मगर एगो बात के साफ कइल बहुते जरूरी बा। बात ई बा कि कालिदास कहत बाड़े कि 'जी-भर के मानसरोवर के जल पिअत, अइरावत हाथी के मुँह के पटोर के रूप धरत, कलप-बिरिछ के पातन के अपना झकोरवाला बयार से उड़ावत, रिमझिम बरिसत—आने भिन्न-भिन्न तरह के सुन्नर, सुभेख रूप धरत ओह गिरिराज (कैलास) में घसि जइहऽ। हे बँड़ेरा मेघ! एकरा बाद पिया कैलास के गोदी में बहुरिआ कामिनी अइसन बइठलि हमार अलकानगरी तोहरा मिली।'

एकर माने त ई भइल कि मानसरोवर के उत्तर कैलास बा, (जे बाकई आजु-काल्हु के कैलास बा) जेकरा गोदी में अलका नगरी बइठलि बिया। मगर एह कैलास में 'स्रस्तगंगादुकूलाम्' के कवना चिन्ह नइखे।

हम जहाँ अलकनन्दा के 'बसुधारा' प्रपात के पास अलका के ठाँव बतलावत बानीं, ऊ त मानसरोवर के पच्छिम दूर में पड़त बा। दोसर बात कि आज-काल्ह जोशीमठ से जब अलकनन्दा के उद्गम के पास जाये के होई, तब मेघ हनुमान चट्टी, बदरीनारायन आ 'माणा' होते बसुधारा पहुँची। जोशीमठ से 'बसुधारा' पहुँचे में बदरी नारायन हो के सिर्फ २९ मील रास्ता तय करेके परी। अइसन हालत में केहू 'मानसरोवर' होके 'बसुधारा' काहे जाई?

एह बारे में दूगो बात के जादे संभावना बा। एगो ई कि कालिदास के एह छेत्र के भूगोलिक गेयान ठीक से ना रहे अउर ऊ अलका नगरी के बारे में सुनल-सुनावल आधार पर, चाहे पुरानन में जे पढ़ले ओकरा आधार प, लिखि देले। मगर अइसन सोचावट खाली अन्दाज प बा। साँच पूछीं त उन्हुकरा समे मे जोशीमठ से 'बसुधारा' (अलका) जाये के रास्ता 'बदरी नारायन' होके ना रहे। काहे कि ई त सिद्ध बा कि कालिदास के समे में 'बदरी-नारायन' तीर्थ के रूप में ना बनल रहे। ऊ त अठवीं चाहे नवीं सदी में बनल, जब जगतगुरु शंकराचार्यजी चारू धाम के असथापना कइलीं। कालिदास के समे में जइसे हरद्वार आपन आजवाला रूप ना पवले रहे, उहे हाल बदरी-नारायनो के रहे। एह से बदरीनारायन वाला राह ओह घरी बेलकुल चालू ना रहे। दोसरा तरह 'मानसरोवर' बहुत मशहूर तिरथ बनि गइल रहे। एह से ओह घरी कैलास मे चाहे अलका में घुसे के रास्ता मानसरोवर हो के रहे। एहू घरी देखीं त केदारनाथ से बदरीनाथ के दूरी स्वर्गारोहनी शिखर लाँघि के बहुते कम बा। मगर केहू ओह राह से ना जाय। सभ केहू केदारनाथ से फेरु रुद्र-प्रयाग लवटि के 'कर्णप्रयाग' अउर 'नन्दप्रयाग' होते जाला भा गुप्तकाशी से घूमि के उखीमठ आवेला आ उहाँसे ऊपर में चढ़ाई करत 'तुंगनाथ' (बूढ़ा केदार) होते 'गोपेश्वर' अउर 'चमोली' में उतरि के जोशीमठ आ बदरीनाथ जाला। अइसहीं अलका जाये खातिर कालिदास जोशीमठ से मेघ के पहिले 'छोति-नीति घाटा' के दर्रा से मानसरोवर भेजत बाड़न, जवन राह सुरई ठोटा, मलारी, तिमिरसिन, छोती-नीति घाटा, रिमझिम होते मानसरोवर पहुँचेला। एकरा बाद कैलास (चौखम्बा) परवतमाला में भीतर के ओर घुसे के कहत बाड़न अउर तब पच्छिम मुड़ि के 'देवताल' होते सरस्वती के घाटी पकड़ि के 'अलका' पहुँचावत बाड़े। चौखम्भा परवतमाला में 'मानसरोवर' एगो नामी अउर धारमिक असथान ह, एह से ओकर जल पिआवत कालिदास मेघ के अलका नगरी में भेजत बाड़े। मगर आज-काल्ह केहू केकरो के 'बसुधारा' के पास भेजी, त जोशीमठ से 'बदरीनारायन' अउर माणा होते भेजी, मानसरोवर होके ना भेजी। दोसर बात ई हो सकेला कि मेघ के गति पाता ना पहिले केने जाई। एह से चाहे मेघ जब एके साथ सगरो घेरि लीही, तब एके साथ सगरो ओकर रूप लउक जाई। एह से कालिदास गिरिराज में घुसावत खा 'मानसरोवर' के नाँव लेले बाड़े।

एह सभ बातन के साफ करत हमार कहनाम बा कि कालिदास के अलका अलकनन्दा के किनारे 'बसुधारा' के पास रहे; कइलास एगो शिखर ना रहे के सँउसे चौखम्भा परवतमाला के नाँव रहे अउर अलकनन्दे नदी ओह घरी के असल गंगा कहात रहे। एही तरह 'क्रौंचरन्ध्र' नन्द-प्रयाग से जोशीमठ तक जायेवाला अलकनन्दा के घाटी के नाँव मशहूर रहे।

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी भासा का बारे में कुछ विचार

आनन्दमूर्त्ति

[लेखक महोदय एह लेख में भोजपुरी भासा का बारे में अपन विचार आ बरतनी के रखले बाड़े, ओहमें से बहुते बात 'पत्रिका' का नीति के विपरीत बा। उन्हुकर अनुरोध बा कि हमार विचार आ बरतनी भोजपुरी-समाज के सोझा रखाय, जेह से दोसरो लोग एह बारे में सोचसु आ लिखसु। एह से ई लेख जस-के-तस छापल जा रहल बा। —संपा०]

'भोजपुरी-अकादमी-पत्रिका' का चउथा अंक में "भोजपुरी भासा के सजुरावे जोग कुछ अजुरा" मथेला देके "संपादक के ओर से" [1] जवन 'टीपनी' छपल बा, तवना में एगो ई बात त सराहे जोग बड़लहीं बा कि संपादकजी भोजपुरी खातिर ओकरा लेखकन के सकल समाज के गोहरवले बानीं कि सभे "मिलि-जुलि के एकरा चाल-चलन अउर रंग-ढंग के जाने के कोसिप" करो, आ उहाँके अपने कहनाम के बेद-बाक नइखीं मनले : सँउसे 'टीपनी' जवना तरज में लिखाइल बा ओकर नमूना उहाँ के एगो बाक में मिलता —"एहू प हमार कवनो आगरह नइखे, बिदवान लोग सोचसु"।

तबो ई परतच्छ बुझाता कि मय बिचार कवनो निहचित कएदा-कनून का जरूरते का ओर जास्ती ओलार बा, बेवहारे से जवन निहचित होत चलेला आ जगहा-जगहा मोका-मोका प आपन "चाल-चलन अउर रंग-ढंग" बदलत रहेला, तवना का ओर ओतना कम नइखे। भासा का बारे में बेद-बाक जिनगीए उचरेले, ब्याकरन ना। हिंदी भा अँगरेजी चाहे अउरो कवनो भासा का नियर, भोजपुरिओ का बारे में अब ई ना पुछाए के चाहीं कि "ई सूध भोजपुरी' हऽ कि "असूध भोजपुरी"। पुछाए के ई चाहीं, चाहे इहे अब पुछइबे करी कि "ई भोजपुरी हऽ कि ना", जवना छेत्र के ई भोजपुरी ह, तवन "ई हऽ कि ना"।

ई कहनाम ठीक बा कि कवनो कएदा-कनून होखे के चाहीं, नाहीं त जेकरा जवन मन करी, तवने लोखी आ भोजपुरी का लिखाए वाला साहित्त में भासा के कवनो मानक अहथिर ना हो पाई। बाकिर सभका ले बड़ झंझटिआह "अजुरहट" त ई बा कि कहवाँ के, कवना छेत्र के भोजपुरी के ई हक दिआई कि उहे अपना के खाँटी भोजपुरी मानो। "भोजपुरी-अकादमी-पत्रिका" में "संपादक के ओर से" 'टीपनी' जवना भोजपुरी में लिखाइल बा, ऊ एह घरी के भोजपुर-जिला के भोजपुरी हऽ, "पत्रिका" में अपना ओर से संपादकजीका जे करे के होला (जइसे बिग्यापन के भासा देखल, "पत्रिका" के संखेया-बरिस ओगैरह के भासा ठीक कहल, लेखकन प आपन टीपनी के भासा बनावल, ओगैरह) ऊ सभ एही खास छेत्र वाला भोजपुरी में कहल जाला। अब कएदा-कनून अहथिर करे के माने का ई बा कि एह पत्रिके वाला

---

१ 'संपादक का ओर से, भोजपुरी तरज का मोताबिक होई : 'का ओर से' 'का मोताबिक', भोजपुरी के आपन ह; 'संपादक के ओर से' 'संपादक/मिजाज के मोताबिक' हिंदी के तरज ह। सभका ले पहिले इहे जरुरी बा कि भोजपुरी के हिंदी से ओकाचल जाय। ढेर "अजुरा" एही से बा, एह से बा। एगो अउर उदाहरन लिआव : 'लिखे के बेरा' : ई हिंदी का साँच में बोलल-नियर लागता। भोजपुरी का साँच में बोलाई— "लिखे का बेरा"; तबहूँ भोजपुरी मिजाज से एह तरह के पद तनी-मनी फइलावें रह जाता: भोजपुरी (भोजपुर-जिला वाला भासा) के देसज परयोग का मोताबिक ई पद अइसे बोलाई-लिखाई: "लिखत खा": ई खाँटी भोजपुरी होखी, हिंदी से 'ओकाचल' भोजपुरी होखी, कम सब्द के जल्दी लिखाए- बोलाए लाएक भोजपुरी होखी। — लेखक

www.bhojpurisahityangan.com

संपादकजी—चाहे उहाँके "संपादक-मंडल"—का ओर से जवन भोजपुरी लिखाला, ओकरे मिजाज का मोताबिक व्याकरन आ परयोग निहचित कइल जाव? "पत्रिका" का एह बात के एलान कऽ देबे के चाहीं कि ओकर भासा के नीति भोजपुर-जिला वाला भोजपुरी का मिजाज का मोताबिक रही : एह बात के उमेद कइल जाता कि एह तरह के एलान जरूरे कइल गइल होखी।

मय "अझुरहट" के "सझुरवला" में एगो मोट बात ई धेयान में रखहीं के परी कि साहित्त जवन लिखाला, तवना के भासा जगहा-जगहा मोका-मोका का मोताबिक होले। साहित्त में दू तरह के भासा हिगरा के राखल बा: एगो सुध "गद्य" का ओर के होले, दोसरकी "रम्य रचना" का ओर के। "गद्य" में लिखाला—संपादक के टीपनी, आलोचना, "पंचाइत के चुनाव"-जइसन लेख, बिग्यापन, नोटिस, समाचार-बुलेटिन, व्याकरन, परयोग-कोस, ओगैरह; "रम्य रचना" में जवन लिखाला, तवन सभका मालूमे बा : जात्रा-संस्मरन, गद्य-गीत, रिपोर्ताज, न्यूज-रील, केमरा-आइ, इहो कुल्ह कहनी, उपन्यास, नाटक, कविता का सङ्ही "रम्ये रचना" में आ सकेला। एकनी में भासा के "चाल-चलन अउर रग-ढंग" दोसरे होला। एगो के मानक हर जगहा-मोका खातिर दोसरको के ना हो सके। एह बात प हुँकारिओ परला के जरूरत नइखे, ई अपने-आप फरिआवल बा।

मय "अझुरहट" एही से बा कि भोजपुरी में अइसन कवनो मानक कोस तइयार करेके सभका ले जरूरी काम नइखे कइल गइल, जवना में मय भोजपुरी-छेत्रन के आपन-आपन परयोग खतिआवल होखे आ जतना रूप सुनालें सें, ओहनी के बटोरल होखे। एह लेख का अखीर में अइसना कोस के एगो नमूना दिआइल बा : ऊ नमूना एह बिसवास से दिआइल बा कि अगर[1] एह तरहा के कोस में बिदवान लोग अउर कुछ अपना तरफ से जोड़के एगो भरल-पूरल कोस तइयार करो त भोजपुरी भासा के "अझुरहट" "सझुरावे" में ढेर मदत मिली।

तबहूँ संपादकजी जवन कुल्ह "अझुरहट" रखले बानीं, तवना के एक-एक कऽ के सझुरावल जरूरी बा, काहे कि "अझुरहट" में अउर कुल्ह कई गो बात बाड़ी सं जवना से बिसभरम रहला प "सझुरावे" में अउर मन अकुता जाई।

१. "ऋ" भोजपुरीओ में तब लिखा सकेला जब ऊ गद्य लिखात होखे जवना में "ऋग्वेद", "ऋचा", "ऋषि"—जइसन सब्दन के बेवहार बिसय आ ओकरा बातावरन का मोताबिक होखहीं के चाहीं। संस्कृत में एह मयेला के लेख होखी-"बेद-पुरान में देवी-देवता के सरूप", त 'ऋ'-ए के बेवहार बरतनी में चाहीं, एह से कि संस्कृत के एह अच्छर के आपन परिभासा कइल होखी। अइसे त देवनागरी का बरनमाला में कवनो अच्छर नइखे जवना के परिभासा संस्कृत में ना होखे, बाकिर एह खास अच्छर के जवना सब्दन का बरतनी में लिखाला, तवना के आपन-आपन मतलब में अइसन आपन एगो मरजादा बा कि उहे भंग हो जाई, अगर ओही तरह से ऊ ना लिखाई। "संस्कृते" सब्द के बरतनी, गद्य में, भोजपुरिआवल जाव त ई हिरिसे कहाई। "ऋ" के बेवहार उहवों होई जहवाँ नाटक ओगैरह में पढ़ल-लिखल पात्र चाहे संस्कृत के बिदवान भा सिच्छक का मुँह से भोजपुरी बोलवावल जाता। एह अच्छर का अइसन कुल्ह जगहा प रहला से ऊ "बातावरन" बनल रही जवन ओह जगहा खातिर जरूरी बा। ई परतिआवल बा कि कागज प लिखाइल भा छपल सब्द के खास बरतनी आ ओकरा बिसेस 'ध्वनि' से एगो 'बातावरन' बनेला, आ पन्ने प एगो लोक ठहा हो जाला। अबगे एगो सब्द आइल हा—'ध्वनि'। एही सब्द के कइसन लोग बोलेला? हिंदी के एम-ए के छात्र केपरफेसर

---

१ "अगर" के बेवहार गद्य में होखे के चाहीं, जइसे 'बाकी' चाहे 'बाकि' का बदला में "बाकिर" के ("बाकिर" प जुर्तल बिचार कइल जाई)। "अगर" का 'जगहा प' एगो सब्द सुनाला-'जो' (जवन 'ज' आ 'जो' का बीचे के 'ध्वनि' वाला होला)। 'जो' चाहे 'ज' के इस्तेमाल गद्य का बदला में रम्य रचना में होखे के चाहीं, जवना में बोलचाल के परयोग के 'टेप' सुनाला। —लेखक

www.bhojpurisahityangan.com

जब अपना घरे, भोजपुरी में, साहित्त के आलोचना आ सास्तर के बात समुझावे लगिहें त एह सब्द के ठीक ओइसहीं कहिहें जइसे ई संस्कृत चाहे हिंदी में कहाला; नाटक-उपन्यास ओगैरह में ऊ परफेसर आ छात्र बतिआवत सुनइहें त ओह घरी बरतनीओ संस्कृत आ हिंदीए वाला रह जाई। जिन्हका संस्कृत चाहे हिंदी साहित्त के जानकारी नइखे, उन्हुकरा बोलचाल में 'ध्वनि' सब्द अइबे ना करी, काहे कि एह सब्द से उन्हुका भेंटे कहिआ के ? जब बातावरनो के खेयाल राखल जरूरी होला त एह में का हरज कि भोजपुरा का इहो छमता रहो ? बातावरन ठड़ा करे खातिर त अँगरेजीओ उरदू-फारसी का लहजा में लिखाए लागेले। अइसे देसज अँगरेजी का मिजाज में कम आ छोट-छोट सब्द हवें सँ, बात भर बात कहल-लिखल जाला; उरदू में बात से बेसी सब्द आवेलन सँ, जवना के वाक्-चक्र (Circumlocution) कहाला तवन ओकरा में बेसी होला। दूनो के उदाहरन लिआव—मुगल दरबार में उरदू में एलान होत रहे 'बाअदब बा-मुलाहज़ा होशियार मुल्क-ए-हिंदोस्तान के शहंशाह मुअज्ज़म अकबर तशरीफ़ फ़रमा रहे हैं !' : ओइसहीं अँग्रेजी के अइसना नाटक-उपन्यास में, जवना में मुगल-दरबार के बातावरन ठड़ा करे के परेला, भाषा के मिजाज उरदुआ जाला: His Imperial Majesty, Exalted of Heaven Shah-en-shah Akbar, Coqueror of the World approaches ! अँगरेजी में 'अरेबियन नाइट्स' सुरू से अखीर तक ले एही उरदू-फारसी का तरज में लिखाइल बा : जवन बात सोझ कहा सकता (जइसे आज-काल्ह का खाँटी अँगरेजी में कहल अच्छा मानल जाला), ऊ उरदू का ढंग से घुमा के कहाइल बा। जइसे 'Sire, understanding that a line from me will by no means be received unfavourably by you I make bold to state that·····' तरज उरदू के बा, अँगरेजी के ना। अनुवाद करे में बातावरन के जइसे-के-तइसे राखे के परेला। नोक्ते लगावल सब्द लिखला से बुझाई कि पात्र कवनो करीमा-खालिकबारी पढ़ल मुन्सीजी हवे। बाकिर ई नोक्ता लगावल सब्द भोजपुरी में, गद्य में, संपादक का टीपनी आ आलोचना में, 'ईरान का ओर अमेरिका के रुख'—जइसन लेख में, ना लिखाए के चाहीं, काहे कि नोक्ता भोजपुरी का अपना मिजाज में हइले नइखे। हिंदीओ का गद्य का मिजाज में नोक्ता नइखे, ई गद्य लिखेवाला आ पढ़ेवाला का धेयान में राखे के चाहीं: अकासवानी के समाचार-बुलेटिन हिंदी के गद्य में होला, बाकिर पढ़त खा उचारन बोलचाल वाला कइल जाला, (बोलेचाल में नोकता दे के बोलाला) ई ठीक नइखे। एह से 'ऋ' के गद्य में रहे देवे के चाहीं, रम्य-रचना में, जब तक ले ओइसन पात्र ना होखपु, 'रि' चली, जवन भोजपुरी का अपना मिजाज के बरतनो होई। देहात के सधारन भोजपुरी बोलेवाला पात्र रम्य रचना में कही—'रिगवेदो में पंडीजी बतावत रहीं कि मोसमात के बिआह के कवनो जिकिर नइखे।' बाकिर ओही रम्य रचना मे—पंडीजी'—नियर पात्र बोली 'इंद्रो भगवान ऋग्वेद में सोम पीके बउराइल देखावल गइल बाड़े।' अँगरेजी में एगो फ्रेंच भासा के सब्द लिखाला—Chef-d'œuvre' (शे द'-व्र, माने बहुत बढ़िया रचना)। एह सब्द में जवन संजुक्ताच्छर (ligature) लउकता—'œ', ऊ असहीं छापल जाला, भले manoeuvre' में ऊ ना रखात होखे। बाकिर एही बरतनी वाला फ्रेंच सब्द कहवाँ लिखाला ?—आलोचना का गद्य में, उचारनो फ्रेंचे वाला रह जाला, भले हिंदी से लिहल 'जंगल' के उचारन, मोटका 'ज' का सङे, 'जाङ्ल' होखो। तबहूँ, ई फ्रेंच सब्द लिखाला तबे, जब ऊपर-नीचे अगल-बगल के अउर कुल्ह सब्दन के मेल ओह लेखके बातावरन में रहेला।

बिसर्ग भोजपुरी मे ना होखे, ई कहला से भोजपुरी का ई छमता ना रह जाई कि 'रम्य रचना' खातिर पात्र के बोलल ऊ जइसे के तइसे 'टेप' क लेउ। कहनी-नाटक ओगैरह में लिखा सकेला—'जाः, लोटकिया त कुइएँ में गीरि गइल, अब का करीं !' 'लः, परसादी त कउआ जुठिआ बिहलस !' भोजपुरी गद्य में लिखाए जोग साइत अइसन कवनो ध्वनि, भोजपुरी का मिजाज का मोताबिक, नइखे; रम्य रचनो में एकरा खातिर हलंत का सङे 'ह्' राखल जाव त उहो ओकरा मिजाज के ना होई, काहे कि नोक्ता नियन हलंतो भोजपुरी का गद्य में लिखाएवाला सब्दन

www.bhojpurisahityangan.com

का मिजाज खातिर अटपटाह परी। हँ, कोस में सब्द के उचारन बतावे खातिर हलंत के बेवहार कइल जा सकेला, जइसे, 'लाखल्', 'लाखाइल्', जवना में ईकारो खातिर एगो खास चिन्हासी (Phonetic symbol) बनावे के परी, काहे कि भोजपुरी में अइसना सब्दन में जवन इकार चाहे ईकार दिआला, ऊ ना सूध हरस्वे हऽ, ना सूध दीरिघ, बलुक दूनो का बीचे के एगो 'ध्वनि' हऽ। 'दुःख' भोजपुरी में 'दुख' लिखा सकेला, एहू में हरस्व उ-कार सूध हरस्व 'उ' ना हऽ। अँगरेजी में 'but' का बीच में जवना अ-कार के ध्वनि सुनाला ऊ सूध अकार ना हऽ, हल्लुक आकार के ध्वनि हऽ, 'बटमार' का 'ब' में जे अ-ध्वनि बा ऊ ना हऽ, 'बाट जोहला' का 'बा' में जवन 'आ' ध्वनि बा उहो ना हऽ, ऊ हलुका आकार से देवनागरी का मात्रा से अइसे बतावल जा सकेला 'बाट्'। अबगे जे सब्द आइल हा—'ऊ', एकरो उचारन खातिर कोस में एगो चीन्हासी बनावे के परी, जे ई बताओ कि हरस्व उ आ दीरिघ ऊ का बीचे के ध्वनि एकरा में सुनाला, अबहिएँ फेन जे सब्द आइल हा—'बीचे', ओकरो में इ-ई का मध के ध्वनि होले। गैर-भोजपुरी वाला आपन देस के लोग चाहे भोजपुरी भाषा प सोध करे वाला विदेसी विदवान का अइसना कोस ले बहुत फएदा होई। जइसे बिसर्ग, हलंत गद्य में ना आवे के चाहीं, ओइसहीं आनुनासिक खातिर संजुक्ताच्छरो (ङ, ञ, ण्ट, न्थ, म्प) ना लिखाए के चाहीं, काहे कि एह भाषा में सगरे सोझ-सोझ बरतनी वाला ठाढ़-ठाढ़ अच्छर के सब्द सुनाल सँ आ 'स्वराघात' करीब-करीब हर अच्छरे प होत चलेला; आनुनासिक खातिर सभका से असान, छनभर में लिखा जाएवाला चीन्हा बिंदी बा (गंगा, गंगाजी, गंगामाई, गांगामाई; चंडाल कते का; सोतंत्र)।

'ङ' के उचारन भोजपुरी में सुनाला—'अङौछी/अङउछी पहिरले मरदवा उघारे-निघारे चलि बिहलस'; 'एकर आङछ अइसन बा कि जबले आइलि हा, केहू-ना-केहू बेरामे रहता'; 'हमरा आङा के जामल, ढेर चल-बिद्धर भइल बाड़?' 'जाङरा ना चलइब, आ चहब कि मलगोफे मेंटाव!'

'ऐ' त सुनइबे करेला—'बंकुफ कते का!' 'एकदम से बैले बाड़, आरे हइसे ना धरऽ, हइसे!' 'बा नूँ ममिला टेंट?' 'त केकरा में ऐब नइखे?'—'ऐ' ऊ बोलत सुनाला, जे पढ़ला-लिखला का ओजह से, आनल-चिन्हल अच्छर का असर में रहेला—ऐनक हइहे रखले बाड़ ठाकुर! एमें त हमार अधे गोंड़ लउकता!' जे ई जनबे ना कइल कि एह अवाज के लिखलो जाला ऊ त बोली—'अएनकिआ? झेंपिए में त रहलि हा, देखु ना फेन से!' 'मय' के उचारन कबो-कबो 'मैं' से बतावे के परी, जब रम्य रचना में अनमन जिनगी के ठड़ा करे के कोसिस होखी—'आरे, मैं लोटिआ अकेलहीं खा घलल हा?'

अब एगो अच्छर रहता—'ओ'। इहो कबो-कबो सुनइबे करेला—'आरे कवना दो औघड़ का फेरा में परि गइल मरदवा!', 'आछा, इहे एगो कोर खालऽ अउरी, सुगना नुँ हमार!' 'छौंड़ा बड़ कजाक बा ए भाई!' 'औ-औ ढेंकारत पंडीजी तोन सुहुरावे लगली!'

'ञ' सुना सकेला—'अइसन धइ के बाबि दिहलसि कि काञ-देना कऽ के रहि गइले।' तबो सोझ असान बरतनी वाला भाषा भोजपुरी में आपन सब्द 'चंवल' होखी 'चञ्चल' ना, जबले पात्र अइसन ना होखे जेकरा बोले का बेरा, संस्कृत के बरतनी, लउकत रहेला।

श, ष, क्ष, ज्ञ, भोजपुरी का मिजाज का मोताबिक त नइखे, बाकिर रम्य रचना में पढ़ल-लिखल पात्र का मोताबिक लिखाइल भाषा में ई कुल्ह उचारन सुना सकेला। ई उचारन ना रखाई त पात्रन के बोली बलजोरी भोजपुरि-आवल लागी।

बातावरन का मोताबिक 'ण' (जइसे 'रावण' में) रह सकेला, अइसे 'रावन' त भोजपुरी के आपन बरतनी बड़ले बा। 'ण' के उचारन 'ड़ें' में बा, बाकिर 'रावण' के रावड़ें' लिखाई त उचारन का हो जाई, आ 'रावेंड़' लिखाई त कइसन लागी? सवाले से जवाब मिल जाई। भभुआ का भोजपुरी में एगो मद्धिम (faint) 'ण' 'बाड़न' का उचारन में सुनाला; एह मे 'ड़' जे बा से 'न' सङे मिल जाला आ जवन उचारन सुनाला ओकरा खातिर एगो अलगे उचारन के चीन्हासी बनावल होखे तबे ऊ बिदेसी, चाहे दोसरा भाषा के लोग, खातिर सुविधा के हो सकेला—देवनागरी में भभुआ के ई 'बाड़न' के उचारन-लिपि अइसे हो सकेला—

www.bhojpurisahityangan.com

'बाण' : उचारन-लिपि (phonetic transcription) में 'ण' का छोट लिखइला से बहुत कुछ काम चली; 'बहुत कुछ' एह से कहाइल कि अंगरेजिओ में 'l' के उचारन के चिन्हांसी एके गो बा ('l') जब कि 'large' के 'l' आ 'needle' का 'l' में ध्वनि के फरक होला—'large' के 'एल' मोट आ फीका होला, 'needle' के 'एल' महीन, मीठ, टुनकिआह। अंगरेजी के 'न' (n) ध्वनिओ खातिर एके गो चीन्हांसी बा (n), जबकि हमनीं के 'नति' 'नत', 'नाति' के 'न' (चाहे 'नून' के 'न') का निअर ओहिजा 'run' 'between' में एगो 'नँ' (चंद्रबिंदु वाला) सुनाला, आ 'know' 'nasty' 'neither' में एगो मोट, फीका (सरदी भइला प नाक जबद गइला से बोलाए वाला) 'न'-ओ सुनाला। भोजपुरी में हरेक ध्वनि का उच्चारन खातिर चीन्हासी रहे के चाहीं।

'ल' के गुंजाइस त कसूं नइखे लउकत।

'शराध' भोजपुरी का मुंह में ओइसहीं बा, जइसे सांप का मुंह में छछुन्नर। भोजपुरी 'राध' से अपना मिजाज का मोताबिक लागो, आ तलाब्बे 'श'-ओ मुंह में लटकओले रहो, ई ठीक ना होखी। 'शरधा', 'शराप' एक त सुनाय ना : जे तलाब्बे 'श' के उचारन करी ऊ सब्द के बाकी हिसा के काहे भोजपुरी का मोताबिक बोली ? इहो सुना सकेला जब कवनो अइसने पात्र ठड़ा करेके होखे जे ई जनावे वाला लागे कि हम सूध-सूध बोलिला—हिन्दीए बोलेवाला कबो-कबो हेर अगराइ के बोलेला—'शमश्त शंशार में इशका श्वागत किया गया'। भासा के अइसन छाती उतान कऽ के बलेवाला सिकिआ पहलवान जब नाटक-उपन्यांस में उतरिहें त उन्हुंका खातिर जगहा राखहीं के परी।

२. 'अपना असल सोभाव'[1] के सँचल त सभका ले पहिले जरूरी बा, बाकिर भोजपुरी के छमतो के बढ़ावल ओतने जरूरी बा। छमता तब बढ़ी जब कुल्ह रूप जतना सुनालें सें, ओतना के रहे दिआव, खाली कोस में ओकनी के खतिआवल रहो जेह से ई पता लागे कि कवन रूप कब आ कहवाँ लिखा सकेला। एक सब्द के कई गो रूप भोजपुरी के हेर 'अझुराह' त कऽ दीही, बाकिर जतने अझुरहट भासा में रहेला, ओतने ई साबित होला कि भासा जिनगी के अउरू बेसी कोना-अँतरा के खँघरले बिआ : जिनगी में बिचार आ भाव के जतने अझुरहट होला, भासा, ओकरा महीन से महीन रेसा के हिगरावत, तरह-तरह से सब्द आ ओकर रूप आ ओकर सऽ-सऽ के सब्द गढ़त चले में अझुराह होइए जाले। जवना भासा में जतने अझुरहट होई, ऊ ओतने छमता राखी। अझरहट ओह

---

१. संपादकजी के सोगहग बाक हइसे बा 'भोजपुरी के अपना असल सोभाव के छोड़ि देवे के परी'—एह बाक से आइसने परेसानी झलकता जवन चसमा लगवले चसमा खोजत अदमी में लउकेला : ई पूरा बाक हिंदीए का तरज प बुझाता—एगो जे पावा हिंदी का टँगरा में बन्हाइल बा ऊ 'को' के ह; ई 'को' हिंदी के तेज ना चले दे; हिंदी मे एकरा बेगर बाक लिखा सकेला, जइसे भोजपुरीए के संपादकजी वाला बाक हिंदी में अइसे लिखा सकेला 'भोजपुरी को अपना असल स्वभाव छोड़ देना पड़ेगा', बाकिर तबो लिखाला—'भोजपुरी को अपने असल स्वभाव को छोड़ देना पड़ेगा'—एही दोसरका बाक के भोजपुरी रूप संपादकीय टीपनी मे बा। हिंदी अपना टँगरी के पावा नइखे बीगत, एकर देखादेखी भोजपुरिओ अपना टँगरी में पावा बन्हले रहो ? भोजपुरी तरज का मोताबिक टीपनी के बाक हइसे रहो, 'भोजपुरी का आपन असल सोभाव छोड़ि देवे के परी', त सब्दो कम लगिहे स, आ भोजपुरी में तेजी आ सकी।—ई कुल्ह ममिला प बहसा-बहसी एही समुझल-बूझल नीअत से होखे के चाहीं कि 'हमनी का मिलि-जुलि के एकरा चाल-चलन अउर रंग-ढग के जाने के कोसिस कइल जरूरी बा' : संपादकजी का सऽ-सऽ लेखकों के कहनाम बा कि एह प 'कवनो आगरह नइखे, बिदवान लोग सोचसु' ['बिदवान' सब्द के दू गो बरतनी ओही (अठवे) पन्ना प, ऊपर, 'बिद्वानन' आइल बा, फेन कतहूं 'सातन्त्र' (सतवाँ पन्ना) त कतहूं 'सोतन्त्र' (पँचवाँ पन्ना) के बरतनी-भेद लउकता, ई भोजपुरी प अंगुरी उठवा दीही।] —लेखक

www.bhojpurisahityangan.com

भाषा के सिखावेवाला, ओकर मिजाज बतावेवाला किताब में ना होखे, इहे देखल जाला। भाषा के बाटुर अझुरहट के मोटे-मोट खतिआवले जा सकेला, जिनगी से भाव आ विचार के जतना अझुरहट ऊ लेत रहेले, ओकनी प रोक लगवला के हक केहू का ना होखे। कवन अइसन भाषा बा जवना के अझुरहट घुरचिआह नइखे ? दोसरा भाषावालन का कवनो भाषा सीखे में 'दिक्कत' ना उठावे के परे, एकरा खातिर ऊ भाषा आपन, जिनगी से पावल, घुरचिआई छोड़ दे, अइसन ना होखे, व्याकरन आ कोस के ई काम हऽ कि जे सुनात जाव, ऊ बटोरत चले, खतिआवत चले। जतने घुरचिआइल अझुरहट भाषा में लउकेला, ओतने ओकर 'मिजाज' 'असली' होला। घुरचिआहीए से परिचल भाषा के सीखल हऽ। अब एहिजे संपादकजी इहो सवाल उठवले बानीं कि संस्कृत के 'सब्दन के भोजपुरी के मिजाज के मोताबिक लिखल जाउ कि सूध संस्कृत के मोताबिक'। एकरा से ई सवाल ढड़ा हो जाता कि 'स्वराघात' 'अन्विति' 'स्थापत्य'-नियर सब्द आलोचना में ना आवे दिआई त आलोचना लिखाई कइसे। आलोचना लिखाई समुझल-बूझल पाठक खातिर, बाकिर एह सब्दन का बदला में कई गो सब्द के बेवहार कइला से ऊ लागी साहित्त के ओह छात्र खातिर जेकरा के ई कुल्ह सब्दन के माने सङे-सङे बतावल जरूरी बा। जिन्हिका एह सब्दन के मूल संस्कृत वाला रूप के भोजपुरिआवल जरूरी बुझात होखे उन्हुकर मुँह देख के भोजपुरी का साहित्त मे आलोचना के त सोगहगे कुजात छाँट देवे के परी। ई जे कहनाम लोगन के बा कि 'अगर भोजपुरी मिजाज के मोताबिक सब्दन के लिखल जाई त पढ़ेवाला लइकन के हिंदी कमजोर हो जाई', त एकरो जवाब इहे बा कि हरेक भाषा के आपन मिजाज होला आ पढ़ेवाला का ई बात अगर सुरूए में ना घोंटाइल त उन्हुकर अपने भाषा कमजोर हो जाई, दोसर भाषा पढ़ला से आपन भाषा कमजोर हो जाए के बात त फरका बा। जवना दू गो भाषा के अच्छर एके होला आ बरतनिओ करीब-करीब एके नियर होला, ओह दूनू में से कवनो एगो के सीखला के असर दोसरका के लिखला प परी, त अंगरेजी सीखे वाला के फ्रेंच ना सीखे के चाहीं।[1] एक नियर अच्छर आ बरतनी के भासन के बात छोड़ीं, एगो के दोसरा प असर परल त सोभाविक बा; जवना दू गो भाषा के एक नियर अच्छरो ना होखे (जइसे हिंदी आ अँगरेजी), ओहनियों में से एगो के पढ़ला से दोसरका के 'कमजोर' हो गइला के नमूना मिलेला—जइसे अँगरेजी में पढ़लीं 'throw light on', आ एम-ए हिंदी के छात्रन से इंतहान में सवाल पुछतानीं—'जैनेंद्र के कथाशिल्प में स्थापत्य पर प्रकाश डालिए', हिंदी में बोलल लिखल जाला—मैं चाहता हूँ कि तुम जाओ' आ एह से अँगरेजी 'कमजोर' हो जातिआ—'I want that you should go/leave' जबकि अँगरेजी के मिजाज का मोताबिक होखे के चाहीं—'I want you to go/leave' : कलकत्ता पुलिस में जे भोजपुरिहा सिपाही भाई लोग बा, ऊ बंगला के असर से बोलेला—'उन्हुका इहाँ देखा करे गइल रली हाँ ?' कवनो भाषा अपना के सीखेवाला के मुँह ना देखे—उन्हुका खातिर आपन मिजाज ना बदले, सीखेवाला के आपन भाषा कमजोर हो जाउ, त हो जाउ।

३. भोजपुरी 'गँवारू भाषा' ना हऽ, एगो मातृभाषा हऽ। मातृभाषा में दोसरा भाषा के सब्द जइसे-जइसे कहाला ओकरा के बटोरके कुल्ह के जगहा-जगहा मोका-मोका खातिर खतिआवल राखे के परी। तबहूँ 'जवना तत्सम सब्दन के भोजपुरी रूप हो गइल, ऊ त चलो, बाकिर नया आवेवाला सब्दन के भोजपुरिआवल ठीक ना होई', ई कहल मातृभाषा के ऊ हक छीनल ह, जवन कतनो कोसिस कऽ के छिना ना सके। मातृभाषा में नया आवेवाला सब्दनों के रूप बदलबे करी, बदलते रही आ जगहा-जगहा, मोका-मोका प तरह-तरह के रही। अँगरेजन

१. अँगरेजी आ फ्रेंच में एके सब्दवा दू तरहा से लिखाला आ उचारनो अपना-अपना ढंग से होला—novel (नॉवेल) nouvelle (नू-वेल); possibility (पॉसिबिलिटी), possibilite (पॉसिबीलीते) percentage (प-सेंटिज), pourcentage percantage (पूर-सॉं-ताह्ज़्)। भोजपुरी अलगा आपन बरतनी चाहे उच्चारन काहे ना राख सके ?

www.bhojpurisahityangan.com

खातिर पाकिस्तान के मियाँ भुट्टो के नाँव, जे हाँ-देखा अइले हा, अँगरेजिया दिआइल –'बुटो'। अँगरेजी के अपना उचारन का मिजाज में ख, घ, छ, झ, ठ (सूध), ढ, ण, त, ध, क्ष, ज्ञ, ओगैरह ध्वनि नइखे; एह से जवन सब्द एह ध्वनि के अबो अइहें सँ ओकनी के उचारन आ बरतनी अपने मिजाज का मोताबिक अबो चली, अब ले चलल आ अबो चली। भोजपुरी मातृभासा में 'नया आबेवाला' तत्सम सब्द चाहे पद जइसे, 'लक्षणा' 'बिब-बिधान' 'अप्रस्तुत योजना' अब आवहीं के बा, काहे कि आलोचनो एकरा में लिखाए लागल : लक्छना, बिधान, जोजना अबहिओं भोजपुरी का लेखक के लिखल आलोचना में आ सकेला, काहे कि कुछ ध्वनि एकरा में हइए नइखी सँ—आ बड़लो बाड़ी सँ त साइत ओह जगहा प ना जहवाँ ऊ संस्कृत आ हिंदी में पावल जाली सँ। 'य, व', सब्द का सुरुम में ना सुने के मिले—ओकरा जगह प 'ज, ब' सुने के मिलेला; सुरुम में 'य' 'इय/इअ'-नियर सुनाला (याद-इयाद, इआद, यार—इयार, इआर); ओही तरह से सुरुम में 'व' 'ब' नियर सुनाला वाह - बाह; विकल—बिकल, बेकल; वैद्य—बैद)। ठाढ़-ठाढ़ सोझ असान 'ध्वनि' के अच्छरन के भासा भोजपुरी का बरतनी में तत्सम सब्दन के जवन अच्छर भोजपुरी का उचारन का मिजाज का मोताबिक भोजपुरिआवे लाएक पर जाई तवन त बदलिए जाई, आ जवन उच्चारन भोजपुरी खातिर अटपटाह परी ऊ जरूरे बगर जाई। एही से उरदू का ओर से आइल सब्द भोजपुरी में जास्ती बा, संस्कृत के तत्सम भोज[1] प अटपटाह परेला। बराबर इहे धेयान में रहे के चाहीं कि सब्द के रूप भोजपुरिए का साँस में बोलल-लिखल जाव।

४. 'ऊपर' आ 'उपर', 'बाकी' आ 'बाकि' चाहे 'बाकिर' भोजपुरी में कइसे आइल, कहवाँ से आइल, एकर पता लाग जाय त अच्छे होई कि भोजपुरी कोस में 'व्युत्पत्ति' दिआ सकी, बाकिर ओकरा ले जरूरी चाहे ओतने जरूरी इहो बा कि दूनो रूपन के हिगरावल-खतिआवल जाव आ ई काम करत खा बनावल व्याकरनो ले बड़ जे जिनगी के व्याकरन होला, ओकरा से बिसभरम ना रहल जाव। 'ऊपर' के 'दीरिघ ऊ' आ 'उपर' के 'हरस्व उ'-ओ सुनाला; जइसे 'तारा-उपरी अदमी अपने कोंचाइल बा, आ ऊपर ले अब तूँ एगो बीपत अइलऽ !' 'ऊपर' साइत तबे बोलाला जब ओकरा मतलब प जोर दिआला, आ 'उपर' तब, जब खाली अतने जनावे के होला कि कवनो चीझ नीचा नइखे, बलुक एकर उलिटा, माने दोसरा ओर, बा ('उपरका खांघा में होखी, देखु ना फेन से!' 'उपर-झाँपर देखि के छाड़ि दिहल बेजाँइ त होइबे करी')। —'बाकी' 'बाकि' 'बाकिर' 'बाकिर-का-कि' 'बाकिर जे बा से'—अतना रूप 'बाकिर' के सुनाला। 'बाकी' तब सुनाला जब बोलेवाला बोलत खा रुक जाय, कुछुओ सोचके बोले के चाहत होखे; चाहे कवनो नेआ बात कहेके चाहत होखे—'कहले हा त कि क देबि, बाकी····करसु तब नँ/नूँ।' बोले का तेजा में हरस्व-इए निकसेला—' 'माने के त मानिए लिहले, बाकि तनी चोन्हा कइल चाहीं नूँ/नँ ?' 'बाकिर' साइत इतमीनान से बोले में आवेला, ई पूरा सब्द ह। भोजपुरी का गद्य में इहे सब्द चाहीं। 'बाकिर-ओ' रम्य रचना में चल सकेला-('कमवाँ त सलटी उन्हुकेले, बाकिर उन्हुका त जाङर में घुन लागल बा'।) 'बाकिर-का-कि' 'जे बा से', ई दूनू के सकुनतकिआ में सामिल कइल जा सकता। अइसहीं, 'चलल जाय', 'चलल जाउ', 'चलल जाव'—'जइसन क्रियन के बारे में (?) कवनो रूप असथिराह' कइ लेवे के जे आगरह बा, ओकरो खातिर साइत इ जादे आच्छा होई कि एकनी के मोका फरिया दिआव: 'चलल

---

१. 'टीपनी' में एक जगहा 'जियादे' छपल बा, नोक्ता देखला प कहाई कि छप गइल बा। साइत (बिना नोक्ता के) 'जियादे' अँगरेजी का 'too much' का भिरी परी ('जियादे तरनइला से ढेर बेजाँइ हो जाई'); भोजपुरी में एह सब्द के अउर रूप चाहे परयाय जवन सुनाले स ओकनिओ के अइसहीं हिगरावल जरूरी बा। एक सब्द के कई गो रूप वाला भोजपुरी के आपन अइसन खूबी बा जेकर फएदा उठावे के चाहीं; सब सब्दन के हिगरा दिआव त एकर छमता देख के दोसरा भासावाला लोग का लउकी कि भोजपुरी में जिनगी के ढेर कुल्ह कोना-अंतरा खँघारल बा। —लेखक

www.bhojpurisahityangan.com

जाव' तब, जब अपना ओर से अँगरेजी में बोलाला 'Let us / go/leave/start / make off / take off' ओगैरह; 'चलल जाय' तब, जब आदर से आसन छोड़े के कहाव (जइसे, 'चलल जाय बिजे करें' 'अब अपने का उठल जाय, पूड़ी छनाइल बन हो गइल !'); 'चलल जाउ' में 'उ' के ध्वनि अतना महीन आ मधिम बा कि एह 'जाउ' सब्द के ऊपर बतावल दूनो मोका खातिर राखल जा सकेला—'जाय' आ 'जाव' के तेजी में बोलल रूप का नियर, जेकर बेवहार 'रम्य रचना' खातिर रहे दिआ सकता। अब एह चउथा बात का बहस में जे कुछ ऊपर कहाइल बा ओकरा बारे में फरका से ई कहल जरूरी बा कि दू सब्दन का बीच में जवन भेद बतावल बा ऊ बेदवाक-नियर ना मानल जाए के चाहीं। कवनो जरूरी नइखे कि जे फरक बतावल बा, उहे फरक होत होखे। कहे के मतलब अतने बा कि एही तरहा से कोस में परयायबाची सब्दन के आपन-आपन मतलब के खोजे खातिर दिमाग बिदवान लोग लगइहें त ढेर बात के पता चली, जइसे, इहो पता चली कि 'बाकी-बाकि' में दीरघ-ई आ हरस्व-इ-नियर जे इकार सुनाला ऊ अतना महीन बा कि ओकरा उचारन-लिपि खातिर कोस में एगो चिन्हासी बनावे के परी। ई बात एह सब सब्दन के उचारन-लिपि लिखे का बारे में देखे के होई : 'मीली' (तहरा ना मीली, हटऽ, हमरा के देखे दऽ') 'लेसु' (उन्हुका जवन करे के बा तवन कऽ के देखि लेसु); 'खाइबि' ('हम त खाइबि ए भाई, हमरा त भूखि लागल बा/बिआ'); अउर अइसने कुल्ह सब्द, जवना में हरस्व-इ आ दीरघ-ई लागल जइसन बुझाला ('देख, ए ढोठू, ढेर अँड़िचऽ नति, ना त काँड़ि देबि')—एह बाक में 'नति' आ 'काँड़ि' में जवन हरस्व-इ सुनाला ओकरा प धेयान दिहला से ई बुझाई कि हरस्व-इकार के ई ध्वनि हिन्दी का हरस्व-इकार वाला ध्वनि से तनी महीन बा—'परिस्थिति', 'बिभूति', 'बिस्मृति' में हरस्व-इ कार जवन आवेला तवना में भोजपुरी के ऊ निकसते-बथमल ध्वनि नइखे। भोजपुरिए के 'उन्हुका' के हरस्व-उ आ 'करसु' के हरस्व-उ में एगो ध्वनि नइखे।[1] बिदेसी जब भोजपुरी पर सोध करे अइहें सँ, ध्वनि का भेद से चाहे सुर का उतार-चढ़ाव से खुलेवाला अरथ देखत गाँव के गवनई आ गीत में कवनो बात खोजिहें सँ त कवन कोस ओकरा लगे रही जेकर पन्ना उलटला से ओकरा कुछ मदत मिली ? एही ध्वनि के भेद आ ओह भेद से बदलल अरथ खोजे में बिदवान लोग का इहो पता लाग सकेला कि भोजपुरी में बाक्यन का सऊँ-सऊँ अवाज के उतार-चढ़ाव आरोह-अवरोह (intonation) बतावे वाला किताबो के जरूरत बा, खाली ब्याकरने के ना।

५. संपादकजी अपना 'टीपनी' का एह हिसा मे दूगो रूपवाला सब्दन के जवन फेहरिस्त देले बानीं ओह में के ऊ दूनों रूपन में से कवनो एगो के राखे के सवाले नइखे, काहे कि एगो के बेवहार एक जगहा होला अउर दोसरा के दोसरा जगहा। जवन मूल सब्द बा (जइसे, हाँथ) तवना के दोसरका रूप (हँथवा) के बेवहार तब होला जब सुने-पढ़ेवाला का आङा 'हाँथ' के जिकिर आ गइल होखे; चाहे एह 'हँथवा' सब्द के लिखे-बोले वाला का ई बिस्वास होखे कि पढ़े-सुनेवाला समुझ लिही कि कवन चीझ; दोसरका रूप तबो सुनाला जब ई सब्द के लिखे-बोलेवाला आ पढ़े-सुनेवाला का बीचे एगो मूल समुझल-बूझल होखे। अँगरेजी में जइसहीं 'the' के बेवहार होला उइसहीं दोसरका रूप के सब्द भोजपुरी में आवेलें स। [अँगरेजी में 'the' के अइसने इस्तेमाल से इहवाँ मतलब बा, सब इस्तेमाल से ना।] 'Let me take / carry the

१. संपादकजी के आपन सब्द लिआव—'लायक'; : 'एगो बात अउरू बिचारे लायक बा'—एहिजा हिंदी का बरतनी के बेवहार भइल बा, साइत भोजपुरी में 'य' का जगहा 'ए' सुनला—'लाएक' ('ऊ अतना मोटक्कड़ रहलि कि ओकरा लाएक बरो त मीलल मोसकिल !'); 'नलाएक' ('नलाएक कते का, तोरा के मूड़ी छिलवावेके के कहले रल्हा रे ?') ई दूनू सब्दन के भोजपुरी बरतनी ओकरा ओह मिजाज का मोताबिक बा जवना में 'य' के जीभ-अइँठुवा घुमाव नइखे, ठाढ़ हरदी-नियर सोगहग-सोझ बा। तबो कोस में 'लायक' रहे के चाहीं जेकरा के देख के ई पाता लागो कि हिंदी वाला 'लायक' के भोजपुरी रूप आ उचारन का होला। एह सब्द ('लायक') के उचारन-लिपि चाहीं, जइसे 'ला-एक, ('नलाएको में स्वराघात 'ला' प परी।) —लेखक

www.bhojpurisahityangan.com

bag': भोजपुरी में उल्टा कइला प अइसे होई–'झोरवा हमरा के ले लेवे रऽ' The horse bolted 'घोड़वा छँउकि के भागि चलल'। अब 'जीभ' आ 'जिभिआ' के उदाहरन लिआव –'ऊ गूङ हऽ, ओकरा जीभ नइखे 'जीभिया सट्ट देना कबार लेवि, जनलऽ।' दोसरका बाक खातिर कवनो जरूरी नइखे कि 'जीभ' के जिकिर पहिले भइले होखे, अइसना जगहा 'जीभ' जे बा से बोले-सुने वाला का बीचे समुझल-बूझल चीज के नांव हऽ, 'जिभिआ' के मतलब होखी 'जीभ जवन बा तवन'। फेन दोसर उदाहरन– 'रतिआ खा नु घउआ टभके लागेला' इहवाँ बोलेवाला का बिसवास बा कि सुनेवाला का समुझल-बूझल बा कि दिन का बाद जवन रात आवेले तवना का बारे में कहाता, आ 'घउआ' का बारे में चाहे त बोलहीं वाला एकरा पहिले कुछु कह चुकल बा चाहे कसहूँ बोलेवाला का ई बिसवास बा कि सुनेवाला जानता कवना घाव का बारे में बोलल जा रहल बा। 'बेंहिआं ममोरि के देबि दुइ केंहुनाँठ,' इहो ओही के उदाहरन हऽ। 'मथवा प मोटरी लेले मेहरुआ नइखे हऊ, ललका सड़िया पहिरले; हँ हँ उहे, तनीं हांक पारऽ त!' इहवाँ 'मथवा' प' माने कन्हवा प ना, 'माथ' जवन होला तवना प। 'आरे, जुबवा त होइबे करी, आजु नाहीं काल्हु, देखत त रहऽ—दुनिआँ के हाल देखत नइखऽ?' अब इहवाँ सुनेवाला का बारे में बोलेवाला का ई बिसवास बा कि ओकरो मन में 'जूध' के बात पहिले ले बा। अब त ई सवाल रह जाता कि दोसरका रूप के एह सब्दन में कवना में 'आ' लागी आ कवना में 'वा'। [1] एकर फैसला जिनगी के ब्याकरन अइसे करेला: बोलत खा असानी से अ-कारांत में 'वा' लाग जाला, अउर इ-कारांत में 'ि-आ' बोला जाला। दोसरे ई कि 'वा' चाहे 'ि-आ' लागते, 'स्वराघात' जवन मूल सब्द के आ-कार आ 'दीरिघ ई' प के होला, ऊ, सब्द का खास हो गइला का ओजह से (ओकरा में भोजपुरी के आपन definite article 'the', 'वा' 'ि-आ,' के मतलब का ओजह से) अपने-आप हट जाला, कइल जाला। अँगरेजी में एह बात के देखल जा सकेला। एगो-दूगो सब्द लिआव; 'policeman' सब्द में स्वराघात 'li' प होला, एह से अगल-बगल के ध्वनि हरस्व हो जाली सँ: 'po' 'प' हो जाला, 'man' 'मन्'-नियर सुनाला, एह से 'policeman' के उचारन 'प-लीस्मन्'-नियर होला। ओसहीं 'professor' सब्द में 'fes' प जोर पड़ला से 'pro' 'प्र' रह जाला अउर 'sor' 'सर/सऽ': सब्द सुनाला 'प्र-फेसर/सऽ'। ई देखला से ई बुझा सकेला कि 'जूध' के 'जूधवा'; 'हाँथ' के 'हँथवा', 'जीभि' के 'जीभिआ' काहे ना होला आ काहे ना लिखाए के चाहीं। भोजपुरी में सोझ-सोझ ठाढ़-ठाढ़ उचारन होला—'जिभिया' के बदला में 'जिभिआ' 'पहरुवो' का बदला में 'पहरुओ' ओकरा मिजाज का जास्ती नगीच परी। एहिजो एह बात प बिचार करे के परी कि 'जिभिआ' आ पहरुआ में जे 'आ' अउर 'ओ' आवता ओकर उचारन भोजपुरी-कोस में अइसना चिन्हासी से लिखाए के चाहीं, जवन आ-या आउर ओ-वो का बीच के ध्वनि बतावे, काहे कि 'जिभिआ' में सूध 'आ' ना सुनाय आ ना सूध 'या' सुनाला, ओइसहीं 'पहरुओ' में 'ओ', उकारांत ध्वनि के पाछा रहला से, तनीं-मनी 'वो' नियर सुनाला। बरतनी में ठाढ़-ठाढ़ अच्छरे राखल जाला–हिंदी में कहाला 'बइदजी' लिखाला 'वैद्यजी', कहाला 'बइष्णव', लिखाला

---

१. संपादकजी के सवाल वाला बाक हइसे लिखाइल बा: 'एकरे साथे इहो ठीक करे के बा कि कवना सब्द में 'आ' लागी अउर कवना में 'वा' लागी?' प्रस्न चिन्ह लागल ई बाको भोजपुरी-ब्याकरन खातिर एगो समसेया बा, हिंदी-ब्याकरन में त साइत ई सहीए मान लिहल गइल बा, काहे कि हिंदी में ई घड़ल्ले से चल रहल बा। भोजपुरी ब्याकरन बनावे वाला लोग का एह बात प बिचारे के चाहीं कि बाक जइसे सुरुम होता ओकरा मुताबिक अखीर में पूरनबिराम चाहीं: 'एकरे साथे इहो ठीक करे के बा कि' ना रहो आ बाक सुरुए अइसे होखो कि 'कवना सब्द में 'आ' लागी' तबे प्रस्नचिन्ह लागे के चाहीं: 'एकरे साथे इहो ठीक करे के बा' ई पूरा बाक के मुख पद (principal clause) ह; एकरा पूरन बिरामचाहीं। —लेखक

www.bhojpurisahityangan.com

'वैष्णव', कहाला 'जा रिया ऊँ' (जैसे दिल्ला का हिंदी में) लिखाला 'जा रहा हूँ'; बंगला में कहाला 'शोकाले' लिखाला 'सकाले', कहाला 'दोरकार' लिखाला 'दरकार' कहाला 'द्याखा होलो' लिखाला 'देखा हलो'। [1] बरतनी में ध्वनिओ के उतारे के कोसिस होई त अझुरहट अउर घुरचिआह हो जाई, कवनो भासा के गद्य का बरतनी में ध्वनिओ के खेयाल रखल जात होखो, अइसन ना देखे में आवे। बरतनी में ध्वनिओ लिखाई त आरोह-अवरोहो जवन साँस चाहे स्वर के होला उहे काहे छोड़ दिआई ? लमहर साँस छोड़त जे पात्र हिंदी उपन्यांस में बोलेला—'तुम नहीं समझ सकती शील, यह राज़ मेरे ही साथ दफ़न हो जायगा।' ओकरा के केहू अइसे ना लिखके बतावे कि बुझा जाउ कि ऊपर उठल अवाज नीचाँ 'षड्ज' प आवता, हँ अतने लिखा सकता—'तुम्नईं समज सक्तीं शील, ये राज़ मेरे ई सात दफ़न ओ जाएगा।'

६. भोजपुरी का गद्य में 'आंख' वाला बरतनी होखी, 'आँखि' के ना, ई ऊपर का बात से साफ हो जाए के चाहीं। 'आँखि' लिखाई रम्य रचना में; जइसे हिंदी-उपन्यांस में 'यह' के 'ये' लिखा सकता, 'कर रहा हूँ' के 'करियाऊँ' लिखा रहल बा। लिखल रही 'आंख', पढ़ेवाला पढ़ सकेला 'आँखि', रम्य रचना में पढ़हूँ वाला के काम लेखके करत चलेला, जइसे अंगरेजी उपन्यांस-कहानी में believe me के blimee; I don't know के (I) dunno, got to के gotta घड़ल्ले से चलता। अंगरेजी गद्यो में ठाढ़-ठाढ़ अलगा-अलगा सब्द लिखल रहेला, जइसे 'It is not the result that counts', त एकरो के पढ़ेवाला पढ़ेला 'इट्स नॅ द रि-ज़ाल्ट दट् काउंट्स्', 'इट इज़' के अलगा-अलगा पढ़िए ना पावे, ई जानतो रहला प कि 'इट्स्' बोलचाल के अँगरेजी के उचारन का मोताबिक परेला।

सरवनाम—'उन्हुका, तोहनींका, हमनींका''''ओगैरह कइसे भइलें सँ अउर एहनी से कवन बिभक्ति के बोध होखता' 'ई सभ सोतन्त्र सब्द हवन सँ कि एहनी में कारक के बिभक्ति लागल बाड़ी सँ ?'—ई 'कइसे भइले सँ' एह के खोज होखे, दोसरा छेत्रन के भोजपुरी मे अइसना सब्दन के मिलान कऽ के देखल जाव, आ एगो छेत्र (जइसे भोजपुर-जिला) आ दोसरा छेत्र (जइसे बनारस) का बीचे के छेत्र (जइसे भभुआ) में एह सब्दन के रूप आ उचारन के 'टेप' बटोरल जाव तब साइत इहे पता लागी कि छेत्र-छेत्र के भोजपुरी के जवन आपन लय होला, ओकरा मोताबिक एकनी के रूप बदलत गइल बा, जवना छेत्र का नगिचा कवनो छेत्र परेला, ओकरा असर का ओजह से एह सब्दन के रूप बदलल रहेला। अइसे अउरी गहिरा जाके संस्कृत चाहे उरदू में एकर ब्युत्पत्ति खोजाव त भोजपुरी-कोस भरल-पूरल हो सकी, एकरा में केहू का का उजुर होखी ?

'एहनी में कारक के बिभक्ति लागल बाड़ी सँ कि ई सभ सोतन्त्र सब्द हवन सँ,' ई हिगरावल भोजपुरी भासा के बैग्यानिक अधेयन खातिर फएदे के होई कि एकरो एगो भरल-पूरल खतिआन तेआर हो सकी। बाकिर खतिआवे के फिकिर कइला से बेसी एह बात के चिंता कइल जरूरी बा कि कुल्ह रूपन के 'टेप' बटोरल बा कि ना। भोजपुरी के जतना पत्रिका छपल बाड़ी सँ, आज-काल्ह जतना साहित्त भोजपुरी भासा में लिखाइल बा, ओकरे से बाक बटोरल जाव आ ओह बाकन के, सब्दन के बेवहार का उदाहरन का रूप में, खतिआवल जाव, तबो ढेर काम सलटी। पहिले ब्याकरने ना बने, उदाहरन बटोरल जाव। ब्याकरने पहिले बने लागी त ई मकान बने के पहिलहीं

---

१. भोजपुरी में बिकारी (ऽ) प एही नजर से बिचार करे के परी। भोजपुरी जानेवाला मने-मने बिकारी देत त पढ़िए लेला, कवनो भासा वाला अपना भासा के ओकरा उचारन का मोताबिक पढ़ लेला : अंगरेजी में सब्द का अखीर में 'र' ध्वनि रहेला त आड़ा के ब्यंजन ध्वनि अइला प अपने-आप लोप क के पढ़ाला (जइसे अबगे 'क के' आइल हा) दोसरा का पढ़े में दिक्कत होखी एह से कवनो भासा आपन ध्वनि, स्वराघात आ स्वर के उतारचढ़ावो सङे-सङे ना उतारत चले। एगो उदाहरन लिआव—'छिलवावल मूँड़ी प ई फुनपाइंट पहिरे के के कहले रल्हा ?' इहवाँ पहिलका 'के' का बादवाला दोसरका 'के' खातिर कवन चिन्हा दिआत चली ? [एही लेख में बिकारी जहाँ-तहाँ देवे के परल बा, ई खुद लेखके का मन-मोताबिक नइखे] —लेखक

www.bhojpurisahityangan.com

ताला किनला-नियर होई – ऊ व्याकरन सब छेत्र खातिर ना हो सकी। जिनगिए से पहिले भासा लेले; ओसहीं जिनगिए से व्याकरनो लेउ, जिनगी से भासा ले के जइसे साहित्त में उतारेले, ओइसहीं जिनगी आ साहित्त दूनो के धेयान में रखत व्याकरन बनो। भोजपुरी-कोस में साहित्त में से सब्दन के उदाहरन बटोराए के काम सुरूमे हो जाए के चाहीं, आ हरेक सब्द का सङे चाहे ओकरा रूप का सङे ओकर व्युत्पत्ति, आकर आपन छेत्र, ओकर उचारन बतावल रहे के चाहीं। [ई कइसे कइल जा सकेला, एकरो नमूना आखीर में दिआइल बा।]

स्त्रीलिंग-पुलिंग—(क) पहिले त इहे सवाल उठी कि भोजपुरी में छोट आ कम अच्छर के सब्द 'चरतिआ' बड़ले बा 'त चरत बिआ/चरति बिआ' के का जरूरत। 'बिआ, बाड़न, बा' भोजपुरी का टेंगरी के पावा ह। संपादकजी जवना भोजपुरी गद्य में आपन 'टीपनी' लिखले बानीं, ओकरे में 'होत बा', 'जानत बा', 'मेल खात बा', लिखत बाड़न', 'बतावत बा', 'चलावत बाड़न', 'होखत बा', 'लउकत बा', 'बुझात बा', 'चलत बा', 'जोड़ल जा सकत बा', ओगैरह के बेवहार जे भइल बा ऊ गद्य खातिर बिसेस चिकनावल परयोग मानल ज सकेला, बाकिर भासा में कम अच्छर के सब्दन, चाहे कम सब्दन के परयोग अच्छा मानल जाला। अपना टीपनी का अखीर में संपादकजी 'खेलत बानीं' आ 'खेलतानी' में से कवनो एगो के मनला के जे आगरह कइले बानीं, ओकर पूरती ई कहला से हो सकेला कि कम सब्द वाला छोट 'खेलतानीं' राखल जवूनो ना होई आ भोजपुरी तनी डेगार बढ़ सकी। हिंदी अँगरेजी का मोकाबला में एही से पछुआइल रहतिआ कि अबहीं ऊ कमे सब्दन में बात कह सके लाएक अपना के नइखे बना सकल—एह घरी चलत 'महसूसना' एही फिकिर के नतीजा हऽ, बाकिर भोजपुरी-नियर ई छमता ओकरा में नइखे आइल कि ऊ संगेया के क्रिया ..... के चला लेव जइसे बतिआवल, फफेलिआवल, गरदनिआवल, मुकदमल, केहुनाठल, लति-आवल, खतिआवल, रोसिआइल, ओगैरह। 'गिरति पतई ....उछड़ति बकरी' रम्य रचना में ठीक लागी, गद्य में ना। तबो एगो बात बिचारे लाएक बा। 'गिर गइल' का बदला में 'गिरि गइल' 'धस अइल' का जगहा प 'धसि आइल' गद्यो में आपन एगो खास माने राखत मानल जा सकता— ऊ माने 'हो गइला' (sense of finality) के मानल जाव आ 'गिरि' 'घुसि' 'खाई' 'बइठि' ओगैरह सब्दन के हिगरा दिहल जाव त ई बुझाई कि भोजपुरी भाव चाहे बिचार के अँतरा-अँतरा के खँघरले बिआ। हिंदी में 'डाला' ('मार डाला'/'मारा' का जगहा प) 'पड़ा' ('पेड़ गिर पड़ा'/'पेड़ गिरा, गिरने लग), आ अँगरेजी में 'end up', 'strike out', 'go off' एही 'हो गइला' के 'बोध' करावे लें सें। भोजपुरी के कुछ उदाहरन से बात साफ होई—'आरे, अब लास गिरि गइल त फेन गांव मानो ? भइल घमसान, बूझि जाई कि—' 'का जाने कइसे त खोंढ़ा में घुसि आइल, पूरा मोटक्कड़ रहे महराज !' 'दुलहा कोहना के बइठि गइले कि हम फटफटिआ लेइए के पीढ़ा प ले उठबि'; 'कटहर का कोआ का सङे-सङे ओकर लेंढ़वो भछि गइल अधिरजी ! पेट हऽ कि भनसार ह रे !' 'पर्यंतिस गो पूड़ी पंडीजी दाबि देले रहीं, त पापड़ चलावते पुछलीं—'अपने किहां बीजे का बिच्चे में पापड़ चलेला का जो ?'

कारक अउर ओकर बिभक्ति—'करम के चिन्ह' उहवाँ लागल सुना सकेला जहवाँ ओह सब्द प जोर परत होखे—'किताब के हइसहीं पढ़ल जाला कि पान्ना-पान्ना चेंथा जाउ ?' तृतीया कारक के छठवाँ चिन्ह 'ले' सुनाला—'तोहरा नीयन मउग मरद ले टीकस भेंटाई ? द लोंटिया/नोटिया, हम ले आवतानीं' पंचमीओ में ई 'ले' सुनाला—एकरा में तब दूगो बिभक्ति लाग जाली सें—'प ले' 'में ले': 'प ले' ('छान्ही प ले भतुआ धव्व दे गिरल'), 'लइकाईए प ले इन्हिका के हम चोन्हतानीं', 'छीलल मूंड़ी प ले पानी ढरकि जाला'); 'में ले' ('तिलउवा में ले निकललसि हा का रे, कमे लउकता ?' 'तलहीं अँगना में ले ओकर मेहरुआ निकसलि—'कवन ह रे मरकिआलवना !')

तिङंत : 'जाइबि', 'खाइबि' 'बोलबि' ई सब रूप भोजपुर जिला आ बलिया का भोजपुरी में सुनाला। भोजपुरी-अकादमी-पत्रिका में ई कुल्ह सब्द संपादक-मंडल का भासा में, माने भोजपुरी गद्य में; लिखल जालें सें। एकनी के बेवहार बोलचाल के 'टेप' करेवाला रम्य रचने तक रहे के चाहीं, आ 'पत्रिका' के संपादक-मंडल का एह बात के

www.bhojpurisahityangan.com

एलान क देवे के चाहीं कि पत्रिका के आपन भासा भोजपुर-जिला के हऽ। बाकिर एकर ई माने ना होखे के चाहीं कि भोजपुर-जिला से बहरी के भोजपुरी-क्षेत्र से जवन रचना आवे ओकरा के भोजपुर-जिला वाला भोजपुरी में ढार दिहल जाव। एह से ई हो जाई कि ओह दोसरा क्षेत्र के आपन खास परयोग का ओजह से जवन सवाद चाहे रंग ओहिजा के जिनगी के मिलेला, ऊ ना लेहल-सँचल जा सकी। बनारसी भोजपुरी में लिखल कवनो कहानी में ई बाक दिहल होखे 'का हो रज्जा/राजा, फोकटे में चउवक जमइबा?' त एकरा के भोजपुर-जिला वाला भोजपुरी में अइसे बदलला से ओकर ढेर सवाद आ रंग बगद जाई- 'का हो बाबू/झरेला, मुफुते में पान कचरबऽ?'

अब भोजपुरी खातिर जइसना कोस के जरूरत बा ओकर एगो 'नमूना' दिआता* : जवन कुछ दिआता ओकरा के नमूने मानल जाव : एकरा में बहुत कुछ जोड़ल जा सकता, एकरा में से हटावलो जा सकता; इहो जरूरी नइखे कि अन-मन अइसने ढाँचा प कोस बनो। विदवान लोग का पहिलहीं ले जवन कुछ लउक चुकल बा ओकरा में एह नमूना से कवनो नया बात जोड़े के मिली, ई कहल ठीक ना होई, काहे कि ई छोट मुँह बड़ बात होई। बाकिर अतना कहल जा सकता कि जइसे करिआ रङ देखला प ऊजर रङ इआद पर सकेला ओइसहीं ई नमूना देख के ई बात बुझा सकता कि भोजपुरी के कोस अइसन बनावल जाव कि भोजपुरी में लिखेवाला का ओह से मदत मिलो : कोस बेवहारिक होखो, खाली माने बतावेवाला ना। एह तरह के कोस बनी त भोजपुरी में लिखे वाला का कई गो फएदा होई। अब पहिले नमूना देख लिआव तो फएदा देखल जाई। नमूना में जवन-जवन संकेताच्छर दिआइल बाड़न सं ओकनी, के नमूना का सामने, दहिने ओर, समुझावल बा। (पहिले संकेताच्छारव के आपन-आपन अलगा माने देखि लिहला से नमूना वाला हिस्सा समुझे में असानी होई।)

नमूना

सुघरावल [रु० सुघुरावल, सोघरावल] : क्रि० अ-स०

शा० = हलुके हाथ, अँगुरी, तरहथी ओगरह फेरल :

१. क्रि—अ० : "सुघरवला से तनी (अ)राम मिलता', "जहवाँ नोचनीं बरे, तहवें आस्ते-आस्ते सुघराव, खजुआव मत (नत)'

२. क्रि—स० : "घउवा सुघरवला प अउरी नोचनीं बरता" "गोनतारी वइठि जो, आ गते गते तरवा सुघुराउ"

सं० : घाव—, चोट—, नोचनीं—, खजुलो—

क्रि—वि० : गते-गते, आस्ते-आस्ते, मोलाएमे हाँथे, गँवें-गँवें

वि० : रगरल, दरकचल, चिचोहल, मलवटल

मु० = खोसामद कइल :

१. क्रि—अ० : "सँउसे जिनगी सुघरावते बीतल" "तहरा उनुका टुकरा प जोए के बा. त तूँ जा सुघराव हम काँहे के जाईं ?"

२. क्रि—स० : (खा०) "तरवा सुघरावल' : "सोरहो घरी उन्हुकर तरवा सुघरावताड़, आ तबो आजु ले पाहि ना लागल ?"

संकेताच्छर

उ० = उच्चारण ('स्वराघात' छोटकी खड़ी पाई से बतावल बा)

क० = कहावत

क्रि० अ-स० = क्रिया अकर्मक-सकर्मक

क्रि—अ० = क्रिया अकर्मक

क्रि—वि० = क्रिया विशेषण

क्रि—स० = क्रिया सकर्मक

खा० = खासकर (only in)

गँ० = गँवारू (slang)

ग० = गद्य

चि० = चित्रात्मक (picturesque)

प० = पर्यायवाची

बो० = बोलचाल (colloquial)

बो→ग० = बोलचाल में सुनाए वाला बाकिर 'गद्य' में मान लीहल

---

*एह तरह के एगो भोजपुरी (-परयोग)-कोस लेखक के अपने गाँव (उनवाँस, जिला भोजपुर) के श्रीअवध-बिहारी 'कवि' तेयार कऽ रहल बाड़े : ओह कोस में हिंदी आ अंगरेजीओ सब्दन खातिर भोजपुरी सब्दन आ मुहावरन के एगो 'परिशिष्ट' रही। —लेखक

www.bhojpurisahityangan.com

क्रि-वि०—दिने-रात (राति), चउबीसो घंटा, सोरहो घरी, जिनगी भर, रसे-रसे

र०—(शि० : ग०) खोसामद कइल; (वो→ग) चिलम चढ़ावल, छाल्ही बाटल, जीभ (जोभि) चलावल, झोरा ढोवल, तेल लगावल, गा-बजा के लोहल, सिकहरा प' चढ़ावल; (गं०) चाटल

क०—(एह भाव के कहावत जतना होखी ओतना एहिजा दिआई)

चि०—चमचा, चरनदास, हँ में हँ, हुँकारी पारल, डंडवत कइल

[व्यु०—सहलाना (हि); क्षे०—भोजपुर, पू-उत्तर-प्रदेश

उ०—'सुघ-'रावल

स०—सोहरावल, सोहराइल, सोहरल, सोहरात; सझ रावल

मु० = मुहावरा (idiomatic/figurative)

रु० = रूप (अउर रूपन में एह सब्द के बरतनी)

वि० = विपरीतार्थक सब्द(antonym)

व्यु० = व्युत्पत्ति (derivation)

शा० = शाब्दिक (literal)

शि० = शिष्ट (polished)

सं० = संज्ञा (उपयुक्त)

स० = समान ध्वनि के दोसर सब्द

हि० = हिंदी

क्षे० = क्षेत्र-विशेष

[जवना सब्दन का नीचे डाँड़ी खाँचल बा ओहनी के अपना-अपना टीप (entry) में देखे देवे से मतलब बा।]

मान लीं, हिंदीए में विचार लेखक का मन में उठल आ ओकरा के भोजपुरी में कहे के बा (चाहे ओह लेखक का हिंदी से भोजपुरी में अनुवाद करे के बा) : जवन सब्द मन में बा चाहे जवना के अनुवाद करे के बा ऊ मान लीं होखे—'सहलाना'। एह भाव खातिर ऊ भोजपुरी-परयोग-कोस के परिशिष्ट देखिहें जहवाँ हिंदी (आ अँगरेजीओ) सब्दन के भोजपुरी रूप आ ओकर परयाय दीहल रही : परिशिष्ट में देखी लोग 'सहलाना' देखी, विदेसी लोग rub (gently), smooth, finger—ओगैरह के क्रिया-रूप' (verb) देखी—दूनूँ का भोजपुरी सब्द मिली—'सुघरावल'। अब ऊ लेखक/अनुवादक 'सुघरावल' वाला पन्ना पाछा कोस में उलिटिहें। एहिजा एह भाव ('सहलाना') के 'शाब्दिक' आ 'मुहावरेदार' दूनू तरह के अरथ वाला सब्द, पद, मिलिहें स। सङ्ग-ही-सङ्ग एह भाव वाला मुहावरा, कहाउत ('लोकोक्ति')-ओगैरह भी मिली। 'सुघरावल' क्रिया के अकर्मक आ सकर्मक दूनों रूप में कवना-कवनो संगेया का सङ्ग बेवहार होला, ईहो लउकी त मन में लुकाइल-भुलाइल (चाहे अबहीं तक ले ना-सुझल) संगेयो सूझ जाई। एह क्रिया के अउर जोरगर बनावे खातिर कवन-कवन सटीक 'क्रिया-विशेषण' के बेवहार कइल जा सकेला, ईहो जानल असान होई। 'विपरीतार्थक' सब्दन आ मुहावरन का ओहो लगले भेंटइला से कुछ अउरू नया बात फुरे के गुंजाइस रही। फेन मान लीं ओह लेखक का मन में एगो भाव बा—'खोसामद कइल'। 'परिशिष्ट' में हिंदी के 'खुशामद' आ अँगरेजी के 'flatter', 'wheedle'—ओगैरह से लेखक भोजपुरी-कोस के 'खोसामद' प अइहें, आ एहिजा उनका 'संकेत' मिली—दे० 'सुघरावल', त ऊ एहू 'क्रिया' के देखिहें। एहिजा 'सुघरावल' वाला टीप (entry) में उनका, एह सब्द के मुहावरेदार इस्तमालन में, 'खोसामद' के भाव जाहिर करे वाला कई गो परयाय मिली : ओह भाव के 'चित्रात्मक' (picturesque) ढंग से कइसे रखा सकेला, ईहो ऊ तजवीज सकिहें, आ जवन 'क्रिया' ओह भाव खातिर मिलल बा, ओकरा में एगो चोख 'क्रिया-विशेषण' कवन-कवन लाग सकेला, ईहो उनका खोजल-सँचल मिली। एह तरह का कोस से एगो मोट फएदा त पहिले ईहे होखी कि जे भोजपुरी के साहित्त लिखे के चाहता, ओकरा अनुवाद-साहित्त के 'पुरहर' करे के चाहता, चाहे भोजपुरी में जे कुछ कहे के चाहता, ओकर खातिर एके जगहा मय मसाला मिल जाई, काहे कि हर टीप (entry) में ओकरा अपना मन के बात के सउँसे 'लोक' (complete realm of thought) परतच्छ रही।

[मोहनपुर—पुनाईचक, पटना—२३

www.bhojpurisahityangan.com

नया युग

श्री विष्णु कमल डेका

पात्र

१. रमेसर—एगो नोकरी पेशा के गिरहस्थ;
२. शिवनाथ—रमेसर के मीत
३. निर्मला के माई—रमेसर के मेहरारू
४. निर्मला—जवान उमिर के, रमेसर के बेटी;
५. राजेन्दर—जवान उमरि के एगो इसकोल-मास्टर

मंच वेवस्था—शहरी गिरहस्थ के घर के एगो कोठरी, पाछा के ओर एगो दरवाजा। मंच के बीच में दू-तीन गो कुरसी आ एगो छोटहन टेवुल।

[रमेसर—शिवनाथ के साथे हाँथ में एगो झोला लिहले अपना मेहरारू के पुकारऽताड़े]

रमेसर—वाड़ू हो, ओ निर्मला के माई! सुनऽताड़ू हो ?....

निर्मला के माई—काऽ जी, का हो गइल ?....

(दरवाजा से निकलि के)

रमेसर—(झोला धरावत) हई लऽ। देखत नइखू; के आइल बा ?

निर्मला के माई—अरे! शिवनाथ बाबु! बइठऽ-बइठऽ। आजकाल्ह त गुलर के फूल हो गइल बाड़ऽ। महीना हो गइल, सुनलीं कि लइकवा के बिआह कराके गाँव से आ गइलऽ। मगर एको दिन हमनी के ओर ना झँकलऽ।

(शिवनाथ आ रमेसर बइठऽताड़े।)

शिवनाथ—ना ए भउजी! का कहीं! घर-गिरहस्थी के झमेला से फुरसत ना मिलत रहे।

रमेसर—आजुओ ई कहाँ अइते। इहे कहऽ कि बाजार में भेंटा गइलन त लिअवले अइली हाँ।

निर्मला के माई—घर के सभ केहू नीमन बा नूँ ?

शिवनाथ—सभे ठीक बा।

रमेसर—(अपना मेहरारू के) कुछ पानीवानी के इन्त जाम करबू कि खाली समेचार पुछत रहबू ?

(शिवनाथ से) लइका के बिआह नीके-नीके हो गइल नूँ ?

(निर्मला के माई भीतर चल गइली।)

शिवनाथ—हँ भाई! लइका के त कवनो तरह से कइ दिहलीं, बाकिर लइकिन के फिकिर त लागले बा।

रमेसर—हमरो हरदम निर्मला के बिआह के फिकिरि छवले रहत बा! का करीं, जानते होखबऽ आज-काल्ह के तंगी के हालत, तवनो पर दस हजार से कम पर त केहू बातो नइखे कइल चाहत!

शिवनाथ—लइका के बिआह में पाँच हजार मिलबो कइल त का? लइकिन में त एहू से जादा देवहीं के पड़ी। एकरा आलावा खिआवे-पिआवे आ दुआर के पानी राखे में जवन खरचा होई; तवन त अलगे होई। साँच पूछऽ भइया, त तिलक-दहेज के रेवाज से कवनो ओरि के फायदा नइखे। एक हाँथे लऽ त दोसरा हाँथे दऽ। केहू के अधिके मिल जाता, त का? ओह से केहू अमीर थोड़े होखेला। बिआह में सभ उड़ि जाला। जाने कवना दिमाग से पुरनिआ लोग अइसन दकियानूसी रेवाज गढ़ले, जेकरा कारन हमनीं के आजुओ भोगे के पड़ऽता।

रमेसर—पूजन साह ठीक कइलन! ऊ अपना लइका के तिलक में एको पइसा ना लिहलन। आछर बिआह में ना गहना चढ़वल आ ना बाजा-नाच कइलन। सभे सराहत रहे। कुछ दकियानूस

www.bhojpurisahityangan.com

लोग के शिकायति दू-चार दिन ले सुनल गइल। केहु केकरा फिकिर बा कि का कइलऽ, का ना कइलऽ।

शिवनाथ—(हँसे लागऽताड़े-हा····हा···हा····। का कहऽतानीं जी! रउआ ना बुझली हाँ। आज-काल्ह तिलक के नेग कइल रुपया कम-से कम पनरह दिन पहिलहीं से लेल जात बा, जवना के दोसर केहू ना जाने। भला, पूजन साह जइसन दपड़ी के अदिमी मुफ्त में पावल रुपेया छोड़ि दी! कहल जाला कि हाथी के दाँत दू तरह के होला—एगो खाये के आ एगो देखावे के। इहे हाल बा लोगन के।

रमेसर—अच्छा! त इहो बात बा। बुझात नइखे कबले ई कोढ़ समाज में फइलल रही। लइकिन के बाप-महतारी के जोअल दूभर हो गइल बा। सभे एकरा चलते दुरगत भोग रहल बा, बाकिर केहू एकरा के हटावे खातिर आगे नइखे आवत।

शिवनाथ—सामन्तशाही जवाना के ई कुल्हि रेवाजन में अब पूँजीवादी मोल-तोल होखे लागल बा। एह से फिजुलखर्ची आ आडम्बर अवरू बढ़ि गइल बा। खाली कानून से ई कुल्हि छूत दूर ना होई। जबले लोगन के सामाजिक सुधारवाला चेतना के स्तर ना बढ़ी आ समाज-वेवस्था ना बदली, तबले ई सभ खतम ना होखी। समाज के ढाँचा अइसन बा कि बड़-बड़ पढ़निहार के अकिल गुम हो गइल बा आ पढ़ल-बेपढ़ल सभ बराबर हो गइल बा।

रमेसर—पढ़निहारन के का कहऽताड़ऽ। हऊ रमनरयना के जानऽताड़ऽ? सरवा बी० ए० पास हउवे। बिआह के बेरि पाँच हजार त लेलहीं रहे, ऊपर से गवना के बेरि ससुरारवालन के नचा के छोड़ि देलस। खाये के बेरि तबले कवर ना उठवलस, जबले रेडिओ देवे के ओकर ससुर ना सँकारि लिहले। दहेज-विरोधी सम्मेलन में किरिया खायेवाला लोगन में सभ से पहिले ऊ किरिया खइले रहे कि हम अपना बिआह में दहेज ना लेबि। अब सुनऽतानी जे सँकरला के मोताबिक ससुरार से रेडिओ ना मिलला के कारने रोज अपना मेहरारू से झगरा करऽता आ एक दिन त बाड़ा मार मरले रहल हा।

(अतने में निर्मला के माई पकउड़ी आ पानी के गिलास ला के टेबुल पर धरऽताड़ी)

शिवनाथ—ई कुल्हि का ले अइलू भउजी!

निर्मला के माई—चुपचाप पानी पीअऽ। बहुत दिन पर त आइल बाड़ऽ।

(शिवनाथ आ रमेसर पकउड़ी खात बाड़े आ निर्मला के माई एगो कुरसी पर बैठऽताड़ी।)

शिवनाथ—(घड़ी देखिके) अच्छा त भइआ! बहुत देर हो गइल। अब हम जाइबि।

रमेसर—अतवार के दिन हऽ। का जाइबि-जाइबि कइले बाड़ऽ। बइठऽ।

शिवनाथ—ना भइया। बजारो करे के बा। अबेर हो जाई। (खड़ा हो जात बाड़े) अच्छा त भउजी अब चलऽतानीं।

निर्मला के माई—अबकी अइहऽ त बबन के माई के लले अइहऽ।

शिवनाथ—अच्छा भउजी! लिया ले आइबि।

(निर्मला के माई बरतन उठाके भीतर ले जाताड़ी। रमेसर ओठ में सिगरेट दबा के पाकिट में सलाई टोवत बाड़े)।

रमेसर—निर्मलाऽ! ओ निर्मलाऽऽ!!····

निर्मला के माई—(निकलिके) निर्मला घरे नइखे, का कहऽतानीं?····

(रमेसर सिगरेट हाँथ में ले लेताड़े)।

रमेसर—कहाँ गइल बिआ?····

निर्मला के माई—सिनेमा देखे।

रमेसर—(गुस्सा में।) का कहऽताड़ू! सिनेमा गइल बिआ! लिखे-पढ़े के तेरह-बाइस खाली सिनेमा, नाटक आ फएसन! तू जवन ना करावऽ। ओकरा के बिगाड़ि के माटी कइ देलू।

निर्मला के माई—हम का बिगड़ले बानीं जी! अब हमनीं के जमाना के बात थोड़े बा। आज-काल्ह त

www.bhojpurisahityangan.com

सभ लइको सिनेमा जात बाड़ी सें। ओकर सहेली बिमला आइलि रहलि हा। ओकरे साथे उहो गइलिहा। एह में कवन बेजांइ हो गइल ?

रमेसर—सभे ईनार में कूदे लागी, त का उहो कूदी ? इहे रहनि देखि के ओकर कतहूं रिश्ता नइखे बइठत। अब ऊ बिआहे जोग बेटी भइलि, तनी कड़ाई न रखबू त पाछे पछतइबू।

निर्मला के माई—रिश्ता त ओकर बड़े-बड़े घर में लागत रहे। बाकिर पांच-दस हजार खरच देखिके रउवे नु चुप लगा जात बानीं।

रमेसर—चुप ना रहबू। तुहीं त ओकरा खातिर बी० ए०, एम० ए० पास लइका चाहत बाड़ू। आज काल्ह जादे पढ़ल-लिखल लरिकावाला लोग दस हजार से कम में बातो नइखे करत। निर्मला के पढ़वले ना रहितू, त कबे ओकर बिआह हो गइल रहित। लइकिन के जादे पढ़ावल-लिखावल आज-काल्ह गर के घेघ बन जात बा।

निर्मला के माई—त का तिलक-दहेज का डरे बेटिन के पढ़ावल ना जाउ। जवना-तवना के साथे का बेटी के भठिआय देल जाय। निर्मला खातिर राजेन्दर कवनो खराब लइका होई ?

रमेसर—कवन राजेन्दर ? हऊ महटरवा ! हुंह····। तोहरा तनिको लाज ना लागल हा ई कहे में ? जाति-पांति के त तनी खयाल करऽ।

निर्मला के माई—जाति लेके हम चाटबि का ? निर्मला खातिर राजेन्दर अस पढ़ल-लिखल वर दोसर ना मिली।

रमेसर—हं, त अब समुझलीं। तोहनीं का मने-मने वरो ठीक क लेले बाड़ू। निर्मला के त तूं बिगाड़ि दिहलू, अब कुलोखन्दान के नाक कटवावे पर तूलल बाड़ू। (गुस्सा में) तोहनीं के हम····

निर्मला के माई—हम का करीं। ई कुल्हि राउर निर्मला अपने मने कइले बिआ। हम त बहुत समुझाई लीं, बाकिर ऊ मानत नइखे—जिद धइले बिआ। कहति रहे कि राजेन्दरे से बिआह होई त होई, ना त माहुर खा लेबि।

(रमेसर के दिमाग सन्न हो गइल आ उन्हुक बोलती बन्न हो गइल। कुछ देर के बाद····)

रमेसर—अच्छा त बात इहां ले पहुंचि गइल बा। पहिले ई सभ हमरा से काहे न कहलू ? आज सभ साफ हो जात बा।

(हाथ के घड़ी देखऽताड़े आ सोच में पड़ि के सिगरेट मुंह में लगावत बाड़े। फेरु बोल पड़त बाड़े)—तनीं सलइआ ले अइहऽ। तोहनीं का त खानदान के सत्यानाश कइए देलू।

[निर्मला के माई सलाई भीतर से ले आके देताड़ी आ फेनु भीतर चल जाताड़ी। एही घरी निर्मला आ जात बिया]

रमेसर—(निर्मला के ओरि देखि के) कहां गइल रहलूहा बबुनी ?····

निर्मला—सिनेमा गइल रहलीहां बाबूजी !

रमेसर—केकरा साथे गइल रहलू हा ?

निर्मला—माहटरजी आ बिमला के साथे।

रमेसर—लोग का कहिहें ? का एही खातिर तोहरा के पढ़ावऽतानीं कि खानदान के नाक कटवइबू ? ई कुल्हि बदनामी के बात बा। माहटर का जवरे घूमल-फिरल छोड़ि दऽ।

निर्मला—(मूंड़ी नाचे गाड़ि लेली अउर बोलली)—बाबूजी, हमरा के माफ करबि। रउरा बहुत देर कइ दिहलीं। हमनी का बहुत आगे बढ़ि गइल बानीं जा।····

रमेसर—तोहार दिमाग इहां ले चढ़ि गइल ! निर्लज्ज कहीं के। हमनीं के खानदान में आज ले केहू ना त अपना मरजी से बिआह कइले बा, आ ना जीभ हिलवले बा। का तोहार बाप-मतारी मर गइल बाड़े कि बिआह करे खातिर खुदे लइको पसन्द कइ लिहलू ? का अपना जाति-बिरादरी मे लइका नइखे कि तें एहतरे खानदान के इज्जति माटी में मिलावे पर तूलल बाड़ीस। हम पहिलहीं कहि देतानीं, ई कुल्हि हम बर्दास्त ना करबि।

निर्मला—बाबूजी, बिआह जिनिगी भर के सउदा होला।

www.bhojpurisahityangan.com

एह से लइका-लइकी दूनो के रजामन्दी जरूरी बा। लइकिन के मरजी के बिना कतहीं बिआह दिहल —लइकी के घाठी दे देल बा। लइकी कवनो गरू-माल ना हऽ कि ओकरा बिना रजामन्दिओ के केहू के पगहा थमा दिहल जाय। आज के भारतीय मेहरारू देस के हर छेत्र में आपन अधिकार बना लेले बाड़ी सँ। हम जिन्हिका से बिआह कइल चाहऽतानी, ऊ भलेहीं हमनी के जाति के ना हवन, बाकिर उन्हुकर बिचार-आचार बहुत ऊँच बा। बिआह जाति देखि के ना, बलुक बिचार-आचार, गुन-अवगुन आ लइका-लइकी के मेल देखि के होखे के चाहीं। बाबूजी, हमार रउरा से बिनती बा कि हमरा बारे में रउवा ठीक से सोचि-समुझि लीं। माहटर साहेब थोरहीं देर में रउवा से बातो करे अइहन।

[निर्मला आँख के लोर पोंछत भीतर जाताड़ी]

रमेसर—(मने-मन) आज-काल्ह लइकी दू अच्छर पढ़ि का ले ताड़ी सँ; गेयान बघारे शुरू क दे ताड़ी सँ। सँचहूँ लइकी के पढ़ावलें काल हो गइल।

[रमेसर अपना मने-मन बकत-बकत सिगरेट पिये लागऽताड़े आ अखबार देखे लागत बाड़े।]

(अतने में राजेन्दर आ जात बाड़े।)

राजेन्दर—गोड़ लागऽतानी बाबूजी !

रमेसर—के हऽ ? राजेन्दर ! बइठऽ।

राजेन्दर—(बइठत बाड़े) हम अपने से कुछ बात करे के चाहऽतानी।

रमेसर—का बात हऽ ? कहऽ, जरूर कहऽ।

राजेन्दर—कहे के मतलब ई बा कि.....मतलब.....हम .....निर्मला.....

रमेसर—समुझ गइलीं बबुआ। पूरा समुझ गइलीं। तूँ त पढ़ल-लिखल हउवऽ। कवनो काम सोचि-समुझि के आ अपना हैसियत के तउल के कइल जाला। तबना पर ई त शादी-बिआह के बात हऽ। जीवन-भर के सवाल बा आ जवना में जात-पाँत आ समाज के रीति-रेवाज के बात जोड़ल बा। का तूँ एगो लइकी खातिर आपन कुल-खानदान के मान-मरजादा के भाड़ में झोंक देल चाहऽताड़ऽ।

राजेन्दर—बाबूजी, समाज के रीति-रेवाज आ बिचारधारा समय के साथ-साथ बदलत रहेला। अब जवाना बहुत आगे बढ़ि गइल बा। गेयान-बिगयान के प्रगति के साथे-साथ जात-पाँत के दीवार टूटि रहल बा। जात-पाँत ऊँच-नीच के बिचार अब आगे चले लायक नइखे। ई एगो रूढ़ि हऽ, जवना के तूरल जरूरी बा। हमनी के एगो नया जुग में जनम लिहले बानीं जा, जेमें कवनो भेद-भाव नइखे। सभे अदिमी समान बा। आजु देस में एगो नया संस्कृति के जनम हो रहल बा। पुराना पीढ़ी के दकियानूसी रूढ़ि के कारन देस में बाल-बिवाह तिलक-दहेज निअन कुरीति आ ऊँच-नीच के झगरा चल रहल बा। इहे देखीं ना—पहिले 'अष्ट वर्षा भवेद् गौरी' के दोहाई दे के बाल-बिवाह होत रहे, मगर अब ऊ कहाँ रहि गइल ? हँ। कुछेक परम्परा में अच्छाइओ रह सकेला, बाकिर जब ई खाली बोझ बन जाला, तब अइसन रीति के तूरही के परेला, ना त देस आ जाति के प्रगति ना हो सके।

रमेसर—ठीके कहताड़ऽ बबुआ ! कवनो रेवाज जब बोझ बनि के लोगन के जीअल मुश्किल क देला, त अइसन रेवाज के तूरहीं के परेला। निर्मलो इहे कहऽताड़ी। साचहूँ, जवाना बदलि गइल। ओकरा मोताबिक ना चलला प पछताए के परेला। तोह लोगन के हिम्मत देखि के हमरो हिम्मत अब बढ़ि गइल। लइकन के सुखी बना दिहल बाप-महतारी के धरम होला। जा, सभ ठीके बा।

राजेन्दर—(उठि के रमेसर के गोड़ छू के गोड़ लाग ताड़े। निर्मला आ निर्मला क माई दरवाजा के पाछे से रमेसर आ राजेन्दर के बात सुनत आ बीच-बीच में झाँकत लउकत बाड़ी लोग। राजेन्दर उठि के जाइल चाहऽताड़े अतने में....)

निर्मला के माई—बइठऽ बबुआ, मुँह त मीठा कइले जा।

(परदा गिरऽता)

[दैनिक बाजार पथ, नाहरकटिया, डिब्रूगढ़ (असम)

www.bhojpurisahityangan.com

समीक्षा

बहेलिया के सोनपिंजरा आ फुलसुंघी चिरइयाँ

श्री भृगुनन्दन त्रिपाठी, एम०ए०

'फुलसुंघी' (भोजपुरी उपन्यास)* के पंचवा परिच्छेद में ई चित्र बा—

"एह अन्हार में कहीं आदमी चलेला ! त का ई महेन्दर मिसिर ना, बहेन्दर मिसिर के प्रेत चलल जात रहे ! कवना दीया के रोशनी में उनका राह लउकत रहे ....बेराह के राह ! दरद के दीया उकस गइल रहे....चारो ओर अँजोर....बिसरइहो जनि बालम हमार सुधिया ! झुलफुलाह भइल। गाछ बिरिछ, गाँव-जवार जइसे चद्दर ओढ़ के अगल-बगल में खड़ा हो गइले स। चिरई चह-चह चहके लगले स—बिसरइहो जनि बालम हमार सुधिया !....."

ई हवे महेन्दर मिसिर, उपन्यास में आपन प्रवेश के बेरि। पकड़ी के महान संगीत साधक पं० रामनारायन मिसिर के उभरत तरुन चेला। आगे चलि के 'पुरबी' के दरदीला मरम के करेजन में पेन्हा देवे वाला कलाकार महेन्दर मिसिर। रामरतन साह के बेटी के बरियात में बारह चोप के समियाना में गुलजारी बाई—उर्फ ढेलाबाई महफिल के बहार देखि के लौटत बाड़े एह रात-बिरात में अपना घरे। ढेला बाई के अलपल पुकार 'बिसरइहो जनि बालम हमार सुधिया' से करेजा बिंधवा के रात के अन्हरिया में चँवर लाँघत, पइन पार करत गाँवे चल देत बाड़े। 'ठेस' लागत-लागत रहि जात बा। पइन पार करत 'ढिमिलात-ढिमिलात' रहि जात बाड़े। महेन्दर मिसिर 'झुलफुलाह' में अपना के केने-से-केने पहुँचल पावत बाड़े। पँहुचे के केने पहुँच जात बाड़े गुरुजी के गाँवे—पकड़ी। —महेन्दर मिसिर त गलत जगहा पहुंचिए के सही आ सोभाविक जगह पर पहुँच गइले; बाकिर महेन्दर मिसिर के करेजा में 'उकसल दरद के दीया' कहीं नइखे पँहुचावत। महेन्दर मिसिर आ ढेलाबाई के मरमी प्रणय-कथा कहीं नइखे पँहुचत, कहीं नइखे पहुँचावत। ऊ कथादृष्टि के अभाव के अन्हरिया में ठेस खा के भहरा जात बिया। ढेलाबाई से बनारस के केशर बाई, आ केशर बाई से कलकत्ता के मनोरमा (बाई !) के बीच के 'पइन' पार करत ढिमला-ढिमला जात बिया, अकारथो ना, बलुक बेअरथ हो जात बिया। उपन्यास के इहे मरमकथा रहे, आ मरमे की ई हालत बा। बाकिर छपरा के मोखतार हलुमन्त सहाय के लालकोठी के 'सोनपिंजरा' में पोस मान के रहेवाली फुलसुंघी ढेलाबाइ के किस्सा एनिओ-ओनिओ फैलल बा—एहसे कवनो निरनय देबे-लेबे में अतना फुरती के जरूरत नइखे।

'रूप के रानी आ नाच-गान के महरानी' (आ प्रेम के सौतेली नानी !) 'स्वर्ग से उतरल कवनो अप्सरा के रूप आ झहर-झहर झरत चाँदनी के रंगवाली ढेलाबाई के डेवढ़ी पर प्यार के भीख माँगे 'तन से अधबूढ़; बाकिर मन से जवान रसिक बाबू हलिवन्त सहाय' जब पहुँचलन तब ढेला बाई उनका दिल पर बरछी चलावत कह देली—

"बाबूसाहेब ! फुलसुंघी के जानीले नूँ ? ऊ पिंजड़ा में ना पोसा सके।....रउआ घरे लौट जाईं। उमिर त होइए गइल बा। जा के राम-राम भजीं।"

बाबू साहेब 'ढेला के सीढ़ी से उतरत कहले रहलें—

"ढेला ! फुलसुंघियो के हमरा सोना के पिंजड़ा में पोसाए के पड़ो, काहे कि हमरा जेब में पइसा के गंगाजी बहेली !....ई जान ल कि हलिवन्त सहाय अपना के अजर-अमर मान के धन कमाले आ अपना

*फुलसुंघी (भोजपुरी उपन्यास) : पाण्डेय कपिल : भोजपुरी-संस्थान, २, ईस्ट गार्डिनर रोड, पटना ८००००१।

www.bhojpurisahityangan.com

के अश्विनीकुमार लेखा चिर जवान मान के जिनगी जियेले !"

बाबू साहेब लवटि अइले। लवटि अइले 'लालकोठी'—'सोना के पिंजड़ा' बनावे खातिर, जवना में 'फुलसुंघी' पोसा सको आ एके फुल से अघाइल रहि सको। बाबू साहेब एक दिन बुलकना डोम से अपना 'सोना के पिंजड़ा' में फुलसुंघी के टँगवा ले अइले। बाकिर ऊ 'अजर-अमर' चाहे 'अश्विनीकुमार' ना निकल सकले, फुलसुंघी पिंजरा में रहिओ के एके फुल से अघाइल ना रह सकल। ढेला-बाई के आपन नथिया उतार के चुपे-चुप महेन्दर मिसिर के दे देवे के पड़ल। बाकिर अफीम के बड़का कारोबारी के रूप में 'गोदना-सिमरिया' में अपना मेम के साथे रहे वाला अंगरेज बहादुर रिवेल साहेब के पोसपुत के रूप में उनकर मय सम्पति के वारिस बाबू हलिमन्त सहाय के किस्सा अतने नइखे। ऊ बुलकना डोम से, पं० रामनारायन मिसिर से आउर बहुत लोगन से जुड़ल बा, एनिओ-ओनिओ फैलल बा।

असहीं बुलकनो के किस्सा, रामनारायन मिसिरो के किस्सा—सभ के किस्सा कुछ आउरू बाड़े स। उपन्यास' में ई 'किस्सा' का ह ? एकर 'आवरू' आ 'एनिओ-ओनिओ' के अंश का हवेऽ स ?

किस्सा-कहाउत भा लोककथा आधुनिक अर्थ में 'कहानी' का, उपन्यासो बन सकत बाड़े सँ। आ बड़ा जोरदार आ कसवाला। बाकिर रचना-दृष्टि आ सामरथ होखे तब्बे। कथाकार ओकनी के इस्तेमाल कर लेवे ला। चाहे ऊ अँगरेजी के 'अन्तिम विक्टोरियन' हार्डी होखसु भा हिन्दी के 'नई कहानी' के 'राजा निरबंशिया' कमलेश्वर। लोककथा अपना निसरगे से इकहरिया संवेदना के बाकिर बहुरंगी रूप के होखेली सँ। बाकिर ओकरा भीतर लोक-जीवन से नजदीकी रिश्ता होखला के चलते अतना संभावना होखेली सँ कि अपना तान पर ऊ 'लीरिक' के बेधि आ 'क्लासिक' के बे सिवान के पसार फैला सकेले। नजर चाहीं, सामरथ चाहीं। कवनो लोककथा के उपन्यास बने खातिर कथाकार के कथा बने के परी पहिले, जवना खातिर ओकर कथा-दृष्टि में ओकरा नधाए आ गँथाए के परी। कथे के रीढ़ आ ठठरी पर ऊ उपन्यास बन सकेले, जवना में चरित्र होई—शील होई, व्यक्ति होई जाति आ समाज होई, परिवेश होई—एगो जीअत-जागत दुनिया होई—जवन पाठक के अकेला में बड़ा आपन लागी।

'फुलसुंघी' में भोजपुर के अंचल में फैलल लोककथा में आइल पात्रन के उठावल गइल बा, 'बाकिर एह चरित्रन के कवनो प्रामाणिक ब्योरा सामने नइखे''—एकर एहसास बा। एकरो जानकारी बा कि "एह लोग के किस्सा किम्वदन्तियन से भरल बा' एह से एकनी से "सह पा के एह उपन्यास के कथावस्तु कल्पना से खड़ा कइल गइल बा।" "बाकिर एह उपन्यास में एगो काल-विशेष के, क्षेत्रविशेष के आ समाज-विशेष के जवन तस्वीर उरेहल गइल बा, ऊ जरूर सही बा !"—फुल-सुंघी' का बारे में लेखक के ई आत्मकथ्य हऽ। एकरा से साफ बुझात बा कि किम्वदन्तियन से भरल किस्सा वाला चरित्रन के असल आ ठीक-ठीक बेदरा ना मिलला के कारन लेखक के अपना कल्पना से कथा गढ़े के परल बा। एह आत्मकथ से लेखक के इतिहास के आग्रहो फूटत बा, तबहीं नु ऊ किम्वदन्तियन के टेरत बाड़े। तबहीं नु तीन 'विशेष' के तसवीर उरेहे के दावा करत बाड़े! असल में एह उपन्यास के पात्र ऐतिहासिक हवे सँऽ; बाकिर किम्वदन्तियन से भरल किस्सा वाली लोककथा के पात्र हो गइला के कारन लेखक ओकनी के कल्पना से फेरु 'ऐतिहासिक' बनावत बा ! 'ऐतिहासिक कल्पना' से अपना उपन्यास के गढ़ला के बावजूद लेखक ओकरा के 'ऐतिहासिक उपन्यास' ना माने के जवन विनम्रता देखावत-बाड़े-संकट एकरा से आ जाता। एह विनम्रता के का अरथ बा ? एकरा के बेसकिमती खान्दानी ओढ़नी लेखा ओढ़ि के लेखक अपना 'सोनपिंजरा'—उपन्यास में पाठक के ढुके के पहिले 'फुलसुंघी का बारे में, जोर-जोर से आग्रह के साथे का बतावत बाड़े ? उपन्यास के (आ पाठक के बीचे बेजरूरत के ओकील बन के ओढ़नी ओढ़ले कवन राजनीति आ कवना चीज के बयपार करत बाड़े ?

बात असल में ई बा कि, जइसन कि ऊपर कह दिहल बा, ई उपान्यास अपना हाजिरी में इहे बता पावत बा कि लेखक के कथा-सिरजन के जस से पियासल मनोरथ आ भोजपुर जनपद के उत्तरी अंचल में फैलल लोककथा

www.bhojpurisahityangan.com

(किस्सा-कहानियन से भरल) के बीचे टक्कर वा—द्वन्द्व वा। लेखक, लोककथा के पात्र हो गइल ऐतिहासिक पात्रन के 'प्रामाणिकता' के ध्यान राखत 'कथा-वस्तु' गढ़े के; अवरू देश-काल-समाज के ऐतिहासिक प्रामाणिकता से भरल उपन्यास रचे के मनोरथ के साथे 'किस्सा-किम्वदन्तियन' से भरल लोककथा से द्वन्द्व बेसाहि के किस्सा के हटा के फेनु किस्से गढ़त रहि जात बाड़; बाकिर लोककथा के तूरि के उपन्यास नइखन रचि पावत।

'फुलसुंघी' में कथो नइखे, उपन्यास के बात नइखे उठत। खाली किस्सा बाड़े सें। पात्रन के अधीन मे अँटकावल किस्सा हालाँकि एह किस्सन से एगो कथा बनत-जइसन बुझा सकेले, बाकिर बन नइखे सकल। एगो कथा उपन्यास रचना खातिर खाली एगो सामग्री हऽ। एह कथा के रचना खातिर एगो अन्तर्योजना चाहीं, संवेदन दृष्टि चाहीं। अइसन कवनो 'चीज' के एकदम्मे अभाव बा एह रचना में। एगो बड़बोला अभाव। बिना कथा के परिवेश ना खाड़ा हो सके। कथा परिवेश में होले। परिवेश कथा के प्रामाणिक आ पुष्ट करेला। उहे फेर अपना आप के अतिक्रमण करके अर्थवान होखे के कथा के मोको देबेला जवना में पात्र-चरित्र बनेले सें आ आपन जीअत-जागत-रोअत हँसत उपस्थिति से रचना के मानवीय अरथ से भर-भर देबेले सें। बिना कथा के चरित्रो के सिरजन संभव नइखे। एह रचना में खाली पात्र बाड़े सें। एह नजर से देखीं त अभिव्यक्ति आ आचार के अनेकन बेतुका मुद्रन में ढेला, रिबेल, हलिमन्त, महेन्दर के अनेकन पोज में खाली फोटो छितरा दिहल गइल बा। एक पात्र के एक फोटो से दुसरका फोटो के बीच के जोड़ेवाला तन्तुए गायब बा। इहे कारन बा कि एक पात्र के सभ फोटन से कवनो एगो प्रतिमा नइखे खाड़ हो पावत। बुलकना डोम के रचना में भागीदारी बहुते महमूली बा। ओकरो ई नसीब नइखे कि व्यक्तित्वे के कवनो अइसन तितकी चमको ओकरा में, जवना से ऊ एगो जियत-जागत पात्र लागि सको।

'फुलसुंघी का बारे में' लेखक के आत्मकथ पढ़ते कुछ सवाल दिक करे लागतारे सें। पहिलका सवाल लोककथा आ आधुनिक कथा के आपसी सृजनात्मक संबंध के बारे में लेखक के धारणा से जुड़ल। दुसरका सवाल उपन्यासकर्म आ ओकरा में कथा के नियोजन के प्रकृति-रंग-रूप के बारे में लेखक के धारना से जुड़ल। तिसरका सवाल ई कि उपन्यास चाहे कथा में कल्पना आ ओकर कृत्य के लेखक का समझेलन। बात ठीक बा कि समीक्षक के मतलब खाली अतने से चाहीं कि कृति का बिया? कइसन बिया? काहे बिया? बाकिर जब अइसन कृति अपराध करेके चश्मदीद के नेमचुस देखा के फुसलावे लागो त चश्मदीद 'मर्यादित प्रतीकार' खातिर आवरुओ सवाल लीक से हटि के उठा सकेला। ओकरा उठावे के चाहीं। समीक्षक साहित्य में चश्मदीदे हऽ। ई रचना अपराध कइले बिया। लोक-हृदय के कंठ में सैकड़न बरिस से घुलत-मिलत ढेलाबाई, महेन्दर मिसिर हलिवन्त आ रिबेल साहेब के मार्मिक लोककथा के लेखक ढेलाबाई लेखा 'उठवा' के ई कृति के 'लालकोठी' में बइठा देले बाड़े। अइसन लोककथा कामधेनु आ कल्पबिरिछ लेखा लोकजीवन आ संसकिरतो के दूधोपूतो फल देले। ढेला चलवा देवे के जोवन आ जोम राखेवाली, उठान पर चढ़ल जिला-हिलावन लोककथा के अइसे डोम से रात-बिरात 'टँगवा' के साहित्य के सोनपिंजरा (कृति) में पराइविट महफिल लगावे के सामन्ती मनोबिरती खुद लेखके में बा। आ जइसे हलिवन्त सहाय के कहानी बिना अरथ के बुद्बुदा के रहि जात बिया, ओसहीं सँउसे कृति बिना कवनो अरथ-अभिप्राय के बुद्बुदा उठा के रहि जात बिया।

ई साहित्यिक अपराध बा। अपराध एह से कि 'रेणु-राग' में रचना के छानल आ काढ़ल जाये के परयास के साथे लेखक शुरू होता, आ सभ उपचार ओही आसक्ति के साथे ठान-ठान के बिछला जात बा। कथा आ ओकर उपस्थापन, घटना आ पात्र-योजना, परिवेश बरनन आ बीच-बीच में लोकगीतन के खरी-भूँसी के चासनी के साथे पेटाढ़ी के कूटी-अस भासावाली शैली आ शब्द-भंडार में पाठक के आगे 'गवत गोत दिहल गइल बा। कृति के उठा के छान देला प भोजपुरी पाठक समाज के एकदम जानबरे समुझे के लेखकीय दंभ नीचे बइठल मिली।

आदिम आ अविकसित भोजपुरी समाज नइखे, लेखके

www.bhojpurisahityangan.com

के साहित्यिक काल धारना (इतिहास बोध) कोठदंत्ता भा दूधदंत्ता बा। एगो कलारूप में उपन्यास के जनम पूंजीवाद के पैदाइश के साथे सैकड़न बरिस पहिले भइल, त कवनो जरूरी नइखे कि विकासशील भोजपुरी के उपन्यास विधा ओहिजे से आ ओसहीं शुरू होखो— एगो अटपटाह कथारूप में! जबकि आज दोसर भसन आ साहित्यन में युगजीवन बदल गइला के कारन विकास के ई दौर में उपन्यास विधा चेतना आ प्रकृति में बदलाहट भइला के कारन अपना 'प्रकृत रूप' के लांघ के अभी बिरम नइखे सकल। भोजपुरी, अपना माई के छाती से सटकल पटरू अस दिक-काल आ चेतना के मार्मिक साहित्य हऽ। ऊ जुगजीवन से एकदम अइसन कटल होखे के प्रमान अपना सृजनशीलता आ कला-कर्म में ना दी, कि अइसन प्रागैतिहासिक सवाद के अटपटाह उपन्यास बीसवीं सदी के एह अन्तिम चरन में समाज से अतिरिक्त ऐतिहासिक सहानुभूति के खुलेआम सउदा कर सको।

कइ-गो किस्सन के आपसी गैपन के भरे में कुछ घटनन, पात्रन, परिस्थितियन के अनुमान आ खाली कथन कर देबे से अवरु ओहा बीच किस्सन के तनी-मनी एने-ओने मोड़ दिहला से 'कथावस्तु' खाड़ा ना हो जाले। ओकरा खातिर चेतन दृष्टि वाली कल्पना चाहीं, जवना में मूल्यन के समाहार कर लेवे, मूल्यन के कमा लेवे के पात्रता आ अरज होखो। कथावस्तु त हमेशा एगो बरतन के काम करेले, जवना में ओठ तकले छलकत-धड़कत जिनगी लेले कला भरल होखे।

'फुलसुंघी का बारे में' लेखक के कथन में साँच अतने बा कि ऊ 'कथेवस्तु' गढ़े में अन्त तक लागल रहि जात बाड़े, आ ई भरम के साथे कि ऊ खड़ा करत चलि आइल बाड़े! बाकिर अफसोस कि कथोवस्तु नइखे खाड़ हो पावत! जवन खाड़ होता, ओकरा में ऊ 'अवधान मुद्रा', ऊ 'संवेदनात्मक आग्रही तनाव' आ ऊ 'सम्रद्धता' लउकते नइखे, जवन सच्चा उपन्यास के लच्छन हऽ। एह उपन्यास के 'कथावस्तु' के कथ का बा? अरथ दरसन का बा? मोटिभ का बा?—सरकस के मेम लेखा अंग-अंग टूटल, ओझाजी के ढील फरकवांसी के बोझा लेखा बेसहूर-सम्हार के ई ढिलाई से महटिआवलो तबे जा सकत रहे, जबकि एह में जबाना के चित्र उरेह दिहल रहित, जइसन कि दंभपूर्ण दावा कइल गइल बा—

"बाकिर एह उपन्यास में एगो काल विशेष के, क्षेत्र-विशेष के आ समाज विशेष के जवन तस्वीर उरेहल गइल बा, ऊ जरूर सही बा।"

नाराबाजी से गरमा उठल ई दावा हऽ आंचलिक उपन्याससन के। 'फुलसुंघी' खातिर एकर जोगाड़ करे के बेरि लेखक के निर्मोही नजर से खुद के जांच-तौल लेवे के चाहत रहे। नाहीं त अँखफोरो पाठक पूछि घलिहें सँ कि एह उपन्यास में 'कालविशेष' के 'तस्वीर' कहाँ उरेहल बा?— लेखक के मुँहें सिपाही-विद्रोह, ईस्ट इंडिया कम्पनी के उल्लेख आ बनारस में ओह जमाना में संतोषी माता के मंदिर के होखला में कि अशिक्षित समाज के ओह जबाना में कायथ लोग के जात के आधार पर बेपढ़ले मुंशीगीरी मिल जाये में? 'कालविशेष' कहाँ बा? उत्तरबिहार में अंगरेजन के अफीम के खुला कारबार में कि नाइ से नदियन के राहता से सिंगापुर-मलाया तकले अफीम के बयपार में? हलिवन्त सहाय के छपरा कचहरी के मोख्तारी में कि महेन्दर मिसिर के नोट के छपाई में? 'छेत्रविशेष' के तस्वीर का रिवेलगंज, मांझी गाँवन के उल्लेख में बा कि छपरा के किनारे बहत सरजू के धार देखावे में? छपरा के देहातन में रण्डिन के महफिल लगवावे में बा? कि महेन्दर मिसिर के मुँह से 'पूरबी' के आलाप टनवावे में? बनारस के दालमण्डी के भितरिया बहार के चिखार मे बा? कहाँ बा छेत्र के तस्वीर? आ 'समाजविशेष' पाँच-सात गो व्यक्तिगत किस्सा ओढ़ले पात्रन के जुटान में बा कि नैतिकता के रंग-पानी चढ़ावल ई सभ पात्रन के फांफड़ आन-बान के सामंती मनसोखई देखावे खातिर कोठी, रंडी, शराब, संगीत से सजल वासना से झँवराइल महफिल के बहार में बा?

दुइ-चार गो ऐतिहासिक तथ्यन के सही-गलत हाजिरी दिवा देला से तीनो 'विशेष' के तस्वीर ना उरेहा सकत रहे। मयतथ्यन के, इतिहास के मरम आवे के चाहीं, सत्य आवे के चाहीं, भावचेतन सत्य; जवन कि परिवेश आ पात्रन के आपसी संबंधन में डँकरत रहो—ओहि जबाना के भासा-भंगी में। दिक, काल आ चेतना दर्शन-

www.bhojpurisahityangan.com

शास्त्र के तत्त्वचिंतन के आधार विषय हो सकेले सें। साहित्य में एकनी के अलगा-अलगा खिंवड़ी ना रिन्हा सके। इहे ना, एकनी के मनमाना जुटान आ मन मोताबिक घोरमाठा ना तइयार कइल जा सके; तब त आवरू, जबकि पिछला इतिहास के बात होखो जइसन 'फुलसुंघी' में बा। अइसे साहित्य वर्तमानो में इतिहास के संगे ढोंढ़ी के नार से जुड़ल रहेला—साहित्य के सत्य इतिहास आ संसकिरती के सत्य हऽ—ओकरा में मनुष्य आ ओकर संभावना के सत्य हऽ। लेखक के तीनू 'विशेष' के समागम इतिहास के गवाही में मइल चाहत रहे। तबहीं संसकिरती के निनाद आ छवि साँस लेत आ छोड़त सछात परतच्छ हो जाइत। 'कालविशेष' आ 'क्षेत्रविशेष' के 'समाजविशेष' में बिम्बित आ ओकरा से फेरु अपने बिम्बित होत लउके के चाहीं—जहाँ कवनो 'कथावस्तु' होखबे ना करे तहाँ चरित्र के बात कइसे उठो? परिवेश के बात कइसे उठी?

द्वारा - आर० के० सिंह, हनुमान नगर,
न्यूमुनाई चक, पटना—२३

अमर एगो बा परान

श्रीलालमुनि 'निरमोही'

जब मन के दुपहरिया से
निकलल किरिन
चमचम चमकत
धानी के डोरन नियन
अगराइल
अंग मरोरत
लप लप लपकावत
फुह्, फुह्, फुफकारत नागिन नियन
त टूट गइल बन्हन
जिनिगी के
जइसे टूट जाला
बांध नदी के
पाके तरार धार
गूंज गइल सामगान
देखि हुलसल हिया गुजरिया के;
जइसे लहर जाला मन
हरियर,
लह लह बसंत के
बोली सुन कोइलिया के।
रुक गइल सिरिस्टी
तीन पवन प
अ' बिखर गइल मुसकान
लह-लह भोर के कोर से।
बहल बयार—सर-सर
मँह-मँह सुगंध ले
अरू बढ़े लागल तन सामा के
जइसे बढ़ेला—
धान अँजोरिया के
रसे-रसे
परेम जतावत चकोर से
फइल गइल तीनू भुवन में
लेके हंगामा तिनू गुन के
मदन नियन बदन तोहार
भर-भर अँचरा में
मीठ-मीठ सपना
जइसे फइलेला लहर
समुन्दर के छाती प
कल-कल छल-छल छलकत
बनत जीव ब्रह्म के कलपना।
मिलल सहारा कविन के
लिखे लगलन इतिहास भविस के
सब कुछ माटी बाटे
अमर एगो बा परान।

बिहार राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटना—४

www.bhojpurisahityangan.com

चलऽ तनी गइयाँ के ओर

श्रीवीरेन्द्रकुमार मिश्र 'अभय'

तोहरो समइया शहरिया में बितताड़े गइयाँ में बितताड़े भोर,
हमरा ई साध बाटे तोह के घुमाइ दीहीं चलऽ तनी गइयाँ के ओर।

इहे गाँव-गँवई हऽ हमरो बा बास जहाँ टूटहा बा माटी के मकान,
घरवा में भरल बाटे गहुँमा आ जउआ हो, जाँत में पिसाला रे पिसान।
हमनींका कलवा के हलवा ना जानीं कबो, घरे-घरे बाल्टी आ डोर
हमरा ई साध बाटे तोह के घुमाय दीहीं...

हमनींका उठीं मिनुसरवा के होते-होते गाइलें परतिया के गान,
माल अउरी गोरुआ के नदवा पर बान्हि दीलें करींलाँ सफइया बथान,
गँछिया प चह-चह चहके चिरइयाँ उहाँ, मुरुगा बोलेला भइल भोर,
हमरा ई साध बाटे तोह के घुमाय दीहीं....

नन्हका लरिकवा मतरिया का साथे-साथे उठे जब होखेला बिहान
भूख लागल हमरा बा माई देदे बसिया रे, रोये-धोये करे कूद-फान
एक टुकी रोटी लागि कुकुर बइठ जाला, दुअरा के रहिया अगोर,
हमरा ई साध बाटे तोह के घुमाय दीहीं....

खेतवा में दिन-दिन भर हमनींका खटीं मीत ! चाहे होखे गरमी आ जाड़,
छपर-छपर पनियाँ में हमनीं का कोड़ी लाँ सें खेतवा के आर आ पगार
कबई में हमनींका करीले रोपनियाँ नुँ बियवा उखाड़ी ताबड़-तोर, ।
हमरा ई साध बाते तोह के घुमाय दीहीं...

निंदिया से हमनीं के आँखि जब भरमले, लीले सें चटइया उभार
बोरा अउरी लेउआ के ओह प बिछाइलें सें, पोंढ़वे हऽ तकिया हमार ।
जड़वा के हमनीं का मुठिए में बान्ह लीलें हाँथ-गोड़-मुड़िया बटोर
हमरा ई साध बाटे तोह के घुमाय दीहीं....

साँझहीं बहुरिया चुल्हनियाँ में ढूक जाली, चुल्ही में धराइ देली आँच
खूबे नुँ परेमवा से रोटिया बनाइ लेली, नाहीं जरे नाहीं रहे काँच ।
उहाँ नइखे बिजुरी के चकमक बउलवा रे, ढिबरी से होखेला अंजोर
हमरा ई साध बाटे तोह के घुमाय दीहीं....

कल-करखनवाँ के खट-खट-फट-फट, हमनीं का कबो ना सुनाय
बस-ट्रक-टेकसी-टराम नइखे उहवाँ रे, जवना से मन अकुताय ।
हमनींके निंदिया हराम कबो होखे नाहीं, भोर ले सुतीलें बेंचि घोड़,
हमरा ई साध बाटे तोह के घुमाय दीहीं....

www.bhojpurisahityangan.com

धनवाँ के बलिया हिलेला जब खेतवा में, चलेला पुरुबवा बयार
देखे में नीमन लागे सँउसे बघारि तब, खुशी से नाचेला मन-मोर।
मटर के छेमियाँ करेला जब सतरन में, बने तब घुघुनी बेजोड़।
हमरा ई साध बाटे तोह के घुमाय दीहीं ...

बूँटवा के कचरी के होरहा भुंजाला खूबे, नून संगे लागे चटकार
सतुआ प चटकेले चटनी इमिलिया के, मिरचा के ललका अँचार।
हलुओ से बढ़ि-चढ़ि अलुआ सवाद देला खेतवा से लाइलें सें फोड़
हमरा ई साध बाटे तोह के घुमाय दीहीं ...

कल्याण-विभाग
सहायक कल्याण-पदाधिकारी,
राँची

गाँव के राति

श्रीआदित्यप्रसाद सिन्हा

साँझ के किरिनियाँ पछिमवा में ढरकि गइल
लाल-लाल भइल आसमान।
चिरइन के खोंतवा उजागर भइल अब
खेतवा से लवटल किसान।

बछवा रँभाताटे खुँटवा प बान्हल रे
घंटिया के सुनि-सुनि तान
जँतवा प गिर गइल गोरी के पसेनवा कि
गेहुँमा से भइले पिसान।

रतिया के नकिया में चान के नथियवा कि
बुनुकीन से भरल बा लिलार
चान के चननियाँ से उजरे मँड़िलिया रे
पुरुबी बधरिया के धान।

मंदिर में होखे लागल शिव के अरतिया कि
महजीद में उठऽता अजान
रतिया अँजोरिया के सरिया सुखावतिया
पुरुवे-पछिमवाँ ले तान।

सुनि चुहचुहिया के बोलिया फाटल पह
धरती प उतरल बिहान
नथिया उतर गइले, बुनकी मिटिक गइले
मेंटल राति-रानी के गुमान।

—ससना, पो० सिसई, वाया-
सहाजितपुर (सारन)

www.bhojpurisahityangan.com

हमार संसार

श्रीमाधव पाण्डेय 'निर्मल'

दूर छुटले बहार के कगार मीतवा
झनझनात नाहीं हियरा-सितार मीतवा।

अब दुअरा प पीपरा के छाँह कहवाँ
अब लचकत पतइन के डाँड़ कहवाँ,
सोन्ह मटिया के बास के दुलार मीतवा।

लककत नाहीं बा चुहु चुहु धान कतहूँ
हर फुनुगी प मोतिया के शान कतहूँ
रस झरना झरत कल्हुआड़ मीतवा।

रोपनी के गीत सिरिजन गान का भइल,
रातरनियाँ के नयना के बान का भइल,
फूल तिसियन के नील छितनार मीतवा।

फागुन के फूल रस-गंध में समा गइल,
होरी मचल कि तन-मन टनमना गइल,
कन-कन मन-प्रान में बहार मीतवा।

अब बबुआ सुनाय ना सुनाय भइया,
पगुरात नाद प ना लउकत गइया,
कइल दुलम अब भइया के प्यार मीतवा।

आज साँस गिनि-गिनि जी रहल मनवाँ,
रोज मिठका जहर पी रहल मनवाँ,
डेग-डेग हार-हार बार-बार मीतवा।

लछिमी गर पास त पचास लोग बा,
पाँव चूमे पासे में पचास भोग बा,
बा कपार प परेतवा सवार मीतवा।

खुशिया-बहार प्यार आ दुलार खो गइल,
मन के सितार-तार के सिंगार सो दइल,
खाइके समय के चटकन के मार मीतवा।

सम खोइ-खोइ चटनी तनिक पवलीं,
भोर चाटि-चाटि साँझ के उपास भइलीं,
बिजुली के रोशनी में बा अन्हार मीतवा।

दोबवा में उजबुजाइ के चँपा गइल साँस;
गीत के बहार लेइ जाईं जेकरा पास,
ऊ महान, हम निपटे गँवार मीतवा।

लाल असली सपूत छिछियात फिरले,
जे कपूत ऊ त मोंछ मुसुकात फिरले;
अस नन्हो गो हमार संसार मीतवा
दूर छूटले बहार के कगार मीतवा।

टेल्को, जमशेदपुर

गीत

श्रीरामेश्वरप्रसाद सिनहा

कतहूँ ना पवलीं किनरवा, भँवरवा अनधा-अनधा बा।

जिनिगी के लोरवा पिया के दरबिया बटोरि लिहलीं
इचिको ना पवलीं दुलरवा, अँचरवा अनधा-अनधा बा।

किलफित में परले परनवाँ, जीअलको मोहाल बड़ुए
एको बून अमरित ना धरवा, जहरवा अनधा-अनधा बा।

सवना-भदउवा फफाइल, अमवसा ठठाइ हँसेला
अरउ ताटे मन के बियरवा, अन्हरवा अनधा-अनधा बा।

एकहीं त बा दरपनवा आ रूपवा अनेकन गो
एकहीं बा सुगना पियरवा, पिंजड़वा अनधा-अनधा बा।

केहू करे जप-तप धेयनवाँ, सनेहिया लुटावेला केहू
जाए के बा एकहीं ठहरवा, डहरवा अनधा-अनधा बा।

—नेहरू स्मारक उच्च विद्यालय, बक्सर

www.bhojpurisahityangan.com

हमरो नगर तनीं आ जइतऽ बदरू

श्रीमनज

कबहूँ डहरिया भुला जइतऽ बदरू ।
हमरो नगर तनीं आ जाइतऽ बदरू ।

हलरत धनवाँ के लागल बा टोना
सँवनी के अँचरा से झरि गइले सोना
मकई का मँगिया के घमवा निहारे
पपिऊ के डीठिया लोरा जइतऽ बदरू ।

चरी के डरी अँईठि-गइली पाती
सनई का खेतवा में रहलि अब बाती
चियरल मुँगिया के अँगिया कुसुम्मी
हाल देखि तूँहूँ लोरा जइतऽ बदरू ।

बाटे समुन्दर में सीपी पियासल ।
सोरही पिड़ियवा पिया बिन उदासल
बिरहा के रोगे पियर भइली रहरी
अपनी चदरिया ओढ़ा जइतऽ बदरू ।

उखिया के उतरल सबुज रंग चुनरी
खेतवा में झखऽताड़ी लेइ सून गगरी ।
ओठवन लगल रस सबके पियइती —
तनीं पुरवइया डोला जइतऽ बदरू ।

धरती धरम से जोगावे उरेहिया
बँहियाँ में तोहरी गोदावे सनेहिया ।
संसिया टँगाइल बा निरखत बटिया
अबहूँ सुरतिया देखा जइतऽ बदरू ॥

—दिलदार नगर, गाजीपुर

✻

गजल

श्रीअभयनाथ तिवारी

(१)

ई गीत मोहब्बत के, गाईं त कहाँ गाईं
झूठे ई कसम-किरिया, खाईं त कहाँ खाईं ।

माटी के ई घर आपन बरसात के पहरा में
फिर गाँव के सावन हो, जाईं त कहाँ जाई ।

ई भार के पुरवा रंग ऊपर से मधुर मौसम,
तोहरे अइसन संगी, पाईं त कहाँ पाईं ।

तोहरे गइले, आपन सनमान घटल अइसन
ई काँट के छानी हो, छाईं त कहाँ छाईं ।

एक बात ना कहि पउलीं ई कउन भइल जादू
ऊ बात कहै खातिर आईं त कहाँ आईं ।

(२)

रचित रूप अउरो निखर जाये देतऽ ।
चनरमा चइत के उतर जाये देतऽ ।

फुलाइल बगइचा त फर जाये देतऽ ।
बान्हल केस खुलि के बिखर जाये देतऽ ।

कहाँ हम कहीलीं कि भर राति बइठऽ
घरी-दुइ-घरी बस गुजर जाये देतऽ ।

अबहियें न अइलऽ हऽ, का अँउजिअइलऽ
ई अधियें गगरिया त भर जाये देतऽ ।

जो जाये के बा त रचिक अउर बइठऽ
मउत आइ जाये दऽ मर जाये देतऽ ।

—से० हि० स्कूल, कमच्छा, वाराणसी

●

www.bhojpurisahityangan.com

जबून बेटा

श्रीरामवृक्ष राय 'विधुर'

सुरुज के उगते-उगत समारोह प्रारम्भ हो गइल—हस्तिनापुर राजभवन का निगिचे। नया बनल सभा-भवन देखनिहारन आ बहादुरन से ठसा-ठस भरल रहे।

पारा-पारी कई गो राजकुमार भवन का बीचो-बीच बनल रंगमंच पर अइलन। भीष्म पितामह, द्रोण अउरी अपना-अपना गुरुजनन के चरन छू के किशोर लोग आपन-आपन शस्त्र-कौशल देखवलन। कुमारन का रूप भा उन्हुका उमिरि में कवनो समानता ना रहे, बाकिर उन्हुका करतब-कौशल में कमो-बेश बराबरी मालूम होत रहे। देखनिहार रह-रह के खुसी में थपरी बजावे लागसु। वाह-वाह का अवाज से सभाभवन गूँजत रहे।

द्रोणाचार्य के प्रिय शिष्य अर्जुन का आवते सभत्तर सन्नाटा छा गइल। लोग साँस टँगले एक टक ओनिए देखे लागल। अर्जुन माँथ नवा के गुरुजनन के आसिरबाद लिहलन आ पूरा बिसवास का साथे अपना शस्त्र-विद्या के चमत्कार देखावे लगलन। सभा-भवन खुसी के मारे बीर अर्जुन के जयकार से गूँजे लागल। अन्त में एक मत से अर्जुन बान-का परीच्छा में सभसे बड़ मानि लिहल गइलन। एही बीच में एगो गम्भीर अवाज आइल—'ऊ जबन गुन देखा गइलन, हमहूँ देखा सकीलाँ। हमरो के मोका मिले के चाही।'

कई हजार आँखिन का संगे द्रोणाचार्य आ भीष्म पितामहो के आँखि ओनिए घूमि गइल। रंगमंच का अगवास के निगिचे साधारन कपड़ा में लिपटल एगो सुघर जवान खड़ा रहे। ओकरा मुँह पर गजब के पानी रहे आ हाँथ में रहे धनुष। बाकिर राजा-महराजा लोगन के चमक-दमक के बीच ओके देखि के अइसन जनात रहे, जइसे जवाहरात के बीच में एगो शालिग्राम पत्थल आ गइल होखे।

'भला ई अर्जुन अइसन राजकुमार का बराबरी करे खातिर खड़ा हो रहल बा।' ओकरा के देखि के राज पुरुसन का ओठ पर व्यंग के हँसी फूँटि परल। सभा-भवन में हल्ला मचि गइल। सभका आँखिन में एह जुवक का प्रति उपहास के झलक रहे। ओके सभा भवन से निकाल देबे के अवाज आवे लागल।

दुर्योधन ई अन्याय ना सहि सकलन। ओही घरी मंच पर आके गम्भीर बोली में बोललन—'राकप का एह परीच्छा में ई भेद-नीति नीक नइखे लागत। एह जुवक के आपन करतब देखावे के जरूर मोका मिले के चाहीं।'

'का ई कुन्ती के बालक हऽ? कवना बंस में ई जनमल बा?'— पांडवन का ओर से एह तरह के अपमान-जनक बात सुनि के दुर्योधन के मुँह किरोध से लाल हो गइल। रंगमंच का अगवासा-निगिचे थथमल-ठगाइल ठाढ़ ऊ नवछेंटिहा आपन माथा झुका लिहलस।

पांडवन का मुँह पर उपहास के भावना रहे। सभा-भवन में फेनु हल्ला मचहींवाला रहे कि दुर्योधन अपना के सम्हारि के उठ खड़ा हो गइलन। ऊ ढाल बनि के एह अनजान छँवड़ के रच्छा करत बोललन—'कुल-सील के ई सवाल का बेकार नइखे? शस्त्र-विद्या में जे निपुन बा, उहे सच्चा छत्री हऽ। ई रंगमंच एकर निरने करी। हमार ई निहोरा बा कि कर्णो के धनुष चलावे के मोका दिहल जाय।'

पांडवन का ओर से केहू बोलल,—'महराज दुर्योधन ठीक कहत बानी। कवनो आपत्ति नइखे। एहू जुवक के अवसर दिहल जाय, तनीं देखलो जाय; बाँकिर जूठ पत्तल चाटेवाला कुकुर बनराज ना बन सके।'

अपमान के जहर घोंट के चुपचाप रंगमंच पर कर्ण अपना धनुपविद्या के करतब देखावे लागल। घूमत चक्र के आंह पार धइल पुतरी के आँखि वेध दिहलस। जल में परछाहीं देखि के छत पर टाँगलि मछरी के सिर काट गिरवलस। आँखि प पट्टी बान्हि के अउर खाली 'टन्न' से अवाज सुनि के ओहिजा राखल तरकुल के फर के दू फारी

www.bhojpurisahityangan.com

करि देलस। घोड़ा के पोंछि के एगो बार में गाँथल अउर लटकावल आँवरा के फर, बार काटि के, गिरा देलस। ई फर ओकरा से दू सै डेग फरका बार में लटकावल रहे। एकरा अलावे अर्जुन जवन-जवन करामात देखवले रहन, कर्ण ओहू सभ के खेल-खेल में देखा के सभकेहू के अचरज में डाल देलस। सभा-भवन में सभत्तर सन्नाटा छा गइल। कुछुए घरी का बाद ओकर सिकायत करेवाला लोगन के बोलती बन्न हो गइल—उन्हुकर चेहरा करिया हो गइल।

मंच का कगरी आ के कर्ण सभ के प्रनाम कइलस। आ बोलल—'अपने आप के बनराज मानेवालन में जे अपना के बड़ बीर बुझत होखे, ऊ हमरा संगे भीड़े खातिर तइयार हो जाय। ई सुनते अर्जुन के बाँहि फरकि उठल। धनुष उठा लिहलन—'हम लड़े खातिर तइयार बानीं।' अतने में द्रोणाचार्य के गम्हीर अवाज सुनाइल—'लड़ाई दूगो समान वीरन में होले। छत्रिए छत्री के ललकार सकेला। अर्जुन से लड़े खातिर पहिले कर्ण का अपना माई-बाप के नांव बतावे के परी।'

कर्ण के सँउसे शरीर एह अपमान भरल सवाल से आगि में जर गइल। दहिना हाँथ उठा के खीसि में बोलल—'हम सूत-पूत हईं। एह सभा-भवन का आखिरी कतार में बइठल सूत-राज 'अधिरथ' हमार बाप हवन, आ उन्हुकर मेहरारू राधा हमार माई हई। मगर जे अपना के असल छत्रानी के जामल मानत होखे, ऊ हाँथ मिलावे।'

पाण्डव कुछ घबड़ा के कहलन—'एगो नान्ह होके राजकुमार छत्री से लड़े के दुस्साहस! ठीक बा, अइसन दुस्साहस नान्हे के जामल करि सकेला।' एह बोली के साथ मय सभा हँसे लागल। अपमान आ दुख के मारे कर्ण का मुँह के रंग छने-छन बदलत जात रहे। बुझाइल जइसे कर्ण लोहा लगाइए दीहो।

दुर्योधन फेरू स्थिति पर काबू कइलन। 'मंच पर आ के कहलन—'कुलीनता के अवना आडम्बर का आड़ में रउवाँ सभे एह बीर के अपमान करत बानीं, ऊ अगर रउवाँ सभ के अतना प्रिय बा, त एही छन ओहू के जोगाड़ हो जात बा। हम कर्ण का मस्तक पर अंग देस के मुकुट धरत बानीं। कर्ण आजु से—एही छन से—अंग-नरेस कहलाई अउर छत्रीन के पाँति में बइठी।'

कोरव-मंडली खुसी से अंग-नरेस कर्ण के जय-जयकार करे लगलन। पांडवन के मुँह धुँवा अइसन हो गइल। कर्ण पीछे बाँहि बन्हले चुपचाप खड़ा रहे अउर अब ओकर मन अइसन इज्जत पा के शान्त हो गइल रहे।

२

सूरुज के भगत कर्ण रोज नियर गंगा का किनारे बाल रवि के अरघ अरपित कइ के मंत्र उचारत रहे। अचानक केहू का पैर के अवाज आइल आ काँपत एगो मेहरारू के कंठ सुनाई परल,—'बेटा कर्ण?'

कर्ण घूमल—'के? राजमाता कुन्ती?'

'हँ, बेटा!' कुन्ती का अवाज में दुख भरल रहे—'हमहीं ऊ अभागिन हईं।'

'अभागिन?' कर्ण अचरज में डूबि के बोलल—'पाँडव जइपन बीरन के महतारी अभागिन कइसे हो सकेले?'

'अपना जेठ लरिका खातिर हमार प्रान बियाकुल बा!'—कहि के कर्ण का ओर कुन्ती आपन बाँहि फइला देली।

एह तरह के बात सुनि के छनभर कर्ण अचरज में पड़ गइल। ऊ श्रीकृस्न भगवान से आपन जनम-कथा त जरूर सुनले रहे, बाकिर एह जबून बेटा के जनम लेते जे ममता के कुल्हि बान्ह तूरि के फेंक देले होखे, ऊ मेहरारू एह तरे अपना के महतारी कहे के अधिकारी कइसे बना देलसि? ऊ अतना दूर गंगा का किनारे, ओह जबून बेटा के पासे, कइसे आई, एकर कबो कल्पना ऊ ना कइले रहे।

कुन्ती बिहवल हो के बोलली—'बेटा, का हमरा कहला पर बिसवास नइखे होत? भगवान सुरुज के गवाह बदि के हम कहत बानीं,—'तूँ हमार बेटा हउवऽ आ हम तोहार महतारी हईं।'

कर्ण अबकी बेर बहुत गौर से कुन्ती के देखलस। ओकरा मन में बिचारन के संघर्ष छिड़ल रहे—'एह आदर करे जोग नारी के आँचर के ओट अगर हमरा के मिलल रहित त हमार भागे बदल गइल रहित। कौन्तेय नाँव से आज हम सम्मान आ गौरव के जिनिगी जिहितीं। ओह घरी अगर ई अतनो कहि देले रहिति कि 'ई हमार हउ', त काफी रहित। बाकिर कुलीनता के बँचाके राखे वाला

www.bhojpurisahityangan.com

ई कंठ ओह घरी बन्न रहि गइल। अपना कुलीनता के बचावे खातिर अपना करेजा के टुकड़ा के जबून मानि के फेंक देबेवाली नारी आजु महतारी बने आइल बिया। कइसन महतारी ई हमार! खाली जनम दिहला से का कबनों मेहराइ महतारी बन जाले?

कुन्ती जइसे कर्ण के भाव समुझ गइली। छछनत भरल बोली में बोललो,—'तूँ बोलत काहे नइखऽ। तोहरा सन्देह बा कि हम अपना पूतन के प्रान बँचावे खातिर तोह से झूठ कहत बानी?'

कर्ण बोलल—'हमरा अइसन कबनों सन्देह नइखे। श्रीकृस्न से हमरा कुल्हि कहानी मालूम हो गइल बा। तूँ हमार महतारी हऊ, ई हम जानत बानीं, बाकिर आज अनयासे, बरिसन बाद, एह जबून बेटा के सामने ई छोह देखलावे के मतलब का बा? इहे सोचत बानीं।'

'हम अपना संगे तोहरा के लिया चले आइल बानीं।'

'कहवाँ?'

'पांडवन का डेरा में—भाइन के पासे।

कर्ण कुछ गम्हीर होके जबाब दिहलस,—'छमा करीं राजमाता! कौन्तेय कहलाये से हम राधेय आ सूत-पूत कहलइला में जादे गौरव अनुभव करत बानीं।'

कुन्ती के सुर कुछ भर्रा आइल—'तोह के तेजि के हम अबहीं ले जतना दुख सहलीं,—ऊ का काफी नइखे, जे तूँ अतना निठुर बनत बाड़ऽ? अब ले त हम चुप रहलीं हाँ, बाकिर एगो भाई दोसरा भाई के खिलाफ हाँथ उठावे, ई हम कइसे देखि सकीला! तूँ हमरा संगे चलऽ। पांडव खुशी-खुशी बड़ भाई का चरन में अपना के सँउपि दीहें।'

कर्ण का ओठ पर हँसी खिल आइल—'हमरा के लोभ का बंसी में मति फाँसीं राजमाता! साफ मन का नेह के सोझा तीनूँ लोक के राज खर्हू बराबर बुझीलाँ। दुर्योधन हमरा के आश्रय दिहलन। उन्हुका से मान-सम्मान कुल्हि मिलल। हम एह रिन से उरिन कइसे होइबि? धरमराज के भाई नुँ हम हईं, एह से हमरा के ओछा बना देला में तोहरा खातिर सोभा ना दीही।'

कुन्ती के मुँह लाल हो गइल। छन भर चुप रहि के बोललो—'बाकिर बेटा! कौरव आततायी बाड़ेसें।'

'बात सही हो सकेला, मानत बानीं'—कर्ण उत्तर में बोलल—'बाकिर एकर त समय निरने करी कि के सत्य-वादी बा। दुर्योधन का उपकारन खातिर आज ओकर आभार मानल हमरा खातिर सभसे बड़ धरम बा।'

कुन्ती दुखी मन से आखिरी निसाना सधली—'तूँ अपना अभागिन मतारी के लोर पोंछबऽ, ई हमार असरा बेकारे भइल। जे पूरा संसार खातिर दाता बा, आज ओकरा दुआर से ओकर महतारी खाली हाँथ लवटलि जात बिया।'

कुन्ती के उदास देखि आ ओकर बात सुनि के कर्ण भावना का आवेग में आ गइल। मतारी के चरन में झट आपन माथ राखि दिहलस—'छेमा चाहत बानीं माँ! जवन हम ना दे सकीलाँ, उहे माँग रहल बाड़ू तूँ।'

कुन्ती जइसे राज पा गइली। गद्गद हो के कर्ण के अपना बाँहि में भरि लिहली। कर्ण आज ओकरा के माई कहि के पुकरले बा! का ओकरा लवट जाये खातिर ई सन्तोस बहुत नइखे? कर्ण कहलस—'बाकिर माँ, तूँ जवन ना मंगलू, उहे हम तोहरा के देत बानीं। एह प्रकाशदेव सुरुज भगवान का सोझा हम प्रतिज्ञा करत बानीं कि पाँचों पांडवन में अर्जुन के छोड़ि के अउरी केहू पर हम हथियार ना चलाइबि। अर्जुनो का बारे में चिन्ता के जरूरत नइखे, जब स्वयं भगवान जेकरा रच्छा में बाड़न, तब ओकर केहू का करी! कौरवन का भागि में हारि जरूर बा; बाकिर हम साथ ना छोड़ि सकीलाँ। तूँ लवटि जा माँ! तोहार पाँचों पूत जिन्दा रहिहें।'

कर्ण के ई बात सुनि के कुन्ती काँप गइली—उन्हुक जइसे अपने पर घिरिना हो आइल। पांडवन के रच्छा खातिर ऊ कर्ण के पास आइल रहली आ कतना उदारता से कर्ण उन्हुका के ई दान दे दिहलस। कुन्ती का अइसन मालूम होत रहे—जइसे कर्ण सभ कुछ देबेवाला कलपतरु हऊ, जेकरा छाँह में खड़ा होके हम ओकर जरि काटत बानीं।'

दुख में डूबल चुपचाप मन भारी कइले; ऊ कर्ण के जी भर निहारत लवटि गइली।

३

अर्जुन अपना जेठ भाई धरमराज के चरन छू के गम्हीर सुर में कहलन—'आज कर्ण के बिना मरले लड़ाई

www.bhojpurisahityangan.com

की मयदान से वापस ना आइबि। ई प्रतिज्ञा करत बानीं।'

धरमराजजी आसिरबाद दिहलन। लड़ाई का मयदान में कर्ण के सोझा श्रीकृस्न के रथ ले जाते गांडीवधारी अर्जुन के किरोध दूना हो गइल। बहुत तेज तूफान नियर ऊ कौरव-सेना के संहार करे लगलन। मगर कर्ण के युद्ध-कौशल कवनो माने में अर्जुन से कम ना रहे। अर्जुन के बानन के आन्ही के छितिर-बितिर कइके ऊ अपना बान से अर्जुन का रथ के बहुत दूर पछाड़ो ठेल दिहलस।

दिन डूबे तक दूनों महाजोधन में ठेलम-ठेल होत रहल। अर्जुन के पच्छ गवें-गवें सबल होत जात रहे। ऊ पूरा विसवास का साथे लड़त रहलन; बाकिर कर्ण के हवा-पानी बिगड़त जात रहे, काहे कि ओकरा मन में किसिम-किसिम के बिचार उठत रहे—'राजमाता कुन्ती के हम बचन दे चुकल बानीं। अर्जुन के मरा गइला प भला ऊ हमरा के छेमा कइ सकेली ? का अर्जुन का जगहा प ऊ हमरा के ओतने सनेह से अपना गोदी में अस्थान दीहें ? अगर अइसने प्रेम हमरा से रहित त जनमते ऊ हमरा के फेंकि काहे दीहिती ?'

ओने अर्जुन अपना प्रतिज्ञा पूरा करे खातिर लगातार बानन के बरखा करत रहलन। मन के दुख देबे वाला अनेकन बिचारन से छुटकारा पावे के सभ से बढ़िया उपाइ रहे—रन-भूमि में मउवति पा गइल। कर्ण सोचि लिहलस—करतब आ सनेह खातिर अपना प्रान के बलि।

ठीक एही घरी कर्ण का रथ के पहिया भुंइ में धसे लागल। रथ के चाल बन्न हो गइल। कर्ण समुझलस—'धरती माता जइसे हमार बात मानि गइली। ऊ अपना गोदी में हमरा के जगह देबे के आतुर बाड़ी। बाकिर हम द्रोणाचार्य नीयर बिना हथियार के ना मुअबि। हम अपना धरम से ना चुकि सकीलीं।'

ऊ रथ से बहरा कूदि गइल आ रथ के पहिया निकाले लागल। अर्जुन अवसर के लाभ छोड़ल ना चहलन। राजनीति का आड़ में, रनखेत का नियमन के उलटा कर्ण पर बान के बरखा करे लगलन। कर्ण के देंहि बान से चलनी हो गइल। जमीन पर गिरत खा उन्हुका मुंह से माँ के उचारन सभ केहू सुनल। फेरु नगीच पहुँच के सभ केहू देखल कि कर्ण के चेहरा पर शान्ति के चिन्ह झलकत रहे, बाकिर एकर रहस्य केहू ना बुझि सकल।

ग्राम-पो०-मुंड़ेरा, गाजीपुर (उ० प्र०)

काहे हो भाई ?

श्रीकुबेरनाथ मिश्र 'विचित्र'

(१)

काहे जर्मन के मेहतर सोरह सै रुपया पाई ?
काहे भारत के बसिन्दा आपन पेट ठेठाई ?
जर्मन लोग पालि मधुमाछी, बीस हजार कमाई।
एहिजा लोग कलर्की खातिर दर-दर ठोकर खाई ?

(२)

गइल जमाना बाबा आदम के ई नवजुग आइल।
कन-कन में जन-जन का मन में अब ताकत बा आइल।
हे पुअरा पर के सुतवइया, गोबर के कढ़वइया !
हे मड़ई में रहवइया, हे गइया के दुहवइया !
(हे बी० ए० एम्मे० करवइया भारतीय कहवइया) !

(३)

बहिनी बाँहि उठाइ कबूलऽ, छोड़बि डगरि पुरानी।
दस हजार रुपया उपराजबि गहरी करबि किसानी।
खेती करबि मवेसी पालबि, दूध-भात हम खाइबि।
पाछे परबि नोकरी के ना, घरहीं मंगल गाइबि।

(४)

बाबा राघव दास, विनोबा, बापू घर-घर होइहें।
देखि-देखि हमरो हिम्मति बँरिन के नानी रोइहें।
अब ना ढेर हम बात बनाइबि प्रन हम ठानत बानी।
पाछा परबि नौकरी के ना, घरहीं काटबि चानी।

—भाटपाराशानी, देवरिया

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी जनपदन के संत कवि

प्रो० आद्याप्रसाद द्विवेदी

राष्ट्रभाषा हिंदी के दायरा में बोले जायेवाली बोलिन में भोजपुरी के बहुते ऊँच जगह बड़ ए। ई बोली पचास हजार वर्गमील में फइलल बाड़। एह देस के तीन-तीन राज्यन में बोलल जाये के अलावा ई विदेशन तक में बोललि जाले। ओइसे भोजपुरी के मुख्य छेत्र उत्तरप्रदेश के पूरबी जिला आ बिहार के पछिमी जिला बाड़े सँ। भोजपुरी बोली के छेत्र बहुते पुरान जमाना से क्रांतिकारी मनइन के करम छेत्र रहल बाटे। एही बोली के खित्ता में सारनाथ बाटे, जहाँ महातमा बुद्ध आपन पहिलका उपदेस दिहलें आ इहवें से अपना चेलन के बौद्ध धरम के परचार करे बदे दूर-दूर भेजले। एही खित्ता में बीरन के सरदार लोरिक भइल रहन। एहिजे के भोजपुरी बीरन के ले के शेर खाँ मुगल बादशाह हुमायूँ के हिन्दुस्तान से बाहर लखेद दिहले। एही भोजपुरी इलाका के बाबू कुँवर सिंह रहले, जे ८० बरिस के उमिर में अँग्रेजन के छठ्ठी के दूध इयाद करा दिहले।

भोजपुरी भाषी छेत्र जइसन बीर-बाँकुड़न खातिर मशहूर बा ओइसने विद्वानों लोग खातिर। एही छेत्र के श्री शिवकुमार शास्त्री, सुधाकर द्विवेदी, देवी प्रसाद शुक्ल चक्रवर्ती, रामावतार शर्मा, महादेव शास्त्री, काशी प्रसाद जायसवाल, प्रेमचन्द, राहुल साँकृत्यायन, सदल मिश्र, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, रामदीन सिंह, शिवप्रसाद गुप्त, डा० भगवान दास, चन्द्रशेखर शास्त्री, ईश्वरी प्रसाद शर्मा, शिवपूजन सहाय, डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी वगैरह लोग रहे, जे संस्कृत अउर हिंदी के अजगुत सेवक मानल जाले। एह से एह छेत्र के मिसाल देल बहुते कठिन बा।

निरगुनियाँ संत लोगनों के पहिले-पहिल जनम देवे के जस भोजपुरिए माटी के मिले के चाहीं। संत परंपरा के पहिलका गुरु कबीर साहब एही भोजपुरी खित्ता के काशी में पैदा भइल रहले, जिन्हिकर बोली भोजपुरी रहे। एगो साखी मे ऊ अपना बोली के 'पूरबी' बतावत बाड़े—

मेरी बोली पुरुब की, ताइ न चीन्हे कोइ;
मेरी बोली सो लखे, जो पूरुब के होइ।[1]

'पुरुबी' सबद के ले के कुछ विदवान लोग खींच-तान के ओकर कुछ दोसरे अरथ लगावेले। बाकिर एह शब्द के मतलब खोजत एगो भोजपुरिहा विदवान साफ कहले बाड़े कि 'कबीर की मूल-वाणी का बहुत कुछ अंश उनकी मातृ-भाषा बनारसी बोली में ही लिखा गया था।[2] कबीर साहब के भोजपुरी के नमूना तनी देखीं—

कवनो ठगवा नगरिया लूटल हो।
चंदन काठ के बनल खटोलवा, तापर दुलहिन सूतल हो।
उठो री सखी मोर माँग संवारो, दुलहा मोसे रूसल हो।
आये जमराज पलंग चढ़ि बइठे, नयनन आँसू टूटल हो।
चारि जने मिलि खाट उठवलें, चहुँदिसि धू-धू उठल हो।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, जग से नाता छूटल हो।

संत कबीर के बाद संतन के जवन परम्परा चलल ओमे कई गो संत भोजपुरिए छेत्र के हवे। 'बावरी पंथ' नाम के एगो संप्रदाय एही छेत्र के गाजीपुर जिला में पहिले-पहिल कायम भइल, जवना के परचार दिल्ली तक

---

१. कबीर ग्रन्थावली—ना० प्र० सभा, काशी पृ० ७८।

२. कबीर की भाषा—डॉ० उदयनारायण तिवारी, हिन्दी अनुशीलन, प्रयाग, वर्ष २, अंक १०२।

www.bhojpurisahityangan.com

लै हो गइल । बावरी साहेब के दादा गुरु दयानन्द आ परदादा गुरु रामानन्द गाजीपुर जिला के रहनिहार रहन । बावरी के शिष्यन में बूला साहेब, गुलाल साहेब आ भीखा साहेब के परचार केन्द्र गाजीपुर के 'भूड़कुड़ा' गाँव रहे, जहाँ से ई पंथ चारो तरफ पसरल । बूला साहेब दिल्ली के 'यारी साहेब' से दीक्षा ले के आपन उपदेस दूर-दूर तक ले फइलवले रहन । उन्हुकर ई भोजपुरी पद बड़ा मसहूर बा :—

सतगुरु नावल अधर हिंडोलना, हम धनि झूलब सुघर हिंडोलना,
झूलत झूलत गइलूँ गगनहिं तट ना, तँहवाँ साधव का देखलूँ अखरना,
सेतु सुहावन जगमग देखल ना, तहँवा प्रान हमरा समैलेना,
अबकी समैने फिर आइब ना, जन बूला गावत निरगुन हिंडोलना ।

गाजीपुर जिला के 'संत दुखहरन' के 'पुहुपावती' आ भक्तपाल नाँव के दू गो रचना के पता लागल बा ।[1] संत दुखहरन के चेला शिवनारायन के जनम बलिया जिला के 'चंदवार' गाँव में भइल रहे । संत शिवनरायन के एक दरजन से अधिक भोजपुरी किताबन के पता लागल बा ।[2] इन्हिका नाम पर शिवनरायनी संप्रदाय चलल, जवना के परचार लाहौर, काबुल, बम्बई आ कलकत्ता तक ले भइल। बलिया जिला के 'कारो' गाँव में एक बाबा शिवराम पैदा भइल रहन, जेकर रचल किताब 'भक्त जमाल' भोजपुरी बोली में बा । एह किताब में भक्त शिवराम बलिया के निरमान के कहानी बतावत बाड़े : —

बलिया नगर बसाइ के, बान-जननि सुख पाइ,
बामन आश्रम बलि बसे, शिवराम कवि गाइ ।[3]

संत शिवराम के चेला 'कीनाराम' बनारस जिला के रहवइया रहले । उन्हुकर चलावल अवधूत मत बहुत दूर ले फइलल बा । कीनाराम के भजन 'पोथी-विवेकसार' में राखल बा ।[4] नानक शाही संप्रदाय आ उदासी संप्रदायो के बहुते संत भोजपुरिए में आपन ढेर भजन-किरतन गवले बाड़े ।[5]

बिहार राज के भोजपुरी क्षेत्रन में बाबा धरनीदास के नाँव बहुत दूर ले पसरल बा, जेकर चलावल 'धरनीश्वरी संप्रदाय' आजो ले चलत बा । बाबा धरनीदास जिला सारन के 'माँझी' गाँव में पैदा भइल रहलीं । इन्हिके रचल तीन गो रचना 'प्रेमपगास', 'शब्द प्रकाश' अउर 'रतनावली' मिलल बाटे, जेकर सभ छंद भोजपुरी में बा ।[6] धरनीदास के भोजपुरी पदन में भासा के सुघराई देखते बनेला । बानगी बदे एगो पद दिहल जा रहल बा–

पिया मोर बसे गउरगढ़, में बसों प्राग हो
सहजहिं लागु सनेह, उपज अनुराग हो
असन बसन तन भूखन, भवनन भावे हो
पल-पल समुझि सुरति मन, गहबरिआवे हो

× × ×

धरनीं गति नहिं आनि, करहुँ जस जानहु हो;
मिलहुँ प्रगट पट खोलि, भरम जनि मानहुँ हो ।[7]

बिहार राज का शाहाबाद जिला का दिनारा थाना का 'घरकंधा' गाव के संत कवि दरिया साहब बड़ा मशहूर संत भइल रहन । ई जाति के दरजी रहन; जेकर दरिया पंथ बिहार से लेके उत्तर प्रदेश के काफी हिस्सन में आ बंगाल तक ले फइलल । दरिया साहब पढ़ल-लिखल ना रहन; बाकिर उन्हुकर रचल कई गो भोजपुरी रचनन के पता बा । डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री त

१. उत्तरी भारत की संत-परम्परा—पं० परशुराम चतुर्वेदी ।
२. संत शिवनारायन और उनका संप्रदाय–डॉ० रामचन्द्र तिवारी, पृ० १४२ ।
३. भक्त जमाल, अध्याय ८०
४. ना० प्र० सभा हस्तलिखित ग्रन्थ; भाग ३
५. वही भाग—३
६. धरनीदास की बानी – बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग
७. वही—बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग ।

www.bhojpurisahityangan.com

दरिया साहब के लिखल किताबन के संख्या २० गो बतवले बानीं।[1] दरिया साहब कबीर साहबे के तरह बहुत बहुँचन संत रहलीं; जेकरा के बंगाल के नवाब 'अलीवर्दी खाँ' बहुत जागीर देले रहे।

सखी संप्रदायो के परवरतक 'लक्षिमी सखी' जी सारन जिला (बिहार) के 'अमनौर' गाँव में पैदा भइल रहली। उन्हकर रचनन में 'अमरसोढ़ी'; 'अमर-कहानी', 'अमर फरास', 'अमर बिलास' आ 'हराका' छप चुकल बा। ई सभ रचनन के भाषा भोजपुरी बा; जवनन में ठुमरी, जावनी, पुरुबी, खेमटा, गारी अउर होरी के भरमार बा, जे सभ भोजपुरी छेत्र के लोक छंद हवे सँ। सरभंग संप्रदाय के मुख्य परचारक बाबा भिनक-रामजी रहलीं। सरभंग शब्द के सही मतलब का हऽ, ई पता नइखे। इहो पता नइखे कि एकर परवरतक के रहल; मगर ई पता बा कि एकर ढेर परचार चंपारन, सारन, मुजफ्फरपुर, सहरसा अउर पटना जिला में बा।[2] सरभंग संप्रदाय के मुख्य गुरु बाबा भिनक राम के जनम चंपारन जिला के 'सोहरवा-गोनरवा' गाँव में भइल रहल। इन्हिकर शिष्य मण्डलीन के संख्या १४३ तक ले बा।[3]

बलिया जिला के रसड़ा के पास के रहवइया 'बाबा बुलाकी दास' के कवनो जोरदार पंथ त ना चलल, मगर संतन में उन्हुकर गिनती होखेला। उन्हुकर देखावल कई गो चमत्कार मसहूर बा।[4] इन्हिकर रचल निरगुन आ चइता आजो लोककंठ में बड़ा जोरदार ढंग से गावल जाला। इन्हिकर हर गीत के आखिर में 'सेंगर बुलाकी' या "बास बुलाकी" रहेला। इन्हिकर रचल चइता के नमूना देखीं :—

सेंगर बुलाकी चइत घाँटो गावे हो रामा
गाई-गाई नन्दकुंवरि समुझावे हो रामा।

ऊपर जतना भोजपुरी संतन के नाँव गिनावल गइल बा, ई सभ लोग भोजपुरी के माटी में पैदा भइल रहले। एही छेत्र के माटी के बोली में घूमि-घूमि के ई लोग अपनियत के परचार कइले; बाकिर एह संतन के अलावो बहुते संत भइले, जे भोजपुरी के भूमि में पैदा त ना भइले, बाकिर आपन बहुते भजन भोजपुरी बोली में लिखले बाड़े। एह संतन में मलूक पंथ के परवरतक मलूकदास, सतनामी संप्रदाय के संत इलमदास आ संत तुलसी साहिब के रचनन पर भोजपुरी बोली के परभाव देखल जा सकेला। योग-साधना वदे आपन उपदेस देवे-वाला संत 'बाबा मेंहदीदास' पुरनियाँ छेत्र के रहले; बाकिर उन्हुकर छंद भोजपुरी में लिखल मिलेला।[1] 'साँईदाता संप्रदाय' के बाबा मोहन दास के भाषा अवधी हऽ, मगर भोजपुरी छेत्र में रहला से उन्हकर रचल पदन पर भोज-पुरी बोली के परभाव देखल जा सकेला। बाबा मोहनदासे के तरह संत पलटू साहबो के बात बा; जे पैदा त भइले अवध के खित्ता में, मगर उन्कर गुरु भीखासाहब भोजपुरी छेत्र के रहले। एही से पलटू साहब के कुंडलिया, रेखता, झूलनो आ सबदन में बहुते छंद भोजपुरिओ के बाटे। पलटूदास के एगो भोजपुरी छंद के नमूना देल जात बा; जवन उन्हके शब्दन के संग्रह में बा—

प्रेम-बान जोगी मारल हो, कसके हिया मोर
जोगिया के लाली लाली अँखिया हो जस कँवल के फूल
हमरो त सुरुख चुनरिया हो दूनो भये तूल
जोगिया के लेउ मिरिगछलवा हो आयल पट चीर।
गंग जमुनवाँ के बिचवा हो, बहे झिरहिर नीर
तेहि ठइयाँ जोरल सनेहिया हो, हरि ले गइले चीर।
जोगिआ अगर मरे नाहिन हो, पुजतल मोरो आस
करम लिखा नर पावल हो गावें पलटू दास।[2]

---

१. संतकवि दरिया : एक अनुशीलन; प्र० बिहार राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटना
२. संत मत का संरभंग संप्रदाय-डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री (बिहार राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटना)
३.—वही—
४. संत बुलाकीदास-'आज' साप्ताहिक, २० अपैल १९७५, श्री प्रभुनाथ मिश्र
१. भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक रेखाएँ : पं० परशुराम चतुर्वेदी; पृ० ८०
२. पलटूदास की बानी-बेल बेडियर प्रेस; प्रयाग

www.bhojpurisahityangan.com

भाई

श्रीभगवतीप्रसाद द्विवेदी

रघुनी खटिया पर परल छटपटात रहन। उन्हुकर देंहि आगि लेखा जरत रहे। तरास के मारे जीभि सटि जात रहे, ओठ कँटइला के काँट बन गइल रहे। जानकी कबहीं फुदेना आ मिसिरी पीसि के सरबत पियावसु त कबहीं नामों गारि के। करवट बदलि के रघुना कँहरत बोललन—'जानकी, अइसन बुझात बा कि एह पारी बाँचे के कवनो उमेदि नइखे। देंहि में बड़ा जलन बा। अब ना बाँचबि दादा!'

'बसमतिया के बाबू, अइसन मति कहऽ!'—जानकी पुक्का फारि के रोवे लगली। 'एगो बुचियो रहलि त उहो अपना ससुरा चल गइलि। अब एह घर में जे बाड़ऽ से तूँही नुँ बाड़ऽ? हम धउरले डाकधर बाबू के लिया ले आवत बानीं। तनीं धीरज राखऽ।'

'ना जानकी।' रघुनी उन्हुकर बाँहि धइ के बिलमवलन,—'ई बेमारी कवनो डाकधर-वोकधर के बस के नइखे। हम अपने कइल कुकरम के सजाइ भोगऽतानीं। कतहीं जाये के काम नइखे। के जाने तूँ ओने गइलू आ एने हम चल दिहलीं। एह से एहिजे हमरे भीरी रहऽ।'

'राम.....राम.....अइसन ना कहे के, बसमतिया के बाबू।'—जानकी अपना मरद के समुझावल चहली।

'ना जनाको, हम बेलकुल ठीक कहऽतानीं। कहल जाला कि मउअति निगिचइला पर जिनिगी में कइल कुल्हि नीमन-जबून करम इयाद आवे लागेला। साँचे कहाउति हऽ, बाउर कइला के नतीजा बाउरे होला। हम बुझऽतानीं। हमार जगहा नरके में बा।'

जानकी बात काटि के बोललीं,—बसमतिया के बाबू, तोहार मिजाज ठीक नइखे। चुपचाप रहऽ, बोलऽ मति। ई सभ बात मन में मति ले आवऽ, हमार किरिए!'

'बसमतिया के माई,—'रघुनी दू घोंट पानी पी के खँखरलन,—'हमार एगो बात मानऽ।'

'कवन बात?' जानकी चिहा के पूछली।

'केहू के भेजि के सीतरमवा के जलदी बोला लऽ। मुअत खा कम-से-कम छोट भाई से त बतिया लीं। ना जाने कब का हो जाई? मुअला प हमरा के आगि के दीही? मेहरारू त आगि दीही ना आ ना किरिआ-करम करी। एह से ओकरा के बोला लऽ।' कहते-कहत रघुनी के आँखि बरिसे लगली सँ।

'जब देखऽ, तब ओही सीतरमवा के बात!' जनाको के देंहि में जइसे आगि के लहरि उठे लागलि—'हम पूछत बानीं, बसमतिया के बाबू! एही साल त ऊ अपना बेटा के बिआह कइलस हा। कवन तोहरा के असवारी में बइठा के ले गइल हा—छोट भाई होके, उहो एकलाद के। पुछहूँ त ना आइल।'

'बस.....बस; बहुत हो गइल।' रघुनी कुरुता के बाँहि से आँखि में भरल लोर पोंछलन—'बड़ भाई के नाते हमरो त करतब रहे कि बिना बोलावे के फिकिर कइले, बरियात में जाके सामिल होइतीं, करितीं-धरितीं। जे देखित, से कहित—आखिर भाइए नुँ हऽ। बेचारा मोका प चुकल ना।' बाकिर तोहरा मारे जाए पाईं तब नुँ?'

'हुँह, मान-ना-मान, हम तोहर मेहमान!' जानकी दाँत से ओठ कटली—'कान खोलि के सुन लऽ बसमतिया के बाबू! ओह नीच कुकरमो के घरे कुकुर त हमार जइबे ना करी; तले तूँ कइसे चल जइतऽ।' ऊ आँखि लाल-पियर करत रसोई घर में जाके फेरु फुदेना आ मिसिरी पीसे लगली।

रघुनी करवट बदललन। बीतल इयादि के फिलिम उन्हुकरा आँखि के सोझा से हो के सरके लागल। कबहीं रघुनी आ सीताराम, दूनो भाई के प्रेम गाँव खातिर आदरस रहे। बाकिर अब त इस्थिति इहाँ ले चहुँपि गइल कि एगो के बेटा के बिआह होखे त दोसरा के घरे जइसे मउअति हो गइल होखे। अगर एगो बेमार परे त अइसन

www.bhojpurisahityangan.com

लागे, अइसे दोसरका के नांवे लाटरी के टिकठ निकसि गइल होखे।

× × ×

बाबूजी के मुअला के बाद रघुनी के कपार पर घर के समूचा बोझा धरा गइल। सीताराम ओह टैम पढ़त रहले। दूनो बेरा दूनो भाई बीजे करे एके साथ पीढ़ा पर बइठे। दूनो लोग साँझि के बेरा एके सङ्गे टहरे निकले आ राति खा के देरी ले बतिआवे लोग।

पइसा के अभाव देखि के सीताराम के दिल-दिमाग पढ़ाई से उचटे लागल। एक दिन पलटन के भरती खुलल रहे। खबर सूनि के सीताराम शहर गइलन आ जाके 'लाइन' में ठाढ़ हो गइलन। दोसरा दिन ई खबर आगि लेखा सँउसे गाँव में पाटि गइलि कि सीतरमवा फउज में भरती हो गइल।

सीताराम अब हर महीना, बेनागा रोपेया पठावे लगले। गिरहतियो से आमदनी बढ़े लागल। रघुनी के दुआर पर अब दू गो निमनाह बैलन के जोड़ी झूमे लागल। सीताराम के बिआह खातिर अब तिलकहरू प तिलकहरू घउरे लगलन। बाकिर जब रघुनी चिट्ठी लिखवाइ के भेजसु त सीताराम टारि देसु।

गरमी के छुट्टी में सीताराम घरे आइल रहले। चउपाल मे रघुनी, जब उन्हुका बिआह के चरचा चलवलन त ऊ फेरु टारि के बोलसन,—'बाकिर भइया, जब भउजी खाएक बनावे खातिर बड़ले बाड़ी त फेरु हमार बिआह काहे खातिर ?'

'अरे बउराह-पागल ! का खाली रसोइए-पानी करावे खातिर बिआह कइल जाला ?' रघुनी समुझा-बुझा के आपन फएसला सुनवलन—'अब तूं सेयान हो गइलऽ। तोहार बिआह हम एही साल, सम्मत जरे के पहिलहीं, करबऽ। शुभ काम में भला देरी का !'

सीताराम चुप लगा गइले। दोसरा दिन तिलकहरू अइलन सँ त तिलक-बिआह के दिन पक्का हो गइल। एकरा बाद अब उहो दिन आइल जब रघुनी बड़ा उछाह के साथ सीताराम के सजि-धजि के बरियात ले चललन। पलकी दूगो भइल रहे, एगो प दुलहा आ दोसरा प अपने बइठ के चललन बेन बाजा बलिया शहर से मँगअवले रहन।

रूपा अइली त घर के पतोहि बनि के, बाकिर जानकी उन्हुकरा के एगो नोकरानो के दरजा दिहली। अब घर के कुल्हि काम-धाम रूपा के कपार पर लदा गइल। अतनो पर, जब खटिया पर सूतल जेठानो के जबान कँइची लेखा चले लागे त रूपा तिलमिला उठसु आ आँखि से लोर के कतरा मोती अइसन उन्हुकरा गाल पर छितरा जाय।

× × ×

गाँव में रघुनी के खूब चलतो रहे। अतना दबदबा रहे उन्हुकर कि मुखियोजी आदर-सतकार करसु। एकर ओजह ई रहे कि रघुनी गाँव के गरीब गिरहत-मजूरो के टहलुआ रहन। जब कवनो गरीब के बेटी के बिआह के दिन धरा जाय, त रघुनी उहाँ बे-बोलवले जा पहुँचसु आ मधु अस मीठ बोली में समुझावसु,—'देखऽ भाई ! कवनो गरीब के बेटी गाँव भरि के इज्जत हऽ। दिल खोलि के तिलक-दहेज दीहऽ। बेचारी लइकी के बिआह रोज-रोज त करे के बा ना ?'

'बाकिर हम गरीब कहाँ से तिलक-दहेज दे सकबि।' गरीब लोग गिड़गिड़ाए लागसु।

आँखि नचा के रघुनी असल बात पर आ जासु,—'फिकिर मति करऽ। हई ल रोपेया, पूरा पाँच सइ बा, गोनि लऽ। गाँव के पानी रहे के चाहीं।'

'ई काहे खातिर सरकार ?'—गरीब लोग हाँथ जोड़ि के अचरज से पूछसु।

'अरे बुरबक दास, धरु। बिआह के दिने काम आई।' आ ओकरा हाँथ में थम्हा के रघुनी घर के राह ले लेसु।

कुछ दिन बितला के बाद ओह गरीब लोग प रघुनी अइसन चाँप चढ़ावसु कि उन्हुका रघुनी के नांवे खेत लिखिए देवे के परे। 'मुखिया आ पंच लोग त रघुनीए के मदत करिहन,—'सोचि के गरीब बेचारा मन मसोसि के रहि जाय।'

एक दिन भगेलू के माई हरमेसा खातिर दुनिया छोड़ि के चल गइली। खबर सुनि के रघुनी पुछार करे खातिर ओह गरीब के दुआर पर हाजिर हो गइलन। दुख-सुख के समाचार भइला के बाद कहलन—'जे होखे, मगर तोहार मतारी बड़ी धरमात्मा रही। बेचारी सभको दुख-सुख में हाजिर होत रहे। देखिहऽ, ओकर काम-किरिया ठीक से करिहऽ।

www.bhojpurisahityangan.com

भगेलू कहलन—'का किरिया-करम ठीक से होई, घर में एगुड़ो पइसा नइखे।' रघुनी झट से बगली से कुछ रोपया निकललन आ गिन-गूँथ के हाथ में थम्हा देलन, —'भगेलू एह में अपना बस के बात नइखे। किरिया-करम खातिर हम जन-धन सभ से हाजिर बानी। हई कुछ रोपेया बा, राखि लऽ।'

भगेलू बुझलन कि मालिक बड़ा दयमन्त जीव बानी। दीन-दुखिया खातिर परमात्मा-अस दयाल बानी, जेह से बे मँगले एक सइ रोपेया मदत में दे दिहलीं। भगेलू के मतारी के किरिया ठीक से हो गइल।

दू महीना बाद एक दिन जब भगेलू भेंटा गइलन त ओह रोपेया के इयाद रघुनी परवलन।

'बाकिर ऊ रोपेया त अपने के एगो गरीब के मदत खातिर देले रहलीं।'—भगेलू हाँथ जोड़ि के अचरज में परि के बोललन।

'अरे तूँ अइसन बुझले रहऽ। का तूँ कवनो हमार उपरोहित-गुरु रहऽ कि तोहरा के दान में दे देलीं? मुसीबत में मदत कइलीं त तूँ हड़पिए जाये के चाहत बाड़ऽ! बाह रे! अदिमी अइसन अबहींए लवटा दऽ, नाहीं त....' कहत रघुनी खीसी काँपे लगलन।

भगेलू हाँथ जोड़ि के कहे लगलन—"खिसियाईं मत मालिक! जोगाड़ कइके जल्दिए दे देबि।" बाकि रघुनी उन्हुका बात पर धेयान ना दिहलन आ गाइ आ बाछी दूनो खूंटा से खोलि के अपना घर के ओर ले चललन। गाँव के तमाम लोग अवाक हो के देखत रहन, बाकिर केहुए के का मजाल, जे खोंखियो देउ। असहीं गते-गते कइके रघुनी गाँव के बहुते-धन बटोर लेलन।

एने घरो में सभ-कुछ खेत, घर-दुआर....पर रघुनी आपन नाँव दरब करा लिहलन आ उहो बिन आ चहुँपल जब जनाको रूपा के घर से निकालि दिहली। अनजाने में एगो शीशा के गिलास फूटि गइला पर जनाको बेलना से उन्हुकर खूब अन्हाधुन धुनाई कइली आ चोरी-चुप्पे चोरिका बेंचे के तोहमत लगाके चउकठ से बहरी करत गरजली—"मुँहजरी, तोरे अस चुड़इलि के घर में अइला से हमार गोदी सून रह गइल। का इहाँ हराम के माल धइल बा जे बइठि के गपेलबे?"

'काहे? घर में हमार हक नइखे का?'—कहि के रूपा सिसिके लगली।

'हमरो त हक ह....ऊँह!'—जनाको मुँह बना के कहली—। 'अब इहाँ तोरा मरद के कुछ धइल-ओइल नइखे, चल हट....इहाँ से।' कहि के जनाको उन्हुका के बहरी ढकेलि के भीतर से सिकरी चढ़ा दिहली। रूपा बेचारी रोवत-बिलखत नइहर चल गइली।

रूपा के पठावल तार जब सीताराम के मिलत त उन्हुकरा गोड़ के नीचे से धरती धसके लागल। अपना डिस्चारज खातिर दरखास दे के ऊ गाँवे चल अइलन। मुखियाजी के लगे गइलन। साँझि खा पंच लोग के बइठकी भइल, बाकिर फएसला त रघुनी के पच्छ में होखही के रहे। उहे भइल। सीताराम के एको बीता जमीन ना मिलल। पंच लोग कहलन—'एह में पंचायत का करे के बा? सभ त कागजा सबूत के बात बा!'

सीताराम करिए का सकत रहन। फउजी से उन्हुकर अरजी मंजूर होके आ गइल रहे। अब उन्हुकरा हर महीना पचास रुपया पिन्सिन मिले लागल। कवनो दोसर उपाइ ना देखि के, आखिर में ऊ अपना ससुरारी चहुँपलन आ उहवें बटैया पर खेत लेके जीव-जान से गिरहती में भीड़ि गइलन।

रघुनी अपना लइकी बसमतिया के बिआह कइलन, बाकिर सीताराम के ना बोलवलन। सीताराम बेबोलवले गाँवे जासु त कइसे? उन्हुका के त गाँव से खदेरल जा चुकल रहे।

अपना बेटा के बिआह में सीताराम भइया-भउजी के बोलावे के बड़ा कोसिस कइलन, बाकि रूपा आ ससुरारि वालन के आगा उन्हुकर तनिको ना बसाइल आ ऊ मन मारि के रहि गइलन।

× × ×

राति खा सीताराम खटिया पर सूतल रहल। दिन भर खेत में खून-पसेना एक कइला के ओजह से तनिकिए देरी में उन्हुका निनि लागि गइल रहे। एकाएक ऊ एगो सपना देखलन—'कई गो राछस भइया के घेरि के ठाढ़ बाड़े सँ। ऊ भागे के चाहत बाड़न, तले एके संगे कइ गो छुरा के वार राच्छस कइ देत बाड़न सँ आ ऊ खून बोकरि

www.bhojpurisahityangan.com

के ठावहीं····!' सीताराम चिचियाए लगलन आ उन्हुकर निनि टूटि गइल। ऊ ओही घरी जानि गइलन कि भइया पर कवनो आफत आइल बा। फेरु उन्हुका राति भर निनि ना आइल।

दोसरा दिन गाँव के एगो अदिमी उन्हुका इहाँ आइल त आकरा से रघुनी के बेमारी के हाल सीताराम के मालूम भइल। सीताराम हड़बड़ाइले घरे आके रूपा से बोललन,—'आहो सुनत बाड़ू, भइया के हालत बड़ा खराब बा। राति खा हम एगो बड़ा बाउर सपनो देखलीं हाँ। चलऽ, हमनीं के चल के उन्हुकर दरसन क लीं जा।'

सीताराम के बात सुनते रूपा के देहि में तितिकी लेस लेलस—'अइसना भइया के अइसन-तइसन! हम त ओह गाँव में लातो ना लागाइबि आ कह देत बानीं कि रउरो उहवाँ नइखे जाए के।'

'तू समुझत काहे नइखू। भइया बहुते बेमार बाड़न। अगर उन्हुका कुछु हो गइल त बड़ा अपजस होई।'

'अपजस होखे त होखे दीं। ओह दिन ना अपजस भइल रहे, जेहि दिन हमार झोंटा पेराइल रहे आ घर से बहरिया देल गइल रहीं। ओइसना पापी अदिमी के अतना जल्दी थोरहीं मुए के बा।'

'देखु रूपवा, अगर अब आगे कुछ कढ़वलिसि त तोर जीभ उखाड़ लेबि।' सीताराम खिसिया के आपन फएसला सुनवलन,—'हम भइया के देखे जरूर जाइब आ तोरो उहवाँ चल के परी।'

रूपा अपना मरद के चेहरा देखि के डेरा गइली आ कुछओ आगे ना बोललीं। चुप हो गइली।

× × ×

रघुनी करवट बदललन। ऊ जनाको पर लाल-पियर होके कहलन—'जनकिया, हम जानत बानीं कि तोर दिल रसिजी ना। ते मेहरारू ना, पथल हउसि····पथल। इहे कारन बा कि ते आज ले बाँझ-बहिला रहलिसि। ई आपन भाग बुझु कि तोरा बहिन के मउअति के बाद, ओकर बेटी बसमतिया के हम आपन बेटी बूझि के पललीं-पोसलीं। नाहीं त आज तोरा के केहू माइयो कहेवाला ना मिलित।'

अचक्के में रघुनी के नजर अपना दुआरि के ओर परल। ऊ देखलन कि सीताराम अपना मेहरारू आ डाकघर के लेके आ रहल बाड़न। अँगना में ढुकते सीताराम कहलन—'हम अब आ गइलीं भइया! अब तोहरा कुछओ ना होई।' फेरु डाकघर बाबू के ओरि मुँह क के चिरउरी कहलन—'डाकघर साहेब, जल्दी देखीं। हमरा भइया के कवनो उपाय से जीया लीहीं।'

'घबराईं मति। इहाँ के अबहिएँ चंगा हो जाइब।' डाक्टर नाड़ी देखि के बतलवलन।

रघुनी के आँखि से लोर टपके लागल। ऊ सुसुके लगलन—'बबुआ सीताराम, हम तोहरा साथे बड़ा अन्याय कइलीं। हमरा के तूँ माफ क दऽ। हम आपन सँउसे खेत-बारी तोहरा बेटा के नांवे लिख देले बानीं। हई लऽ कागज····। आ हाँ, जेकर-जेकर जमीन हम नजायज तरीका से लेले रहीं, ओकर लवटा दीहऽ', काहे कि दीन-दुखिया के आह हरमेसा तड़पावे ला। हमार हालत देखि लऽ।' तोसक के नीचे से दस्तावेज के कागज निकाल के सीताराम के हाँथ में थम्हावत रघुनी फेरु बोललन,—, 'बबुआ, आज से ई घर-दुआर, खेत-बारी तोहार हऽ। अब तोहरा कतहीं नइखे जाए के! हमनीं के तू लोग जे साग-सातू देबऽ, ओही पर गुजर कइ लेबि जा।'

सीताराम के आँखि सावन-भादो के बदरी-अस बरिसे लगली सें। दूनो भाई एक दोसरा से लपिटा के बहुते देर ले सिसकत रहलन।

जिला—प्रबन्धक दूरभाष
निदेशिका अनुभाग, पटना-१

www.bhojpurisahityangan.com

शैतानी खेल इन्सान के : बलि

डॉ० अशोक द्विवेदी

अयोध्या के राजा दशरथ के निर्वंश भइला के अइसन चिन्ता सतवलस कि ऊ एगो मुनि का सलाह पर बलि देवे खातिर बाम्हन के लइका खोजे लगलन (इहो एगो अजबे बात बा कि ब्रह्मदोसी भइला के डर उन्हुका ना भइल)। बहुत कोसिस-पैरवी का बाद बलि खातिर जमदग्नि ऋषि के लइका किनाइल। एकर इन्तजाम खुदे विश्वामित्र कइलन; बाकिर होनी कुछ आउर रहे। कीनल लइका पतित मानल गइल। बलि के अजोग भइला से ऊ खेती-बारी का काम में लगा दिहल गइल, जवना से आगे चल के उहे भूमिहार-वंश के पुरुवज बनल।' एह लोककथा के विवरन अँग्रेज विदवान 'क्रुक' (क्र० : २ : ६४) देले बाड़न। वंश खातिर बलि देवे के कुछ कथा पुराननो में मिलेला, जवना से पता चलेला कि ओह समय 'पुत्रेष्टि' जगि में बलि दियात रहे।

सन् १७८९ में नाना फड़नवीस लोहागढ़ का किला के एगो जे देवाल बनवावत रहलन, ऊ ढहि-ढहि जाय। केहू राय दीहल कि एहिजा बिन बलि दिहले देवाल ना उठि सके। उहो तब जब एगो मरद आ एगो मेहरारू के जियते नेंइ में गाड़ दिहल जाय। बड़ा मोसकिल से एगो मरहठा तइयार भइल आ आपन मेहरारू आ जेठ लइका के एह जगि खातिर अरपन कइलस। ऊ बेचारा जियते नेंइ में दबा दिहल गइलन सें, तब जाइ के ऊ देवाल खड़ा भइल, जवन आज ले बा। ओह मरहठा के एकरा एवज में एगो गाँव मिलल आ ऊ ओह गाँव के परधानो बना देल गइल।

एही तरहे एक बेरि राजा 'जरगू' एगो नदी पर पुल बनवावत रहलन, जवन चुनार-किला का लगे बा। ऊ पुल जब बनि के तइयार होखे, तब अचके भसि जाय। तब राजा के कवनो गुनिया सलाह दिहलस कि 'धर्मावतार ! इहवाँ कवनो बाम्हन के कुँवार लइकी के जियते गाड़े के परी, तब पुल बची। राजा 'जरगू' अपना बल का जोम में एगो गरीब बाम्हन का लइकी के पाछा मँगवलन आ ओकरा लाख रोअलो-कलपला के बाद, ओके गड़वा दिहलन। पुल त बनि गइल, बाकिर ओह इलाका में ऊ लइकी 'बइमति' बनि के सत्यानास करे लागलि। धीरे-धीरे ओकर नाँव महमारी देवी हो गइल। अब, जब-जब उहाँ महमारी के कोप होखे, तब-तब ओकरा के चढ़ावा चढ़ावे के परे। चढ़ावो कइसन ? कवनो पशु के ताजा खून चाहे बोतल भर शराब।

एही तरह निरमान आ अस्थापना का कामन मे अनेकन लोगन के बलि दियाइल बा, जवना का बारे मे कहनी आ खिस्सा के कमी नइखे। हर प्रदेस आ नगर-गाँव में कुछ ना कुछ उदाहरन मिलिए जाई। चाहे काली मइया के पूजा होखे भा डीह बाबा के भखउटी। बलि देवे के परथा के एगो आपन पुरान परम्परा बा। छठी मइया का पूजा में कई गो लोककथा अइसन बाड़ी सें जवना में जेठ लइका के बलिदान के जिकिर बा। कतने फेंड़ आ चउतरा अइसन बाड़न, जवन खून से रंगाइल-नहाइल बाड़न। कतना पोखरा, तलाब, कुआँ आ मंदिर अदिमी का एह शैतानी खेल के कहानी आजो कहि रहल बाड़न। कतना कबीला जाति आ संप्रदाय के लोग बलिदान का एह खूनी खेल का मद्धे बखरइत बनल बा।

लोकाचार में अंधबिसवास के कवनो ओर-छोर नइखे। एही का बदउलत अदिमी अदिमी का खून से नहाला, ओकर रकत पियेला आ ओके जियते गाड़ि देला। आज जब मानव-सभ्यता के अतना विकास हो गइल बा, संसार के लाखन गाँव, जंगली जाति आ कबीला अइसन बाड़न जहाँ एकर परथा आजो चल रहल बा। अब्बो कहीं कवनो अखबार-पत्रिका में अक्सरहाँ निकल जाला कि कवनो अदिमी देवी भा देवता के खुस करे खातिर भा कवनो प्रेतात्मा के सीध करे खातिर कवनो लइका के बलि दे दिहलस।

www.bhojpurisahityangan.com

धेयान से देखल जाय त मालूम होई कि एह परथा के शुरुआत अचके ना हो गइल। आदिमी में जबसे अपना बल के विस्तार करे के भाव जागल, जबसे ऊ किसिम-किसिम के अंधविसवास आ ढकोसला का चक्कर में परल, तबे से एकर शुरुआत भइल। दइब के जोग अइसन जुटल कि ऊ एह काम से मनोवांछित फलो पावत गइल आ धीरे-धीरे बलि पर ओकर भाव जमत चलि गइल। जिनिगी का सुरक्षा खातिर स्थानापत्ति वा सिद्धान्त (थियरी ऑव सब्स्टीट्यूशन) पर, जिनिगी का बदला में जिनिगी लेबे भा समरपन करे के परथा चलल। एह बिचार के अनुसार 'जीवन खातिर जीवन के उत्सर्ग' कइल जरूरी हऽ। एकरा बारे में मैकडूनल, एच० एच० विल्सन, बार्थ, क्रुक आदि कई गो बिचारक आपन राय देले बाड़न।

बलि-प्रथा के बरनन 'जातक' ग्रंथनो में मिलेला। जातक (भाग ४, पृ० १५५) में कवनो निरमान खातिर बलि देबे के उल्लेख बा। एगो बौद्ध जातक में एगो कथा राजा 'चपलायन' के बा। उन्हुका के केहू राय दीहल कि 'अपना नयका दुआर के निरमान में कवनो बाम्हन के पवित्र खून से पूजा करऽ आ ओकरा के नेंइ में गाड़ दऽ। बाकिर ऐन मोका प बलि दियायेवाला अदिमी भागि निकलल। राजा ओकर पीछा कइलस, बाकिर भगवान बुद्ध के बिचवान हो गइला से ऊ बाँच गइल। भगवान बुद्ध ओसे कहलन कि ओकरा बदला में ऊ कवनो मुअल बकरी के नेंव का नीचे गाड़ि दे।' काफी समुझवला बुझवला का बाद राजा मानल।

मानव बलि के एगो रूप हऽ—अस्थापना के बलि। इहो लोक-बिसवास आ लोक-भावना के खूबे प्रभावित कइलस। निरमान भा स्थान खातिर बलि देबे के महातम दिनो-दिन बढ़ते चल गइल। अइसन बलि खातिर बाद में छोट जाति के सदस्य चुनल जाए लगलन। राजा सिद्धराज चालुक्य (१०९५-११४३) एगो झील बनवावे के सोचलन। निरमान करे का बीच में बलि के बात आइल। राजा एगो गरकी औरत के अपहरन क लिहलस। मरत खाँ ऊ सराप दिहलस कि ओह झील में कबो पानी ना होई। साँझो ओम्मे तबले पानी ना भइल जबले 'मायो' नाँव के एगो झाड़ूदार आपन परान ना अर्पित कइलस।

बलि कवनो दैबी भा कुदरती कोप आ दुर्घटना से छुटकारा खातिर दिहल जाला। कई गो नदियन का बाढ़ो के बेरि बलि के कहानी सुने के मिलेली सँ। गाजीपुर अउर भोजपुर के बीचे एगो नदी बिया 'कर्मनाशा'। ओकर पानी अतना खराब हऽ कि ऊ जहाँ रेंगि जाई, उहाँ के फसल जरि जाई। ओह में जब-जब भयंकर बाढ़ आवत रहल हा, आसपास के गाँवन के पुजेरी कवनो जाति के कलंकी भा पापी अदिमी के अरपित क देत रहले। ऊ लोगन के बिसवास रहे कि एहतरे बलि देला से कर्मनाशा सिमटि जाई। खूनी कर्मनाशा ना जाने कतना जान अइसहीं लेले होई।

जनहित खातिर भा फसल के रक्षा भा बिपत से छुटकारा खातिर बलि देबे के अनेकन कथा-कहानी उत्तरी भारत में मिलिहन सँ। बलि के एह क्रूर खेल के परसार अउरी कई गो जनपदन आ जातियन में मिल जाई। मध्यप्रदेश में गोंड़ जाति के लोग काली भा दन्तेसरी देवी के पूजा में कवनो अदिमी के मूँड़ी काटि के चढ़ावत रहन। अइसहीं असाम के कामाख्या देबी के निरमानो का बारे में एगो कहानी मिलेले, जवना में कहल बा कि उहाँ के राजा जब मंदिर के निरमान करववलन, त पूजा में १४० गो अदिमिन के मूँड़ी काटि के तामा का थरिया में देबी के चढ़वले रहन। कंध जाति के लोग अपना फसलन का रक्षा खातिर दास भा गुलामन के बलि दे देत रहे। अंगामी (नागा) आ गारो जाति के लोगो अपना फसल के उपज बढ़ावे खातिर भा कबीला के बढ़न्ती खातिर नरमुंड के शिकार करत रहलन जा।

मिर्जापुर के विन्ध्यवासिनी देवी किहाँ कतना लोग कतना अदिमिन आ पशुअन के बलि देले होई, जवना के ठेकाना नइखे। कई गो कहानी त अइसनो मिलेले, जवना में देबी के खुस करे खातिर अपना लइके के बलि दे दिहल गइल। कतना राजा-महराजा अइसन बाड़न, जवन देबी के खुस करे खातिर मूँड़ी के परसाद भखलन आ चढ़वलन।

मानव-सभ्यता का विकास के सङ्गे; धीरे-धीरे मानव बलि के परथा दबल। बाकिर बदला में पशुबलि के रूप धइ लिहलस। बलिदान परथा के लोकबिसवास आ मान्यता

www.bhojpurisahityangan.com

में कवनो खास फरक ना परल। कांगड़ा में 'ताउन' के दबावे खातिर 'पंचवल' आ 'सतवल' का परथा के रउवा का कहब ? पांच गो बलि भा सात गो बलि कम ना होला। भैंसा, मुर्गी, भेंड़, बकरा, सुअर आ अदिमा का बदला में लउकी आ कोंहड़ा। तारीफ ई कि एह कुल्हिन के मूंड़ी एके बेरि में कटा जाए के चाहीं।

धरती माई के पुजारियन के एगो संप्रदाय अइसन बा, जवन बलि दिहला के बाद पसुअन के धरती में गाड़ि देला। ई लोग ओके देवी भा देवता का परसाद के रूप में ग्रहन ना करेला। 'घांगड़' लोग त बकरा काटि के मूंड़ी चउरा का नीचे गाड़ि देला आ बाकी मांस परसाद का रूप मे पर-पलिवार में बांटि देला। 'बसोर' जाति के लोग अपना मृतक के खातिर सूअर के बलि चढ़ावेला। ई बलि बड़ा क्रूरता से दिहल जाला। पहिले सूअर के टेंगरी काटि दियाई, फेरु ओकर समूचा धड़ अंगना में गाड़ि दियाई। ओह लोगन के बिसवास हऽ कि एह तरे कइला से बाहरी भूत-परेत अंगना में ना अइहन सें। दक्खिन के 'कोल' लोग अपना 'सतबाई देवी' के चढ़ावे खातिर बकरा ले जाई आ ओके देवी के चउरा का आगा जिअते गाड़ दी।

कई जगह, कई जातियन आ कबीलन में बलि का पहिले बलि पसु के पूजा-अरचा कइल जाला। मिर्जापुर के 'पहड़िया' आ 'खरवार' जाति के लोग बलि का पहिले बकरा के पूजा करेलन। दक्खिनी अफ्रिका में कुंवार कन्या के झुंड-के-झुंड भेंट में बलि चढ़ा दिहल जात रहे। पहिले उन्हनी के नहाइ-धोवाइ के बढ़िया कपड़ा पहिनाइ के सजा-बल जात रहे आ फेरु फूल-माला पहिरा के पूजा होत रहे। एकरा बाद नाचत-गावत आ बजावत जुलूस का आगा-आगा ऊ लइकी सभ चलत रहली सं आ एगो कुइयां पर आके ठाढ़ हो जात रहली सें। पुजारी महराज मंत्र बुद-बुदा बुदबुदा के उन्हनी के ओह कुंइयां मे ढकेलवा देत रहले। मानव-बलि के एह आदिम बर्बरता के अवशेषो बाद में खोज से मिलल रहे।

'मइया' का पूजा में दिहल जायेवाली बलि के अनेक ढंग बा। एक जगह त सूअर गांव के बहरा सिवाना पर ले जा के धरती में गरदन तक गाड़ि दिहल जाला आ ओकरा बाद ओकरा पर गाय-बैल आ भैंसिन से घोड़दउड़ करावल जाला। जब ऊ थुरा-कुंचा के चिचियात-बिलबिलात मू जाला, तब ओके निकालि के ओकरा संगे एगो भेंड़ काटल जाले। फेरु उन्हनी का खन में रीन्हल भात गांव भर के आदिमिन पर छिछिकारल जाला। बंगाल के 'खाल' सूअर के बलि एही ढंग से देलन ; बाकिर ओकर परसादी ना ग्रहन करिहन। उत्तर प्रदेश में 'बसोर' जाति आ 'घांगड़' जाति के लोग सूअर के बलि देके अपना दुआरी पर भा अंगना में एह बिसवास से गाड़ देला कि ऊ मृतक का परेत के दबाइ दीही। गाड़त खा बलि देवेवाला कहेला 'हम तोरा के इहां गाड़ दिहली, अब तूं कब्बो मति अइहे, चाहे तोरा के कवनो ओझइत भा गुनिया कतनो उकसावे।'

बलि देत खा क्रूरता आ निर्दयता के आपन एगो बेमिसाल रूप बा। कबो-कबो त बलि पशु के अतना तड़-पाइ-तड़पाइ के मुवावल जाला कि देखिके रोआं खाड़ हो जाला। जीव हदस जाला। हम कई गो हरिजन टोली आ बस्तियन में सूअर के बलि के विभिन्न रंग-रूप देखले बानीं आ आतंकित भइल बानीं।

'ल्होटा' (नागा) लोग सांढ़ के बलि एही क्रूरता आ निर्ममता से देला। ऊ लोग पहिले सांढ़ के मारि-मारि के लखेदेलन। फेरु झुंड बान्हि के ओके खदेरत-दउरावत हंकावेलन आ भाला से गोभि-गोभि के गिरा देलन। सांढ़ जब जीभ काढ़ि के गिर जाला, तब ओकरा मूंड़ी आ देंहि के धीरे-धीरे आ लगातार कुंचाई आ थुराई करेलन। एह हतेयारी आ बीभत्स बलि का ऊपर अब त सरकार पाबन्दी लगा देलस, बाकिर कई गो पिछड़ल कबीला अबहियों एकरा के कमोबेश पूरा करेलन।

मध्यप्रदेश के 'बैगा' (पुजारी) लोग जब 'नरायनदेव' (सूर्य) के सूअर चढ़ावेला त पहिले ओके छुट्टा छोड़ि देला। ऊ साल दू साल ठहरेला अउर तब पट्ठा हो जाला। ओकरा बाद ओकरा के घ के अउर पटकि के पीठ पर लकड़ी के पटरा राखि के सात आदमी दबावे लागेलन। एकरा बाद ओह चिचियात सूअर के चारू गोड़ चार अदिमी अपना-अपना ओर खींचेलन। एह खिचाव आ दबाव में तड़पि-तड़पि के ऊ परान तजि देला। बलिकार्य के दउरान कुछ बैगा लोग ओके घेरि के बिनती करेला आ बाद मे

www.bhojpurisahityangan.com

ओकर मूंड़ी आ गोड़ काटि के चढ़ा देला। बकिए मांस पुजारी लोग रीन्हि के पावेला।

कई जगह 'गोंड़' लोग एगो जलसा का साथे सूअर चढ़ावेलन। ऊ अपना देवता का पूजा में सूअर के चारू गोड़ बान्हि के टटकि देलन आ फेरु खोख सूआ ओकरा बायां पसली में तवले घसावत जालन, तबले ऊ सूआ ओकरा करेजा में ना चहुंपि जाला। सूअर बड़ा कठकरेज जीव होलन सें। सूआ घोंपि के ओकर मथाई होखे लागेला। एह मथला से धीरे-धीरे चिचियात छटपटात ऊ परान छोड़ि देला। छोटानागपुर के कोल लोगन में भैंइसा चढ़ावे के अइसने निर्दय रेवाज मिलेला। पहिले दू गो भैंइसा अइसन जगहा में हँकात रहन सें, जहवां एक ओर इहाँ-उहाँ पहाड़ खाड़ रहत रहे। ओकरा बाद तीन ओर से कोल जाति के नौजवान तीर-धनुहा लेके ओह भैंइसन के घेर लेत रहन अउर लोहा के तीर चला-चला के शिकार करे लागत रहन। दूनो भैंइसा कूदत, भागत, हाँफत तीर-भाला के बेध सहत लोहूलोहान हो जात रहन। जब हँकरत-हँकड़त गिर पड़त रहन, तब टांगा भा कुल्हाड़ा से ओकर गरदन अलगा कइ दिहल जात रहे। नेपाल में 'भैरवी' का जलसा में कई-कई गो भैंइसा कटा जालन। नवरातर में बकरन आ भैंइसन के क्रूर बलि आ ओकर रक्तपान देखि के बड़-बड़ कठोर लोगन के दिल दहल जाला।

मानुस के एह घिनवना आ शैतानी खेल के अन्त नइखे। अपना कल्यान के अंधबिसवास खातिर जवन करे, थोरे बा। आजो जब मानव सभ्यता चरम सीमा पर पहुँचि रहल बा, ओकरा शैतानी आ हतेयारी खेल के नया-नया रूप देखे के मिलत बा। जरूरत एकर नइखे कि एह बिसवास के एकदमे दर-किनार कइ दिहल जाय। जरूरत बा एकरा गंभीर अध्ययन आ चिन्तन के, तबे जाके लोकाचार में समाइल एह रेवाज के अन्त कइल जा सकेला।

—परसुराम सिंह के मकान
मिड्डी, बलिया

(पेज ५४ के बाकी)

संत कबीर के चेलन मे 'धरम दास' के नाँव मुख्य बा, जे पैदा त भइल रहले-विन्ध्य प्रदेश में; बाकिर अपना गुरु के साथे बनारस में रहले। एह नाते उन्हुकर सब भजन भोजपुरिए में बाड़े सें। धरमदास के रचनन के संग्रह बेल बेडियर प्रेस, प्रयाग से छपल बा। ओह में के एगो नमूना देल जात बा—

> जितऊ मड़ैया सूनी करि गइलें
> अपन बलम परदेस निकरि गइलें
> हमरा के कुछउ ना गुन दे गइलें
> जोगिन होके मैं बन-बन ढूंढ़ो
> हमरा के बिरह बैराग दे गइलें
> संग के सखी सब पार उतरि गइली
> हम धनि ठाढ़ि अकेली रहि गइलीं
> धरम दास यह अरजु करत है
> सार सबद सुमिरन दे गइलीं।[१]

संत कबिन के जरिए लिखल भोजपुरी के एह तमाम पदन के देखि के कहल जा सकेला कि भोजपुरियो में अवधी भा ब्रजी के समान पदन के खजाना बा। ई जरूर बा कि भोजपुरी में अवधी भा ब्रजी के समान बड़-बड़ महाकाव्य ना लिखाइल; मगर निरगुन आ भजन बदे त ई बोली हिन्दी के कवनो बोली के मात दे सकेले।

—स्नातकोत्तर हिन्दी-विभाग
शतीशचन्द्र कालेज, बलिया

१. धरमदास की शब्दावली—बेल बेडियर प्रेस, पृ० १२, भाग—३

www.bhojpurisahityangan.com

कमलापतिप्रसाद : हमार बाबूजी

डॉ० आशा सहाय

कलाकार भा सज्जन अदिमी के मउत हो जाला, बाकिर अपना कला आ सज्जनता के बदौलत अइसन लोग हमेशा-हमेशा अमर रहेलन। फूल झर जाला, बाकिर ओकर गमक हरदम इयाद रहेला। एही तरीका से हमार बाबूजी कमलापति प्रसाद आपन जिनिगी जियलीं। आदमी के एगो बड़ गुन ह परोपकार, मगर इहाँ के त सदेह परोपकार के अवतार रहलीं अउर सज्जनता के छछात प्रतिमूर्ति।

इहाँ के जनम २१ फरवरी १९२३ में बिहार प्रान्त के छपरा जिला में भइल रहे, बाकिर विद्यार्थी जीवन कलकत्ता में बीतल। विद्यार्थीए जीवन से इहाँ के खूब लगनसील आ अपना करतब के दिसाई जागरूक रहलीं। पढ़ाई पढ़लीं त ओइसहीं अउर अपना काम के जिम्मेवारी ढोवलीं त ओसहीं—मेहनत से कबो ना जीव चारवलीं। इहाँ के चउ-तरफा गेयान के बेजोड़ रूप रहलीं। पढ़ाइए के साथ-साथ नाटको के तरफ धेयान रहे। एही ओजह से इहाँ के जिनगी के ढेर बरिस नाटकन के खेले में बीतल। अइसे त दुनिया के मंच प सभ अदिमी एगो कलाकार के रूप में बा आ अपना गुन आ अवगुन के नाटक देखला रहल बा, बाकिर जेकरा में गुन के अधिका रस रहेला, ओकर अभिनय देखनिहारन के मन पर जादा असर डालेला।

लइकन से उहाँ के बहुत सनेह रहे। उन्हनी खातिर त उहाँ के सनेह, अइसन तरल आ गंगाजल अइसन साफ धपधप रहे कि लइका हरदम ओह में गोता मारत रहन। लइकन के देखते उन्हुका आँखिन में विह्वलता के भाव छलछलाए लागत रहे। एह से लइका सभ अपना मने ही उन्हुका से घुल-मिल जात रहलन सें। एक बेरा बाबूजी जब घरे लउटत रहलीं त रहता में उन्हुकरा कँहरत आ खाँसत अवाज सुनाइल। भीरी पहुँचला प ऊ अचरज में पड़ि गइलन। ओह औंधा परल देह के कसहूँ सीधा कइलन। छाया जइसन काया एगो बेमार लइका के रहे, जे खाँसी के मरीज रहे आ खाँसत-खाँसत तबाह रहे। कमलापतिजी धीरे-धीरे ओकर पीठ सुहुरावे लगलन। ओह लइका के देंह, जे पसेना से तरबतर रहे, अंगोछा से पोछ देलन। कुछ छन में आसते-आसते लइका सचेत भइल आ बाबूजी के ओर डबडबाइल आँखिन से देखत इहाँ के भगवाने समुझलस आ इहाँ के जिनिगी भर भगवान के तरह पूजत आइल।

कलकत्ता के सँउसे मल्लिक बाजार इहाँ के साचो के न्यायाधीश मानत रहे। कमलापतिजी के जिनगी जबना टेढ़ रस्ता से गुजरल, ओइसना मे ई कब संभव रहे कि ऊ सभको उपदेस हरदम सुनत रहसु ? एही से उन्हुका अइ-सना उपदेशन मे कुछुओ नयापन ना लउकत रहे। शब्द ब्रह्म हऽ, दुनिया के माया झूठा हऽ, केहू केकरो ना हऽ, एह तरह से चिचिअइला से मंच चाहे जतना काँपे आ गूँजे, बाकिर बिफरल तूफान से कबनो पपीहा के तरास ना बुता सके। शास्त्र कबनो अंधकूप ना हऽ, जबना में गिर के केहू निकल ना सके। फेरु लोग काहे भटकेला ? काहे ना ऊ निधड़क अंजोर में आपन ममता के राह खोजे, जबना जिनगी के रथ दउरल करेला। शास्त्र त हजारन किरनवाला सूरुज हऽ। ऊ रातो हऽ आ दिनो हऽ। ऊ ज्ञानो देला आ अज्ञानो —आने आँख के जोतियो देला अउर चोन्हिआइयो देला। सरधाहीन ज्ञान अहंकार होला। सरधा निहछल मन के उपज बा। काम अध्यात्म ना हऽ। आत्मा के निर्धूम आग काम के भसम कइ देला। कमलापतिजी के शास्त्र के बिसय में इहे बिचार रहे।

कलकत्ता अइसन नगरी में शिक्षा के स्तर ऊँचा करे-वालन में इहों के गिनती होला। इहाँ के बहुते शिक्षा-

www.bhojpurisahityangan.com

संस्थन के खोललीं, बहुते विद्यार्थीन के विद्या-दान करवलीं, बहुते गरीबन के आर्थिक मदद कइके ओकरा जिनिगी के आगे बढ़वलीं, जेकर गिनती ना हो सके।

मल्लिक बाजार में मंदिर बनवा के ओमे बहुत गरीब ब्राह्मन के रोजी-रोटी के प्रबन्ध कइलीं। ब्राह्मन लोग इहाँ के धर्मावतारे मानत रहन अउर आज ले इहाँ के गुन गावत फिरेलन। नाया आ पुराना दूनो तरह के लोगन में इहाँ के एक तरह के प्रभाव रहे। इहाँ के वचन-प्रवचन सुनके भगत लोगन के टोली प्रभावित हो जात रहे आउर हिमका में देखा-देखी सेठ लोग दान देवे लागत रहन। एह ढंग से मल्लिक बाजारवाला मंदिर के आमद में खूब बढ़न्ती भइल। इहे सभ परोपकारी गुन उन्हुका यश के फइलवलस अउर कलकत्ता के बड़े-बड़े लोगन के ऊ पूज्य बन गइलन।

जइसे हजारों-हजार किताबन से सजावल लाइब्रेरी विद्या के ऐश्वर्य नइखे, ओसहीं कवनो मठ भा मंदिर के ऊँचाई, धर्म के ऊँचाई नइखे। धर्म कवनो 'असूर्यम्पश्या' राजकुमारी ना हऽ, जेकरा खातिर मालदार मठ के मजबूत छरदेवाली चाहीं। ओकरा के खुलल धूप, धपधप अँजोरिया भा करिया कुच-कुच अन्हारो में सहजे देखल जा सकेला। मठ से धरम के रोजगार त चलावल जा सकेला, बाकिर धरम ना। धरम लंगड़ ना हऽ—हजार पैरवाला हऽ। सतसंग के इहे मसरफ हो सकेला कि हमरा फेफड़ा के नीमन विचारवाला साँस से भरे। हरिश्चन्द्र चंडाल के ना, धरम के हाथे बिकाइल रहन। शिवि आउर दधीचि के त्याग देवदासी भावुकता के ना, हमार लमहर परंपरा-वाली संस्कृति के कहानी हऽ। भारी विपदा ना झेलला प करुना के सोता सुखा जाई। कमलापतिजा के जीवन त्याग, कठिनाई अउर जोति से जगमगइला के कहानी रहे, जेकरा से अनेकन लोग के जीवन अँजोर भइल।

जइसे अन्हरिया के चादर से चान ना तोपा सके, ओसहीं महापुरुस लोगन के तेज होला। जिनगी में दुख त आवते-जात रहेला, बाकिर ओकरा के अइसन लोग अँजोर-अन्हार के तरह सहज भाव से झेलत चल जाले—तनिको तकलीफ उन्हुका ना बुझाय।

कमलापतिजी के धरम रहे कि जे धनहीन बा, ओकर समरथ लोग सहायता करे। जे बेघरवाला बा, विपद के मारल बा, बेमार होके फुटपाथ प परल बा, जे टूअर अइसन दवा के अभाव में दम तूर देला, जनमे से होनहार रहलो प फीस के बिना ऊँच शिक्षा ना पा सके, आउर जे बेरोजगारी के कारन मारल-भटकल फिरऽता—अइसन लोगन के मदद कइले सभसे बड़का धरम हऽ।

उन्हुकरा नजर में हिंदू आ मुसलमान दूनों बराबर रहलन। मुसलमानन्नो खातिर ऊ ओसहीं दुलारा रहन, जइसे हिन्दुअन खातिर। एक बे एगो मुसलमान भाई पेट्रोल के ३६ गो टीन एकट्ठा कइलन—मल्लिक बजार के जरा देवे खातिर। ओह घरी हिन्दू मुसलमान के दंगा पूरा जोर प रहे। हिन्दू आ मुसलमान में भाईचारा के संबंध करीब-करीब खतम हो गइल रहे। दूनों एक दूसरा के बैरी हो गइल रहलन। बाकिर कमलापतिजी के जसहीं बात मालूम भइल, ऊ अपना जान के परवाह ना कइले, आ मुसलमान भाई लोग के पास जाके पेट्रोल के छतीसो टिन उठा के ले अइलन। मुसलमान लोग उन्हुकर अतना मान करत रहे कि उन्हुकरा के देखते आदर से आपन माथा झुका देत रहे।

अछूतन के उधार करे में ऊ एगो कड़ी रहन। उन्हुकर विचार रहे कि सभ आदमी ओहा परमात्मा के एगो अंश बा। एक बे के घटना हऽ कि एगो जमदारिन रोअत बाबूजी के भीरी आइलि आ कहलसि कि अस्पताल में केहू ओकर सहायता नइखे करत, जबकि अस्पताल रोगियने खातिर बनल बा। ओह जमादारिन के पतोह बेमार रहे आ जिनगी-मउत के बीचे पेरात रहे। ओही घरी उहाँ के जमदारिन के अपना साथे ले गइलीं आ ओकरा पतोह के इलाज करववलीं। रोपेयो-पइसा से मदत कइलीं। ऊ जमादारिन जवले जिअल, तवले बाबूजी के गुन गावत फिरलि।

अतिथि-सेवा के त उहाँ के अहोभाग्य मानत रहलीं। कवनो अतिथि दुआर प चल आवे त ओकर हर तरह से सतकार करत रहलीं। अतिथि से उहाँ के इहे बात करीं, जवन ओकरा से संबन्धित होखे—आने ओकरे सुख-दुख के बात करीं।

इहाँ के मेहरारू के नाम श्रीमती सौदामिनी देवी हऽ जे अरधांगिनी बने के सउभाग पवलीं। एह दूनो मरद-

www.bhojpurisahityangan.com

मेहराल के मोह-ममता लइकन खातिर बाया चिरई के खोंता अइसन रहे। बाया के खोंता बबूर का कँटगर फेंड़ के पातर डेहुंगी प बिया तरोई, आ 'चुचकी लौकी' नियर होला ऊ मूंज के मजबूत रेशा के छीको नियर लटकल आउर ओमें कूटल मूंज के साफ सूथरा रेशा गुंथाइल होला। अइसे त ऊ झूलत खोंता होला—पातर-टहनी के अगिला पुलुंगी से बान्हल, बाकिर आन्ही ओकरा के उड़ा ना सके। झंझा अपना झूला प झुलावत बाया के छोटे-छोटे चूरगन के चुपे-चुपे थपकी दे के चल जाला अउर सटल भगजोगनिन के झिलमिलात अंजोर के ना बुता पावे। अइसन ममता से गूंथल ई लोग के खोंता अपना परिवार के लइकन से रहे, जेकरा से बाधा-बिघ्न कुछना बिगाड़ सकल।

कमलापतिजी पर धरम के अन्हरिया कम जम पावल। अइसे शील आ दया त उन्हुका रोवाँ-रोवाँ में बसल रहे। नीति आ आदर्श के ताना-बाना से त उन्हुकर पूरा जिनिगी बिनल रहे। ऊ जानत रहलन कि धर्म, अर्थ आउर काम तबे समुचित समझल जाला, जब ओकरा से केकरो सुख चाहे आनन्द मिले। अगर खाली अपने सुख मिले, आउर दोसर लोग दुख पावसु, त ई अरथ, धरम अउर काम राक्षसी होला। उन्हुकरा बिचार से दान से धन शुद्ध होला, संतोष से मन शुद्ध होला अउर आचार से तन शुद्ध होला। ई सभ ठीक होला, बाकिर आत्मज्ञान के बिना आत्मा के शुद्धि संभव नइखे। उहाँ के विचार के मोताबिक ई जीवन ओही शून्य में फैलेवाला बेल के तरह से बा, जे शून्य में उगेले, डालपात से लदा जाले, बाकिर फेरू काल के बवंडर में टूट-टाट के छितरा जाले।

इहाँ के अपना मउवति के एक दिन पहिले 'पश्चिम बंग भोजपुरी-परिषद्' के ३० हजार रुपया के रकम दान में दिहलीं। भोजपुरी भाषा से इहाँ के बहुत माह रहे। जे कोई इन्हिका पास कवनो तरह के सहायता खातिर आवत रहे, ओकरा के कबहूं निराश ना लवटे देत रहीं। कर्मठ परोपकारी के साथे-साथ पूरा दानियो रहलीं।

सूरुज अभी उगल ना रहे। अइसे ओकर पहिला ललाई गते-गते पूरब के खिड़की से लउकत चल आवत रहे। ललाई का रहे, परताप के रंग रहे। तेज के गर्मी रहे, जिनगी के बिस्तार रहे। महीन कुहरा के भीतर से लाल कमल अइसन रूप देखात रहे, जइसे कवनो नया दुलहिन लाज के घूंघुट उलटि के सुगन्धित बयार में मीठ मुसकान घोरत होखे। देखत-देखत लाली पर सोना दमके लागल। प्रवाल पर मोती दमके लागल। काल ओही तरह से आ गइल जइसे हियरा के खिड़की के खोल के प्रान के अकेल पिंजड़ा में अलसाइल आत्मा से छेड़खानी करे आ गइल होखे। अइसन सुन्दर फजिर में ई तुरते के खिलल कली पता ना खिले के बदले सूखल पतई के मर्मर ध्वनि में कइसे बदल गइलि।

जइसे बुताइल दीया के बत्ती उसका दिहल गइल होखे। देखते-देखत ई सोभाविक दमकत सुन्दरता बुता गइल। रंग शून्य के समाधि में समा गइल—अंजोर अन्हार में बदल गइल। पतझड़ के फुलवारी नियर सभ कुछ ठूंठ सूना-सूना लागे लागल। रूप के अरूपता मउवत के साया में सहमे-सिहके लागल। आने १९ सितम्बर १९७८ के अन्हरिया आके हमनीं के बीच से ओह आत्मा के अपना करिया चादर से ढांप देलस अउर बिड़ला-जूट के मैनेजर के एह धराधाम से अलोत कइ देलस।

द्वारा—श्री राधामोहन सहाय;
नागेश्वर कॉलोनी;
बाकरगंज, पटना-२

www.bhojpurisahityangan.com

स्केच

धरिछन काका

श्री ब्रजकिशोर दूबे

गाँव के पुरनिया लोग कहेला कि धरिछन काका के बाबूजी के तीन गो बिआह भइल रहे। कुल्हि लइका-फइका जामते मर जात रहन सें। तिसरकी मेहरारू से बड़ा जग-उग कइला पर एगो लइका बाँचल। बड़ा धरीछना से भइल रहे, एह से जीये खातिर एकर नाँव धराइल धरीछन। धरीछन अब कुछ बुढ़ा गइल बाड़े।

कतना लोग त उन्हुका के 'नकफोफड़ों काका' कह देला। साँचों ए महाराज! एक-से-एक नाक होई, बाकिर ओइसन धराऊँ ना। बुझाला कि दूनों बिलन में एकक गो कागजी नेमो मजे में आँट जाई। मराछ भइला का चलते उन्हुकर नाँक छेदाइल रहे। के जाने कइसे छेदाइल रहे कि एक ओर के नाँक नदारते समझी।

कतना काकी के साध लागत होई कि एको छन खातिर काका के मुँह बन्न रहित। का बन्न रहो! आगा के बीचवाला दू गो दाँत ओठ के अइसे दबवले रहेला, जइसे पिलवान हाँथी के कपार में गजबाँक भिड़वले होखे। ऊपरवाला ओठ जिनगी भर छछनते रह गइल कि तनिको भ निचिला से सट के जुड़इतीं। मुँह में बस कुलम दुइए गो दाँत, उहो हिलत रहेला। गोतिया किहाँ छन प से खा के उतरत खा भतुआ अइसन ढिमिला गइल रहन। बाकिर सुकुर भइल कि परात दरसन देवे खातिर दूनो दाँत हिलिये के रह गइलन सें। हाथी के दाँत निकलल रहेला त पीतर-सोना मढ़ के ओकरा के सोभनउग बनावल जाला। मगर ककी कम दुलार ना करसु—दूनो दाँतन के। सपनो में अँगुरी ना घुमावसु ओहनी प। दूनो दाँत पितराइले रहेला। लागेला कि मुँह में से हरदी के दूगो टूसी निकलल आवत होखे।।

हाय रे मुँह! एक त साँवर दोसरे राम के सं बारल घइल लोढ़उवा आम! भर-मुँहे माता दाई के दाग, जइसे सीत होखे, जवना में के गोइठा छोड़ा लेल गइल होखे। निचिला ओठ प एगो आध कनवाँ के मासा। साइत बरहमा जो धरीछन काका के मुँह बनावत-बनावत हरान हो गइल होखिहें, एह से सोचले होखिहें काहाँ का राखीं, काहाँ का? उन्हुका अनकस बरल, बस मुँहें प एगो लोंदा घइ के चल देले।

मुसुकी ढेर तरे के होले। बाकिर काका के अदउरा नीअन उभड़-खाभड़ ओठन प खाली चवन्निए ठनके ले। हँसला के त कवनो पूछहीं के नइखे। ठीक जइसे राना परताप के चेतक हेहनात होखे। धेयान लगा के सुनला प ना बुझाय कि कनस्तर भभकता कि फुटही पतुकी।!

रह-रह के साँप नीअन लुब-लुब जीभ बहरी निकलत रहेले। साँपों में थुथुर, जेकर मुँह कबो-कबो खुलेला। ककी कबो-कबो खिसियालन। ओह घरी टेप करे जोग बोली हो जाला। बुझइवे ना करे कि काका का बोल गइलन अउर कवन-कवन गारी देलन। अइसे त उन्हुकर बोली लइकइएँ के थेथराह हऽ, बाकिर खिसिअइला प मुँह गाज से भर जाला। लागेला जइसे अधमनवाँ बेहुँड़ी में माठा महाता। उन्हुकर गारी गाँव के लइकन खातिर लयन अइसन चिक्कन होला। लइका कहेलन सें धरीछन काका, माठा। जतने लइका 'माठा' कहिहन सें, ओतने काका के मुँह में माठा महाये लागेला। धरीछन काका लइकन के जतने खदेरेलन, लइका ओतने 'माठा-'माठा' चिचियात भागेलन सें। डेंड़टूटी घोड़ी के दुलकी अइसन धरीछन काका के घउगल लइकन के अउरी नीक लागेला।

काका के कपार त अजायबघर वाला लोग के रिजर्व करवा लेवे के चाहीं। डॉ० भभो के अइसन कपार ना होई। एकदम घइल अधमनवा कोंहड़ा। ओकरा प बार अइसन कि डर लागेला कि कहीं अकेला मे कवनो घोड़ावाला खरहरा बनावे वास्ते नोचि मत ले। ओकरा पाछ,

www.bhojpurisahityangan.com

पियाज के लटकत पतई लेखा चुरुकी। रंग ठीक ललकी लोहचूंटी लेखा, जेकरा आगे भैंइसि के पोंछ मुरुछा जाला। बुझाला कि ओह जनम के पुन्न से खुस होके भगवान अपना खास मलखाना से धराऊँ कपार निकाल के काका के गरदन पर चढ़ा देले बाड़े। ओह कपार के ऊपर लिलार से चुरुकी तक एगो अइसन डाँड़ि कि लागेला कि बीच में पगार देल होखे। भगवान देलन, बाकिर पूरा-पूरा ना देलन। अगर दूनो ओरे मुँह दे दिहितन त काका कम-से-कम ब्रह्मा के आधा त हो इए जइतन आ घरे बइठल देखनिहारन से उन्हुका पइसा बरिसत रहित।

एक जगे तिलक में एगो खुरचालू लइका चिढा देलस—का बाबा, सरकस में से भागि के आइल बाड़ऽ का ? मत पूछीं ! काका लगलन माठा महे अउर लेलन लखेद। ना घराइल। का करसु ? अतना लमहेंग आ टेंगरी बाँगुर कि दउरले ना जाय। मगर अइसे डग लमहर धरेलन। कतनो चाकर 'करहा' चाहे कतनो ऊँच पगारि होई, चुटकी बजावत नाप देलन। उन्हुकर गोड़ देख के ऊँट बलबलाये लागेला। छोट-छोट अदिमि भोरी खाढ़ होखेलन त काका सीढ़ी लेखा बुझालन। छोट-मोट लोगन के उन्हुका मुँह पर ताक-ताक के बतियावे में गरदन मुरुक जाला। जवना हितई में जालन, आपन कपार फोर के लवटेलन। अतना बड़ दुआरि के राखो ? मगर धरीछन काका के अपना बाबूजी का बनावल घर के दुआरि फेरू से बनावे के पड़ल रहे। हितई-नतई में सभसे जादा तकलीफ धरीछन काका के एह बात के होला कि बड़-से-बड़ खटिया देलो प उन्हुकर टेंगरी गोड़तारी वाली पाटी मे बाहरे निकलल रहेले। एह से ऊ हितई-नतई में भूँइए सूत जालन।

चलत खा रह-रह के दहिनवारा गोड़ पाँछा मुहें झारेलन। लागेला टनकवाह भइल होखे। एँड़ी जमीन से एक चई ऊपरे रहेला। लागेला जमीन ना छूए के किरिया खइले होखे। खाली चवे प लंगूर लेखा ढउकत चलेलन। तरवा में सँउसे दुनिया भर के नकसा बरमहल तइयार बा। पुरवा हवा उन्हुका खातिर बड़ा दुखदायी होखेला—बेवाय तानेला त चलल-फिरल बन्न हो जाला।

के जाने काहे दो बँवरा हाँथ पीपर के पात अइसन डोलत रहेला। कवनो भगिनो त नइखे कि ओकरा प तबड़ाक चलवले होखसु। बढ़ियाँ पेन्हन पहिर-ओढ़ के चलेलन त दूनों हाथ डाँड़ के साथे अजबे कमाल देखावेला। शक हो जाला कि कवनो लखनउवा....चाल आवऽता।

तरहथी कइसनो गाल प एक बेर मोलायमियतो से घुमा देलन त लागेला कि पीसल मिरचाई छोपा गइल। एही मारे फगुआ के दिन केहू अबीर ना उन्हुका से लगवावे। तरहथियो अतना रुखर कि जइसे कातिक में गहूँम बोवेवाला उखड़ल खेत में दरार फाटि गइल होखे।

गोरू-बैल के त काका काले हवन। जवन बैल राह छोड़ के तनिको एने-ओने चल दिहन, चाहे दोसरा बैल के नाद पर लागि जइहन, उन्हुकरा शामत सवार हो जाला। काका कहेलन—काहे ओने गइले—काहे दोसरा के नाद पर लगले। तुरंते पूछे लागेलन आ अइसन कड़ेर केहुनाठ दे देले कि ऊ एकदमे दण्डवत बोलि हेले सँ। इन्हिका के देखते बैल-गोरू थर-थर काँपे लागेलन सँ। काकी डरे ना बोलसु, नाहीं त उन्हुकरो टेंगरी चिराये लागी।

एक बेर बहुत पहिले जेठ के दुपहरिया में कुछ खेंचड़ चरत रहन सँ। काका आव देखलन ना ताव। एगो प चढ़ गइलन अउर दुलुकी चला देलन। अहरा के पींड़ी प अइसन पटक-लस कि डाँड़ टेढ़ हो गइल। तब से पुरुवे ना, कवनो हावा बहे, रात में कँहरत रहेलन, जइसे पूस-माघ के रात में पुअरसी प बैठ के पिल्ला गला बनावत होखे। तबे से ढकचे लगलन।

केहू के छाती में बार रहेला त कहल जाला कि भागसाली बा। इहाँ काका के भर देंही एकक अँगुरी के बार बा। अब मुँह के बरियारी से भले केहू उन्हुका के ओह जनम के भालू कहो, मगर ऊ त भागसाली बड़ले बाड़न। काहे कि उन्हुकर मेहरारू हजारो मेहरारून में एगो परी बाड़ी। गाँव-घर के लोग कहेलन कि सोना के ढरी प कोइला के बढ़ावन भगवान धइ देले बाड़न। बाकिर काका खातिर त कोइला के ढेरी प सोना के बढ़ावन रूप में काकी बड़ले बाड़ी। अइसन भागसाली सोंचहूँ के बा ?

एक बे उन्हुकर एगो हीत के पढ़निहार लइका उन्हुकर फोटो खींच के देखावे खातिर ले आइल। बस मत पूछीं, काका कटपउरी उठा के लखेद लेलन—'ससुरा, हमरा से

(बाकी पे० ७०)

www.bhojpurisahityangan.com

गन्दा गली

राधाकृष्ण प्रसाद

गन्दा गली से जात बेरा ओकरा मन में 'घिन' भर गइल अउर बुझाइल जइसे कंठ में खखार अटक गइल बा। ओकर मन कइलस कि नाक पर रूमाल राखि के ऊ जलदीए निकसि जाय, मगर अइसन कइला पर गली में रहेवाला लोगन के जबून बुझाइत अउर ऊ अइसन करे के ना चाहत रहे। गली में कच्चा-बच्चा लोग बेधड़क आपन पेट साफ करत रहे।

ऊ सोचे लागल—अतना बड़-बड़ योजना के बादो गलियन के हाल अइसन काहे बा? एकर रूप काहे बिगड़ल जात बा?

बिगड़ला के बात सोचते-सोचत ओकरा ओठ प मुस्की आ गइल 'आज-काल्ह ढेर लोग अकविता अउर अकहानी के आन्दोलन चलवले बा।' अगाड़ी में एगो भँइसि आवत रहे अउर ओकरा पाछे-पाछे एगो ग्वाला रहे जेकरा हाथ में खाली बाल्टी रहे। भँइस से बाँचे खातिर ऊ अउर कोना में सटकि गइल। बाकिर पाछा में लइकन के पेट साफ कइल अइसन 'चीज' रहे कि ओह से बाँचल ओकरा बहुत जरूरी बुझाइल। ऊ इहे सोचते रहे कि एगो म.ःल बहेड़ा अइसन छोकड़ा घंटी टुनटुनावत साइकिल प दनदनाइल निकल गइल। ऊ छोकड़ा बाड़ा मस्ती में रहे अउर बम्बइया फिलिम के एगो चालू गाना गावत रहे। ओकरा बड़ा ताज्जुब बुझाइल कि अइसन गन्दा गलियों में लोग मस्ती में रहेला। ओकरा त साफ-सुथरा जगहा में (किरानी बाबूवाला सरकारी क्वार्टर में) रहे के आदत बा अउर एही से ओकरा अइसन गली से चले में कइसन दो लागत रहे। मगर बेचारा के त मजबूरी में एन्ने आवे के पड़ल रहे- बहिन के बिआह खातिर।

पुरजा निकालि के ऊ फिर पता पढ़े लागल। कतहीं गलती से ऊ दोसरा गली में त ना चल आइल? बाकिर गलिया में घुसले बखत विसेश्वर दास लेन के साइन बोर्ड ऊ देखले रहे, एही से ऊ बाबू मुकुन्द दास के घर ढूढ लागल। ऊ एगो बड़ अउर भकसावन गली रहे, जहाँ दिन में एगारह बजलो पर सूरज के रोशनी ना पहुँचल रहे। पुर्जा निकाल के ऊ फेरू एक बेरि पढ़लस तलें एगो बूढ़ चंडूल आदिमी भेंटा गइलन। उन्हुकरा हाँथ में अखबार रहे।

'अपने के....?'

'केकरा के खोजत बानी?'

'लाला मुकुन्द दास के।'

'हमरे नाम हऽ।'

'हम अपनेहीं के पास आइल बानी।'

'राउर परिचय?'

'हम सचिवालय में असिस्टेंट बानी।'

'कइसे आवे के भइल हा?' समुझिओ के लाला मुकुन्द दास पूछले।

'बिआह के बारे में....'

'राउरे लड़की हऽ....?'

'जी ना, हमार छोट बहिन हऽ। एही साल बी० ए० पास कइलसि हा—सोसियोलाजी आनर्स के साथे।'

'हेने आईं—' कहि के ऊ कोठरी में घुस गइलन। कोठरी एगो छोट आ पुरान रहे, जेकरा में नया-पुराना अतना जादे कलेंडर आ देवी-देवता के फोटो टाँगल रहे कि ओकरा नीमन ना लागल, कइसन दो बुझाइल। कोठारी के बीच में एगो चौकी रहे। ओकरा अगल-बगल दूगो काठ के पुरान कुर्सिओ धइल रहे। (बइठते-बइठत मुकुन्द दास पूछ देलन—

'राउर घर....?'

'हम गरदनीबाग क्वॉटर में बानी....'

'असल घर कहाँ हऽ?'

'जी, भोजपुर जिला के सिनहा गाँव में। बाबूजी

www.bhojpurisahityangan.com

प्राइमरी स्कूल के माहटर रहन....'

'उहाँ के अबही कहाँ बानी ?'

'जी, उन्हुकर सरगवास भइला पाँच साल हो गइल। हमरे ऊपर घर के सभ भार बा। तीन गो छोट भाइयो बाड़न सें आ दू गो बहिन....। हमहीं सभ से बड़ हईं। सात-आठ साल से नौकरी में बानी।'

'हूँ' कहि के ऊ कुछ सोचे लगले। फेरु जइसे उन्हुका कुछ इयाद आ गइल—'रउआ हमरा लइका के देखले बानी....?'

'जी !' 'कहाँ देखले बानी ?'

'जी० पी० ओ० में। एगो साथी से उन्हुका बारे में पता लागल रहे।'

'महेन्दर....!' बाबू मुकुन्द दास जोर से पुकरलीं। मइल पायजामा पहिरले एगो लइका बाहर आइल। ओकरा हाँथ में 'बीज गणित' के किताब रहे। ऊ सवालिया चेहरा बना के खड़ा हो गइल।

'हमार सभ से छोट लइका हऽ। एन्ट्रेन्स के इम्तहान दिही।' फेरु ओकरा तरफ देखि के कहले—'जा, जल्दी से दू कप चाय लेले आवऽ।'

'जी !....' ऊ लइका मुँह लटका के चल गइल। ओकर चेहरा से बुझात रहे कि ऊ बहुत खिसियाइल बा-ओकरा पढ़ाई में बिघिन पड़ल रहे। एतवार के दिन त असहीं बीत जाला। भर दिन कइसन-कइसन लोग भइया के बिआह खातिर आवेला अउर बाबूजी बाड़न कि खाली मोले-तोल करत रहेलन। बड़का भइया कवन उजियार बाड़न। एम० ए० पास कइला के बादो दू सै रुपया के नौकरी पोस्ट ऑफिस में लागल। भर दिन खाली मनिआर्डर के रसीद काटेलन। ई काम त मिडिल फेलो कइ सकेला ?

'रउआ शायद ना मालूम होई। हमहूँ स्कूल टीचरे रहली हाँ। पैंतीस बरिस ले हिसाब आ भूगोल पढ़वले बानीं। राउरो बाबूजी त टीचरे रहलीं।'

ऊ चुप सुनत रहे।

'मास्टरीए कइ के सात-सात बच्चन के पढ़वलीं। तीन गो बेटी के बिआहो कइलीं। एह घर में किराया में आइल रहीं, बाकिर भगवान के मरजी से अब ई घर खरीदा गइल।'

ओकरा बुझात ना रहे कि हमरो कुछ बोले के चाहीं कि चुप रहे के चाहीं। एकाएक उहाँ के पूछ देली—'राउर बिआह त हो गइल होई....'

'जी, चार गो लइकिओ भइली सें।'

'खाली लइकीए ?'

'जी' ! जवाब देत खा ओकरा बुझाइल कि ऊ कवनो सजाय पावेवाला अदिमी होखे।

'आज-काल्ह त जेकरा एगो लइकी बिया, उहो परेशान-परेशान बा आ जकरा घर में चार-चार लइकी होखे....'

'बिआह लायक दू गो बहिन हो गइल बाड़ा सें'....ऊ दुखी होके जवाब दिहलस।

'रउआ एम० ए० हईं ?'

'जी.....'

'कवन सब्जेक्ट में ?'

'जी, फिलासफी में, सेकेंड क्लास।'

'आज-काल्ह कोई फिलासफी पढ़ेला ?' रउआ हिसाब चाहे इकनामिक्स पढ़े के चाहत रहे। ओकरा समुझ में ना आवत रहे कि ऊ एह बात के जवाब दे कि चुप रहे। फेरु एकाएक ओकरा धेयान आइल कि ऊ जवन बात खातिर इहवाँ आइल बा, ऊ रहिए गइल। ऊ बोलल—'जी मनोरमा पढ़े में बहुत तेज बिया....'

'कवन मनोरमा....' अबकी बेरि उहाँ के चउक गइलीं।

'जी, हम अपना बहिन के बारे में कहत रहीं। मैट्रिक फर्स्ट डिविजन, इंटर सेंकेड डिविजन, सोसियोजाली में आनर्स के साथे बी० ए....०'

राउर बहिन के रंग कइसन बा ? गोर बिया ?'

'जी, बिलकुल गोर त ना, बाकिर साफ कहल जा सकेला।'

'बुझ गइलीं—आने साँवर बिया....।'

बात त ठीके रहे कि ओकरा बहिन के रंग साँवर रहे और साँवर रंग के लइकी के माँग बिआह के बाजार में नइखे। ऊ बीसो घर घूम चुकल रहे अउर लइका

www.bhojpurisahityangan.com

बाला पहिला सवाल इहे करत रहे—'लइकी के रंग कइसन बा ?'

ऊ उन्हुका के बतलावल चाहत रहे कि लइकी के नाक-नक्सा बहुत बढ़िया बा—बाकिर लोग ओकरा बात के अनसुना कइ के बहाना बना के टरका देत रहे। जहाँ केहू आगे बात बढ़ावे के तैयारो भइल, तो दोसर धमाका होत रहे—'कतना खरच कइ सकीलें····?'

'जी, हमार हैसियत····।'

'एगो अन्दाज दीहीं····।'

लोग ओकर बात सुन के एकदम दार्शनिक मुद्रा बना लेत रहे। एक जगहा त ओकरा सुने के मिलल—'आज-काल्ह दू-तीन हजार में पोतरो के गहना ना बन सके····। रउआ मालूम बा, सोना के भाव····?

'जी, कबहूँ सोना खरीदे के मोका नइखे मिलल।'

'जाईं····भाव पता लगा के आईं।····'

लाला मुकुन्द दास ओही अन्दाज में कहले—'चलीं राउर बहिन पढ़ल-लिखल बिया, बिआह कइल जा सकत बा। कतना खरच करब····?

'जी; इहे तीन-चार हजार····' आगे ना कुछ कहि सकल। ओकरा कंठ में थूक जइसे सरक गइल ! लाला मुकुन्द दासजी के चेहरा निर्विकार हो गइल। अइसन बुझाइल जे उहाँ के 'स्थित (प्रज्ञ)' हो गइलीं। बोललीं—बीस के ऑफर त सबेरे छपरा जिला के एगो सज्जन दे गइले हा। कहत रहन लइकी गोर बिया····अब रउए कहीं····?

बेचारा बुझ गइल। हताशमन ऊ कुरसी से उठके खड़ा हो गइल। 'प्रणाम करे के मुद्रा में हाथ जोड़ के कहलस—'अपने के बहुत तकलीफ देलीं····?'

'आरे····रउआ चाह त पीअत जाईं ! आज-काल्ह चीनी मिले में जे दिक्कत बा····' कहि के लाला मुकुन्द दास उठ के खड़ा हो गइलन।

ऊ तेजी से गली पार करे लागल। आवे के बेरा गली के बदबू से नाक फाटत रहे। लेकिन अचरज के बात कि लवटत खा गन्दगी तनिको ना बुझाइल। ओकरा अइसन बुझात रहे जइसे ऊ सचिवालय के कोलतार वाला साफ पकिया सड़क पर चल रहल बा।

शारदा कुटीर
१७, श्रीकृष्ण नगर, पटना—८००००१

✠

(पेज ६७ के बाकी)

चउल करे आइल बा। अपना बाप के फोटो काहे नइखे देखावत।' असल बात रहे कि फोटो नीमन त आइल ना रहे, मगर ऊ का करो, जइसन चेहरा रही; ओइसने नु फोटो आई।

बाकी चाम पेयारा ना; काम पेयारा हऽ। काका के रोइएँ-रोइएँ रेंगत रहेला। केहू किहाँ कार-परोजन होई त काका आह अपना परोजन अइसन भिड़ल रहेलन। हिरदय अतना मोलायम कि ओतना त सीरीस के फूलो ना होई। केहू के बेटी के ससुरा जात खा रोलल सुन के ऊ रोवे लागेलन। देखेवाला के करेजा फाटे लागेला।

सालो भर भोर में पराती गावेलन। गाँधीजी के बाद रामराज के सपना अब खाली कके देखनिहार बाड़े। कस बान्ह, का बड़; केहू किहाँ परला-हरला में कमर कसि के भिड़ जालन। बेचारी काकी कवन-कवन करम ना कइली उन्हुका के रोके के; बाकिर काका त मिजाज के महराज हवन। मंगर के दिन महावीरजी के मंदिर में रमायन गवावेलन आ सभका के अपना घरे बीजे करावेलन। एह सम कामन में भला काका से के हाँथ मिलाई ? परवचन ! मानस के चउपाई बोले में त नीमन-नीमन रमएनिहा लोग के घुरछक छोड़ा देलन।

सरगवासी लाल बहादुर शास्त्री जी के बाद अगर केहू एह घरी देस में गुदरी के लाल बा, त ऊ कके बाड़न। कुछुओ कहीं, ! जइसे एह घरी 'चाह' दू गो बा—चालू आ इसपेसल ; ओसहीं भगवानो के दू गो कोटा बा। काका सोरहो आना 'इसपेसल कोटा हवन, जेकरा के भगवान एतवार के दिन खा-पी के लेटले-लेटल खरकटल माटी के तेल में सानि के गढ़ले ! एह से उन्हुकर चेहरा-मोंहड़ा अइसन बा, बाकिर करेज बहुते मोलायम। जीअत रह ए ककवा सेन्ह प धरइला चोरन के उमिर ले के ! छछात अवतारे बाड़ऽ तूँ।

ग्राम-मंगरवलिया
पत्रा०-सखरा, रोहतास

✠

www.bhojpurisahityangan.com

क्रिकेट-कमेंट्री

रामेश्वर सिंह 'काश्यप'

सनक दू तरह के होला। एगो ऊ जे कवनो आदमी के कपार पर सवार हो जाला। ई लाइलाज बेरामी ना हऽ। डांट-डपट, लप्पड़-थप्पड़, टोना-टोटका से काबू में ना आइ-ल त सिक्कड़ में बान्हि के रोगी के कांके के पागलखाना में पहुँचावे के परेला। ई सनक रोगी के अलावा ओकरा हित-मित्रन के आउर ओकरा परिवारे के तकलीफ पहुँचा-वेला। दोसरा सनक के रूप महामारी लेखा होला। ई पूरा समाज के महमंड पर कब्जा जमा के आपन डंको बजावे लागेला। कबो-कबो पूरा देसे एकरा चपेट में आ जाला। ई ऊ साँप हऽ जेकरा कटला के मंतरे नइखे। सुरुज पच्छिम में उग सकेला, बालू से तेल निकल सकेला, पत्थल पर दूब जाम सकेला, बाकि सामूहिक-सनक के दवाई ना हो सके। एकरे के धेयान में राख के कहल बा कि 'एक जे होय त ग्यान सिखाइए, कुपहिं मे इहां भांग परी है।'

सामूहिक-सनक के एगो नमूना रेडियो कमेंट्री ह, जे मोका अइला पर चारों ओर घूर भरल आन्ही लेखा छा जाला। ओइसे त रेडियो से कमेंट्री बहुत किसिम के होला। गणतंत्र दिवस, स्वाधीनता दिवस जइसन राष्ट्रीय पर्बन के बेरा भा कवनो बहुते महत्व के घटना के रेडियो पर कमेंट्री के जरिए आँखिन देखल हाल सुनावल जाला आ एकरा के ढेर लोग चाव से सुनाबो करेला, बाकि ई कमेंट्री ऊ चीज ना हऽ जेकरा के हम सामूहिक-सनक कहत बानी। कमेंट्री चाहे जे तरह के होखे, बाकि कमेंट्री से आज काल्ह क्रिकेट टेस्ट मैचे के कमेंट्री समझल जाला। इहे ऊ कमेंट्री हऽ जे सउँसे देस के फींच के आ झपिला के रख देला।

जहाँ कौनो क्रिकेट-मैच शुरू भइल कि लोग के कमेंट्री सुने के निसा चढ़ल। सब कुछ छूट जाय त छूट जाय, कमेंट्री सुनल ना छूट सके। एह मोका पर नया ट्रांजिस्टर किनाए लागेला, पुरान में नया बैटरी भराए लागेला। घर में कमेंट्री, दफ्तर में कमेंट्री, सड़क पर कमेंट्री, जहाँ देखीं तहें लोग क्रिकेट के कमेंट्री सुन रहल बा। ट्रांजिस्टर के माँग कतना बढ़ जाला, एकरा पर एगो अखबार में कार्टून देखले रहीं। जइसे तरकारी बेचेवाला दउरी में रमतोरई, नेनुआ, करैली मूँड़ी पर रखले गली-गली गोहरावत फिरेलसन, ओइसहीं ओह कार्टून में, एगो आदमी दउरी में ट्रांजिस्टर गंजले पुकारत रहे—'ट्रांजिस्टर ले ल, कमेंट्री सुन ल।' कार्टून बनावे वाला के व्यंग्य लोगन के कमेंट्री के सवख भा सनक पर करारा चोट करत बा।

जब कवनो टेस्ट मैच होत रहेला, ओह घरी केहू केहू से पूछे—'काजी, का हाल बा ?' त एकर ई माने ना होखे कि राउर तबियत भा रउरा परिवार के लोग के समाचार कइसन बा ? बलुक ई होला कि कमेंट्री के मोताबिक टेस्ट मैच में के खेल रहल बा ? केतना रन बनल ? केतना विकेट गिरल ? शब्दन के अर्थ पर देस, काल, कहेवाला आ सुनेवाला के असर परबे करेला। अगर पोस्टमैन कहे कि—'तार ले लीं' त ओकर मतलब लोहा के तार भा बिजली के तार ना होखे, डाकखाना से आवेवाले समाचारे वाला तार होला।

जहाँ सउँसे देस क्रिकेट कमेंट्री सुने के पाछा पागल बा, उहाँ अपवाद जइसन, कुछ लोग हमरो लेखा बाड़न जेकरा ना क्रिकेट के खेल बुझाय ना कमेंट्री सोहाय। एकरे खातिर हम समाज में नक्कू समुझल जाईं ला, संगीसाथी हमरा के नीरस मानेलन, परिवार के लोग पुरान पंथी समझेलन। ई अकलंक छोड़ावे खातिर कबो—कबो जीव जाँत के हमहूँ क्रिकेट कमेंट्री सुने आ समुझे के कोसिस कइलीं, बाकि इचिको मन ना लागल, कुछओ पल्ले ना परल। एह खेल के हमरा कवनो ओरे-छोर ना बुझाइल। हमनीं के लइकाईं में क्रिकेट के खेल बहुते कम रहे। एकरा के हमनीं के राजा-राजवाड़न, नवाबन, जमिंदारन आ अफसरन के खेल मानत रहीं, जेकरा में खेल कम आ रईसी अधिका होला। ओह समय ना घरेघर ट्रांजिस्टर पहुँचल रहे ना हिन्दी में क्रिकेट कमेंट्री होत रहे।

www.bhojpurisahityangan.com

अब क्रिकेट में देखादेखी मन लगावे के कोसिसो करीलीं त मन छान पगहा तुड़ा के अलफ लेबे लागेला। बूढ़ सुग्गा भला पोस मानेला? जब लोमड़ी के ऊँच डाढ़ पर के अँगूर ना भेंटाइल त ओकरा खातिर अँगूरे खट्टा हो गइल। ओइसहीं क्रिकेट के नावें सुन—सुन के हमरो मन खखुआए लागेला। हमरा अपना देस में क्रिकेट के सबख एगो नकले बुझाला। हमनी के नंबर एक नकलची हो गइल बानीं। खास कइके दोसरा देसन के खराब चीझन के नकल करे में त हमनीं के मोकाबिला नइखे। पुरान कहावत बा 'खाए के ठेकान ना, नहाए के तड़के,' ओही तुक पर नया कहावत गढ़ल जा सकेला 'रोजी के ठेकान ना आ खेले के किरकेट', भा 'ई मुँह आ मसूर के दाल', के जगह पर 'ई बेकारी आ किरकेट के सबख'? अँग्रेज चल गइले, बाकि अँग्रेजी आ क्रिकेट छोड़ गइले। भला ई कवन खेल में खेल ह कि महिन-बन ठुकुर-ठुकुर चल रहल बा, लाखन रोपेया स्वाहा हो रहल बा, आ सउँसे देस काम-धाम छोड़ के तोसक-तकिया लगा के कमेंट्री सुन रहल बा। ई सभ त ओही के सोभा दोही जेकरा भीरी अनठेकान पइसा होखे आ इकरात समय होखे।

आज-काल्ह क्रिकेट से अपना के कसहूँ जोड़ल एगो सामाजिक प्रतिष्ठा के बात हो गइल बा। जे जिनगी भर क्रिकेट के बैटो नइखे छुअले, उहो क्रिकेट के खेलाड़िन वाला टोपी पेन्ह के गली-गली मारल फिरत बा। आज काल्ह गाँवों में भइँस के पीठ पर ट्रांजिस्टर कान्हा में लटकवले लोग लउक जइहें। एगो हितई में गइल रहीं। देखलीं कि कान में जनेउ के तीन लभेरा लपेटले एगो बाबू साहेब एक हाथ में लोटा आ दोसरा में ट्रांजिस्टर लेले मैदान जात बाड़न। ट्रांजिस्टर पर क्रिकेट के कमेंट्री चालू रहे। देख के जीव जर-भुन गइल बाकि, कुछ बोलली ना।

टेस्ट क्रिकेट के मैच जहाँ सुरु भइल कि हमरा तरवा के लहर कपार पर पहुँचल। एह देस में बान्ह बनल सुरु होके रुक जाई, जरूरी नहर आ सड़क बन्द हो जाई, सुखार आ बाढ़ के रोके के उपाय कागजे पर धइल रह जाई, बेकारी आ [illegible] तरीका चुनाव के नारा बन के रह जाई,

क्रिकेट के शृंखला ओरा ना सके। रक्त बीज लेखा एक से दोसर, दोसरा से तीसर बढ़ते जाला। जहाँ टेस्ट क्रिकेट सुरू भइल कि घर में हमार हालत छुतिहर हाँड़ी लेखा हो जाला। केहू के कमेंट्री से एतना फुरसते ना रहे कि हमरो पर धेयान दे। बेटी-पतोह लोग के संगे श्रीमती-योजी सींग कटा के बाछी बन जाली। क्रिकेट के चौका के फेर में रसोई घर के चउका बिसर जाला। मँगलो पर चाय ना मिली। मिलबो करी त सेराइल, उहो घंटा भर गोहरवला पर। कमेंट्री सुने के फेर में कहिओ दाल जर जाई, कहियो तरकारी, कहियो सभ केहू तरकारी में नून डाल दी, कहियो केहू ना, कहियो भात गील हो जाई, कहियो रोटी काँचे रह जाई। केहू के अतनो सँवस ना लागी कि हमरा पेंट कमीज के टूटन बटम टाँक देउ। आफिस जाईं त उहे हाल। हर टेबुल पर एगो ट्रांजिस्टर चालू बा आ दस आदमी एतना धेयान लगा के सुनत बाड़े, जेतना लव-लीन होके हमार चाची सत्यनारायण स्वामी के कथो ना सुनत होइहें। केहू फाइल मँगला पर अइसे अनसा के ताकी जइसे कहत होखे – इहाँ सउँसे देस के इज्जत क्रिकेट के मैदान में खतरा में परल बा आ रउआ फाइल सूझ रहल बा?

साँझ के समय काटे कवनो दोस्त इहाँ चल जाईं त उहो इहे हाल। रेडियो के क्रिकेट के कमेंट्री पर डबल कमेंट्री चल रहल बा। लोग दू दल में बँटा गइल बा। केहू केहू कवनो खेलाड़ी के तारीफ में टेबुल पर एतना जोर से मुक्का मारत बा कि टेबुल पर से पिलेट प्याली उछिल के भुइयाँ गिर के चकनाचूर हो जाता, केहू कवनो खिलाड़ी के बोलिंग के तारीफ करत-करत कुर्सिए उठा के सड़क पर बोग देत बा। एकरो पर कम बहस ना होखे कि कवन खिलाड़ी गुलाबजल में फुलाबल बूँट के जलपान करेला अउर कवन छिलका समेत कबूतर के अंडा के नास्ता करेला। रेडियो कमेंट्री से कतहूँ निस्तार नइखे, चाहे घर रहीं भा दफ्तर में भा दोस्त के डेरा पर।

एक दिन हमार एगो अमीर रिस्तेदार मोटर पर अपना पूरा खंदान के संगे अइलन। सभ लोग के हाथ में अजब-अजब तरह के ट्रांजिस्टर रहे आ कमेंट्री चालू रहे। हमरा इहाँ त एके ट्रांजिस्टर से दिन के चैन आ रात के नींद हराम हो गइल रहे। देखते मिजाज अगिया बैताल हो गइल कसहूँ ऊ लोग के स्वागत में नकली मुस्कान के

www.bhojpurisahityangan.com

तिनका के काट

श्रीप्रभुनाथ सिन्हा

मनलीं—
कि जिनिगी आ जिजीविसा में
बड़ा गहिन संबंध होला
आ हरेक अदिमी के भीतर
अदिमी भइला के एहसास
एगो नदी लेखा होला
जे लगातार जतना पानी बहा देले
ओतने अपना उद्गम से पाइओ जाले।
बाकिर हम त खाली एगो तिनके लेखा बानीं
जेकरा के समइए के गंगा
गति देले।
तूं मरजादा-पुरुसोत्तिम बनऽताड़ऽ
त काहे नइखऽ बूझत—
कि राम के भीतर के नदी
अपना किनारन के तूरि के
कबो केहू खातिर संकट ना बनेले,
'आर्गस' ना बनेले,
आँखि ना देखावेले,
कबो केहू के जतरा में
बीचे में टाँग ना अड़ावेले।
हमार अवाज अगर सुने के चाहऽताड़ऽ
त तुहूँ हमरा के आपन परस दऽ
जइसे सुरुज नमी के देला
आ बयार बदरी के।
हमार मउन मुखर हो उठी,
हमहूँ कवनो अहिल्या लेखा सरापित बानीं
तिनका जड़ होला
बाकिर एगो सिला-खंड से त नीमन होला
काहे कि अपना कुल्हि जड़ता के रहलो पर
ऊ कवनो-ना-कवनो फेंड़ के नतइत होला।

पब्लिक हाई स्कूल, सहुली (सीवान)

हमार रचना

श्रीरामवचन लाल श्रीवास्तव

रउरा रचना में रचना हमार रचना।
बाटे अइसे त कुल्हि संसार रचना।।
नीक लागे जंगल, पहाड़ नीक लागे
रसे-रसे पनिआँ के धार नीक लागे।
बाकि बड़ नीक बन के बयार रचना
बाटे अइसे त० ।।

दरस-परस रसरँगे रंग फुलवा,
गमके झमकि कोइलरिआ के झलवा,
बाकि बड़ नीक भँवरा गुँजार रचना।। बाटे ....।।
देहिआ बनवलीं नेहिआ बनवलीं
नयना में नन्हकी पुतरिआ लगवलीं
नीक पुतरी में पुतरी पिआर रचना।। बाटे....।।
तरई में तरई पुतरिआ में पानी
पनिआँ में छलके चढ़ल जवानी,
बाकि बड़ नीक ओकर उतार रचना।। बाटे....।।
गोर-गोर गात मुसुकात नीक लागे,
पुरइन के पतवा झरात नीक लागे,
बाकि नीक लागे पपिहा पुकार रचना। बाटे....।।
नीक लागे बगिआ बहार नीक लागे,
नीक लागे तीर मझधार नीक लागे,
जोहत बटिआ दुलार नीक लागे,
सुसुकत साँस के सिंगार नीक लागे,
बाकि सभ ले बा भीठ मनुहार रचना।। बाटे....
नीक लागे सँझिआ सवेर नीक लागे,
बेरि-बेरि दूइ गधबेरि नीक लागे,
नीक सभले अन्हार-उजिआर रचना।। बाटे....।।

[श्रीमाहेश्वरी विद्यालय, शोभाराम बैसाख स्ट्रीट, कलकत्ता—७०

www.bhojpurisahityangan.com

भल लोग

श्री रंजनकुमार मिश्र

एकलउत लइका खातिर खंड़िए में अखाड़ा खोनवा देले बाड़न—उपदर मिसिर। खूब मेहनत करेला—चकभरनो। रंठल सोंटा अस देह भइल बड़हिस मरद के। मेहनत कके अवहीं पसेना पोंछते रहे तले केहू के बोली सुनाइल—

'मालिक बानीं ?'

'ना। के हऽ ? का ह हो ? बाबू फराकित फिरे का दो त निकलले हा।' चाकभरन के हाँथ जनेव से पीठ रगरत हा रुकि गइल रहे।

'आछा अपने बानी नुं। भोला अहिर के चइत के तिलाहटा देबे आइल रहलीं हें। तनी मालिको से जना देबि।

संत हजाम के बोली चिन्हत चाकभरन पुछलें—'कइसन चइत ह हो ? उन्हुकर हाँथ फेरु अपना काम प हाजिर हो गइल रहे।

'परीछिता के भारा रहल हा बुला। जानीं कि अकसरुआ जीव आ छूरा-कइंची से ने के घर के गोबर-गोंइठा तहान, ऊपर से अंकरे गाइ ! पादलो मोहाल बूझीं। तनी मालिको के जना देबि। अवहीं सउंसे गाँव नेवते के बा—चलतानीं।'

परीछिता के नाँव सुनत चाकभरन के सँउसे देह गनगना गइल जइसे करेंट मरले होखे आ दउरत खून अचके में रुकि गइल होखे। दशहरा के ऊ साँझ अवहीं ले इयाद बा उन्हुका, जब परीछिता के कालाजंग प साफा अखाड़ा से बहरी फेंका गइल रहन। ओकर नाँव से उन्हुका डाह आ सरम दूनो होत रहे, बाकि चाहत ना रहन कि केहू जानो। अगर ओह घरी संतवा हजाम के दीठ इन्हिका प पर जाइत त ओकरा भाँपत देरी ना लागित, बाकिर ओकरा फुरसत काहाँ ? एक हाँथे पछुआ खोंसत आ दोसर हाँथे गमछी सरिआवत बारहो मास हड़बड़िए में रहेला—संतवा हजाम।

× × ×

परीछिता के दुआर गह-गह करता। सउँसे अहिरटोली ओकरे दुआर प। छव महीना के टरेनिंग का बाद दू महीना के छुट्टी आइल बा। इहे उपदर मिसिर त भरती करववले रहन। पचीस सइ नगदी का बादो कतिना निहोरा कइले रहे भोलवा अहिर उन्हुकर। घीव, दही आ दूध के त बिछिलहर क दिहलस। चिकनहट प सँसरत टाँड़ के एक बिगहा खेत उपदर मिसिर किहाँ रेहन हो गइल, तब कहीं जाके परीछिता के नोकरी लागल। अब त परीछिता खेत छोड़ाइए लीही। मलेटरी के नोकरी भाई खेल ना हऽ। सिगरेट त भर बकसे ले आइल बा, चार बोतल असलियो बा बाबू !

दरोगा अहिर त सिगरेट के देख के चिहा गइले। कहले कि ई त एकदमे लइकन के रिनसिन अस लागता रे ! आ लव दे बीड़ी अस मुँह में घ के काठी बार के धरा लेलन। बाकिर जब अंगुरिन से घ के मुँह से निकालल चहलन त बुझाइल कि ओठे छिला जाई। बाड़ा मोसकिल से ओठ छोड़लस त कहले कि हमनीं खातिर बीड़िए ठीक बा रे ! इ साहबन के जीनिस बुझाता।

× × ×

हलफल में रहे परीछिता। कबो घरे जात रहे त कबो दुआर प आवे। आवे-जाये में क बेरा ओकरा केवाड़ी के उपरवारी चउकठ से चोटो लागल, बाकिर हुलास में ओही घरी ले इयाद रहन। आपन हरेक सीख आ सभ सावेंग आजु देखा देवे के फेर में ऊ चलबो करे त परेड के गर्मी में आ घूमे त एड़ी आ चावा प, जवन कि ओकरा टोल के लोगन खातिर गरब के बात रहे। बियाह के चार महीना बादे त नोकरी प चल गइल रहे। मेहर सामान बनावे में चाहे जतना हलकान भइल होखहिस, बाकिर घघाके भीड़ल

www.bhojpurisahityangan.com

रहे। तवनो पर परीछिता के सीख-प-सीख बरिसते रहे....

....'पहिले पानी के खउले दीहे, तब चाह-पत्ती डलिहे। तब चीनी। जब अवँटा जाय, तब तनी पुरहर दूध डाल के कपड़ा से छान दीहे। गिलास बा नुँ? ओही में ढार के तनी भेजवइहे त। अरे! मुँह का ताकऽताड़िस? निरेखिहे बाद मे। दू महीना घरहीं नुँ रहे के बा। पहिले चुल्हवा में आँच त लगाउ....''

सवांग के बोली प नया-नोहर मेहर लजा गइल। उहो का करो। ऊ ओकर मुँह थोरे देखत रहे, ऊ बेचारी त ओकर बात अखेआने में रहे कि कवना का बाद का डाले के बा। तब ले त अइसन ठोकारी परि गइल। ऊ बाकी चुल्हा में आँच लगावत खा मने-मने अगरातो रहे—कतना चीज जानता हमार सवांग—केकरो बा अइसन टोल में! छछइला के मारे सुख के अपार सागर में डूबे-उतराये लागलि। ....एह साल खेत छूट जाई, परह साल घर बनिए जाई, बैल लिआई, खेत किनाई, ऊख के कल, लइका के पढ़ाई....पलंग....तोसक....तकिया....रजाई....एगो सुख के लहर छन भर खातिर ओकरा मुँह आ गाल प लहरा गइल।

सँउसे परिवार आज एगो अजबे गुदगुदीवाला आनंद मे बा। एक किसिम के साइत इहो अहम् हऽ—आने सभे जानि जाउ कि हमनीं का कइसन हो गइल बानीं जा। परीछिता के एक हरकत से सँउसे परिवार के छाती गज भर के हो जाता। गाँव के मेहराइन के आवा-जाही लागल बा आ परीछिता के माई सभे से भगवान के किरिपा के बखान गावतिया। परीछिता के आवत देखतिया त बेरि-बेरि रिरियातिया....

'ए बबुआ इचिका खा ले, का जाने कब ले दो त चइत खतम होई- पाछे सेरा जाई त मुँह में ना परी।'

'तोरा त खाली खियावहीं के लउकता। दुआर प हतिना आदमी आइल बाड़न आ हम घरे खाये लागीं? हई चहवा जल्दी भेजवाउ, फेरु ठाढ़े कुछ देर ले सोचत कहलस—'आ सुन, एक लोटा दूध गरमा के फरके रखिहे, केसो मिसिर गावत खा बीचे मे दूध मँगिहन' कहि के परीछिता घावल दुआर प चल गइल....दरी बिछवावे के बा, गेस बारे के बा, भोंभावाला अबले रेकाड ना लगवलस, ओकरा के टोकल जरूरी बा, पिहटीन आ लवन्डा वाला अबहीं ले ना अइलन सँ।'

भोला अहिर भइंस दूहे के जोगाड़ में रहन, हज-हज से बिजुक गइल रहे-भीरी जाके परीछिता कहलस—

'बाबू! नहा के संकर भगवान के परसदिया तूँहीं चढ़ा दीहऽ। हम तनी एने के सरजाम देखऽतानीं।'

× × ×

'का हो ठाकुर! गऊ बरिसऽताड़ी नुँ?' उपदर मिसिर फराकित से आवत खा संत हजाम के सानी गोतत देखि के पुछले।

'के हु? मालिक? पावलागीं'—कहि के संत हजाम मुँह बिजुकावत हाँड़ी के सभ हँड़घोवन हड़ोर के नाद में उझिल देलन।

'आनन्द रहऽ। पुछलींहाँ कि गऊ बरिसताड़ी नुँ'—उपदर मिसिर के नजर गाइए प रहे।

'काहाँ ए मालिक—चरी रहेला तब नुँ। खाली भूसा प का बरिससु।'

'काहे? अनाज नइखऽ देत का?'

'अनाज काहाँ से दीहीं मालिक, अपने पेट पहार भइल बा, बाकिर बिचार बा कि मलिकार लोग अब की खेसारी दिहन जा त थोरिका खियाइबि। तेलहनो के आफत त एह साल देखते बानी। बताईं भला-खेसारी रोपऽतानीजा गाँव मे आ मिलऽता सहर में।

'हंऽ से बात त बड़ले बा—का करबऽ!' आ फेरु सोचत पुछलन—'ई भोभा कहवाँ बाजता हो?'

'परीछिता नुँ आइल बा असाम से पहिले-पहिल। सुनऽतानी बाड़ा कमाता आजुकाल्हु। चइत होखे के बड़हिस। अबगे त गाँव भर नेवत के लवटलीं हाँ। अपनेहूँ किहाँ चाकभरन बबुआ से कह अइली हाँ। मोतीचूर बाँटी। सबेरहीं फुदुर साह के बोला के बनववलस हा। सुनतानी चाहो बनवावऽता। अपनेहूँ के जूमब नुँ? अबहीं ले त रावा एनहीं बानी।'—संत ठाकुर के गाइ दूहे के अबेर होत रहे।

'हँ-हँ—आइब काहे ना भला। ओकरा खुसी मेका हमार हक नइखे?'—हँसत उपदर मिसिर घर देने मुँह कइले। पंछिन में कउआ के जोड़ देखेवाला हजाम

www.bhojpurisahityangan.com

के जात संतवा के दीठ उन्हुका मुंहे प रहे, बाकिर संतवा के का मतलब—ऊधो आ माधो से।'

फिकिरे फकेहरी परल मुंह लेके मिसिर घरे अइलन। खटिया प पर के दम लेत सोचलन कि खा लीहीं। सोचत आपन जनाना के हँकवलन-'का करताड़ हो—?'

'आँ गइलीं का ?' चाकमरन के माई मुसुकात अइली आ गोड़तारी बइठि गइली—'का कहतानीं ?

'ले आवऽ खा लीहीं। भोला अहिर के इहाँ चइत बाजाये के बा।'

'परीछिता आइल हा का ? बाड़ा आछा हवन सें बेचारा। काल्हे नुँ एक नादी दही दे गइल ओकर माई—दिन लवट गलहिन सें।' चाकमरन के माई के दूध-दही से बाड़ा पिरीत हऽ।

'अइसन-अइसन लोग के दिन लवटे लागी त हमनी के दिन नियरा जाई—जा फुरती से खाएक ले आवऽ—बिलम होई'—कहि के उपदर मिसिर खटिया के सिरहाना धइल बिछवना प पीठ के भेंगे ओठेंग के कपार का पाछा दूनों हाँथ के गेहुआ बान्ह के गोड़ पसार देलन आ आँख मूँद लेलन। ओह घरी उन्हुका मन के परिछाहीं साफ उन्हुका मुँह प झलकत रहे। लिलार प तीन गो डंड़ीर पर गइल रही सें, दाँत प दाँत चढ़वला से मुँह के कवजा कसाइल रहे। साँस गम्हीर रहे, नाक फरकत रहे।.... भोला के एके परीछिता बा, बाकिर आपन पटिदार राम असीस के पाँचो बेटा ले लायक गिनाता। अगर टाँड़ छोड़ा लेलस त मकेया-मसूरिया दूलम हो जाई।....

'सूत का गइली रवों, अबगे खाएक मँगलीं आ अबगे सूते लगलीं।' एक हाँथ में छीपा आ दोसरका में तुरते माँजल लोटा में पानी लेले चाकमरन के माई मिसिर के सोचावट में बिरेक लगा दिहली।

'अरे ना हो, सुतत नइखीं'—एगो लमहर साँस छोड़लन मिसिर....जइसे सभ पलान पचावत होखसु आ छीपा आगे ध के खाये लगले। खात खा बोलसु ना। अँचा के अँगोछी कन्हिअवलें आ चल देलें अहिरटोली—के जानता कि केसो मिसिर के गवनई सूने कि आपन उपदरई के जाल बीने।

× × ×

गँजेड़ी लोग परीछित के मड़ई में बइठ के आपन-आपन छोड़ले रहे—

'गाला हइस त केसो मिसिरवा के—बाह-रे-बाह, जब चाहे त इमिरित बरिसा देवे, बुझाला कि सभके करेज अपने हाथ में ले ले होखे, जब चाहे त डोला देवे'—जगत्तर साफी से दू ठोप पानी गाँजा में गारत कहलन।

'सूवो अहिर गाँजा सुरका खींचे पें अपना दहिने केहू के ना बूझसु, कहलन—ठीक कहत बाड़ऽ। ओकरा गवनई प इनरासन झरे लागेला। वृन्दावन के रास झूठ बा ओकरा आगा।'

बेदरद अहिर एक बे गाँजा टनले रहन त गीटी भूरूकुस होके साफी जरा देले रहे। कहलन—'एक से एक दसतान रखले बा जवान। सँचहूँ ओकर जोड़ नइखे।'

उदबास अहिर अकुता गइलन। उन्हुका गाँजा पिये के बेरा दम छोड़ के दोसर ना पसन परे। कहलन-'अरे माल बनइबे आ कि बाते पगवे ? हम गूल धरावतानी, ओनहूँ नुँ चले के बा।'

दम लगा के उहो लोग चइत के गोल देने चल दिहल। सँउसे गाँव जुटल रहे। गहगहात रहे परीछिता के दुआर। बावन चोप के एगो समएनो गड़वा देले रहे कि गवनई बन्हाइल रही। गोल बहुते सजल रहे। एक कोन प केसो मिसिर रहन, आगे एगो ढोलक प गमछी ध के डुग्गी राखल रहे, ओह प दूगो फिटिका, लगहीं माइक, सोझा—कविराय ढोलकिया, बीचे हुड़का आ ई दूनो जाना के घेर के नीमन दस गो झलवहिया। तेकरा पीछे करीब ५० गो बढ़ियाँ झलवहिया ओकरा बाद लवन्डा के नाचे भ थोरिका जगहा छोड़ल रहे—तवना का बाद करीब डेढ़ सइ आदमी के घेरा त होइबे करी। चइत नुँ हऽ। ढोंढ़ी से खारिज प बोले के परेला। नाभी कबर जाले—ठाठा ना हऽ। पहिलका चइत सुरसती के सुमिरन—

रामा सुरसती मइया परीला रउरी पइयाँ
ए रामा कंठे सुरवा,
कंठे सुरवा होखऽ ना सहइया ए रामा—कंठे सुरवा।

अब चढ़ती प के बखान का कहाव—अमरित के बरखा होइत तबहूँ का जाने अतना रस मिलित कि दो ना।

www.bhojpurisahityangan.com

केसो मिसिरवा छिपिके पताल काट देला। कमाल के हाँथ हइस—मरद के। घइ नुँ लेलस ताल काट के लटका प चइती। ओह-रे-ओह अब त बुझाइल कि करेजा काढ़ि ली। सुदमो मिसिरवा असली झलवहिया हइ। ताल टूटे के बेर ठेहुनिया के जब झाल झार के लोके लागल त झाल काहाँ से लउको, चमकले प बुझाय कि झाल हाँथ में बा।

सुमिरन के बादे त असली चइत गवाला। सुदामा मिसिर सेर भर के झाल एक हाँथ में धइले आ ठेहुनिआइल गोड़ त से विन्हाचली अंगोछी निकाल के पसेना पोंछत कहले—'अब तनी रसगरो होखे—तब नुँ मन हरिआई।'

बूढ़ पुरनियन के लेहाजे केसो मिसिर तनी सकोचत रहन, बाकिर सुदामा मिसिर के बात से तोपल मन के परदा फाटि गइल आ मुस्कियात दोसरकी चइत कढ़वलन-

रामा पिया परदेसवा देवर घरे लरिका ए रामा

केकरा से,

कहीं हम दिलवा के बतिया ए रामा, केकरा से।

एक त चइत, दूसरे केसो मिसिर के टाँसी, तिसरे कविराय के ढोलक—ऊपर से लवन्डा मधे रधकिसुना—बुझाय कि करेजा मुँह में से निकल के बहरी फेंका जाई—चइत सुनत नइखीं, अमरित पीयत बानीं। सउँसे गाँव, एके भंगे बइठल खाढ़ रहे। चइत के ताल प सभकर मन झुलुआ झुलत रहे। परीछिता के मतारी आ मेहर अपना दुमुहाँ के दुआरी प केवाड़ के अलोता बोरा बिछा के चइत के रस लेत रही। तले ले चाकभरन के माई के पीछे से दँवक लेखा बुझाइल आ जब पाछे घुम के देखलस त····'आइ हो दादा!'

× × ×

आग···आग···के डाँक परि गइल। जइसे रसगुल्ला डुबावेवाला पाग में केहू पखान फेंक देले होखे। सउँसे आलम हड़बड़ा के उठल आ धोती खूँटत, पानी आ बाल्टी के फेर में हलफला गइल। कवन केकर बाल्टी ह आ कवन केकर लाठी! सभे सब काम करता। घरी भर में पंडीजी के इनार बालू छोड़े लागल। तबहूँ चइत मास के झनकल फूस के घरते कतना देरी—बुतावत-बुतावत भूँसा के खोंप से ले के अनाज आ मेहरारून के सम लूगा-बहुतर भसम हो गइल। भँइस उँकरत-छटपटात रगहा तुरावत रहीं सँ।

छाती पीट के रोवे लागल—भोलवा बो आ ओकर पतोह। सुख के सँउसे नगरी ढह गइल। दोआ के सँउसे तेल ढरक गइल। असरा पिहुदा गइल आ ठीक उलुटा अब दुख के अनेकन चित्र आँखिन के सोझा आवा-जाही करे लगलन सँ। भोलवा के आँख के आगे अन्हार छा गइल। बूढ़ सरीर, बुझाय कि एही हूके टूट मत जाय। परीछिता के बुझाय कि सपना देखत होखे—ठाढ़े। 'हेराम कवन कसूर के अतहत बड़ दंड देलऽ'—मुँह से निकल गलहिस। ओकरा रोआइओ ना छूटत रहे, जइसे सम लोर आग बुतावहीं में सूख गइल होखे। थउस के बइठ गइल।

उपदरो मिसिर आग बुतावे में रहन। भरसक परीछिते आ भोलवा के सोझा ढेर तलफलासु। परीछित के पीठ प हाँथ दे के तोख देत कहलन—'मन थोर ना करेके बबुआ। मरद के बाचा हव। धीरज धरऽ। फेरु भगवान दीहें नुँ। का करबऽ—केहू केहू के देख नइखे सकत एह दुनिआँ में। तोहार नोकरी लवलीं आ केहू के ना, जब हमरा खातिर ई दुसमनागत बा त तोहार बात के कहो! उपदर मिसिर भोला के ओर तनीं कनखी से देखलन।

परीछिता उन्हुकर मुँह देखे लागल। अब ओकर दिमाग ओहिजा चहुँपल कि ई आग लागल कइसे?

एकर जबाब सोचे में मदद देलन उपदर मिसिर—'बबुआ केहू के पाँचों बेटा नालायक होखे आ केहू के एके सिकन्दर निकलो, ई का तूँ कम बुझताड़ऽ। डाह जे ना करा देवे—हे भगवान! जाये दऽ जे जइसन करी, ओकरा आगे आई।'

'ना मिसिरजी! अब त अन्न मुँह मे ढूके के पहिले दुसमन के पेट में भाला ढूकी'—परीछिता के आँख लाल रहहिस।

'अरे ना-ना। अइसन ना करे के रे बुरबकवा'—कहिके उपदर मिसिर चल देलन दोसरकी काठी बार के।

× × ×

बड़ा नेक हवन उपदर मिसिर। दूनो ओर से केस के

www.bhojpurisahityangan.com

रैरबी करे के परेला इन्हिका।.....फउजदारी के केस में दिमाग के जरूरत बा....सोचेलन भोला आ रामअसीस, बाकिर मिसिर के दिमाग बाड़ा मँहग बिकाला। चार साल बीत गइल। रामअसीस के डेढ़ बिगहा आ भोला अहिर के अढ़ाई बिगहा दूध-दही प बिछिलात मिसिर किहाँ आ गइल। दूनो ओर रोपेया देलन। सभको भल करेलन। बाड़ा नेक हवन उपदर मिसिर!

—ग्रा० बेला, पो० कृष्णगढ़ (भोजपुर)

✠

(पेज ७२ के शेष)

मुखोटा चेहरा पर चढ़ा के चुप रहलीं। भउजी आवते सुनावे लगली कि बइसे ऊ लोग कलकत्ता के टेस्ट मैच देख आइल। पचास के टीकट पर दू-दू सै रोपेया के ब्लैक देवे के पड़ल, तबो ऊ लोग हिम्मत ना हारल। कानपुर वाला मैच त कमेंट्रिए पर कट रहल बा, बाकि मद्रासवाला अगिला मैच में ऊ लोग फिर जरूर जाई। ई सुनके ऊ लोग के इज्जत हमरा परिवार में अतना बढ़ गइल जानुक ऊ लोग बारो धाम के दरसन कइके आइल होखे। ऊ लोग के गइला पर श्रीमतीजी बहुत गँहिड़ साँस लेली, बुला कहत होखसु कि—बड़ा पुन्न-परताप से नीमन पुरुख से भेंट होला। ओकरा बाद हमरा के अइसे तिकवली जइसे हम आदमी ना कबाब के हड्डी होखी।

आह दिन, रात में हम देखत का बानी कि मद्रास में क्रिकेट मैच हो रहल बा। दर्शकन में भउजी संगे हमरो श्रीमती जी बइठल चिनिया-बदाम खा रहल बाड़ी। सभसे अचंभा के बात ई कि हम क्रिकेट के कमेंटी कइ रहल बानी आ उहो भोजपुरी में। कवो मौसम के सोहावनापन के बरनन करत बानी, कवो खेलाड़ी लोग के परिचय देत बानीं। कप्तान लोग सिक्का उछाल रहल बा। खेल चालू भइल। सुरूए से रंग जमे लागल। तबे एगो कुकुर स्टेडियम में घुस गइल आ गेंदा लपक के लोक लेलस। खेलाड़ी लोग आ अंपायर कुकुर के लखेद रहल बाड़न। कुकुर भाग रहल बा। दर्शक लोग हँस रहल बा। तबे, के जाने काहाँ से मैदान में पचासन कुकुर घुस गइले सँ आ भोंक-भोंक के चहेटे लगले सँ। अब दर्शकन आ खेलाड़िन में भगदड़ मच गइल। हम कुक्कुरन के क्रिकेट प्रेम के जोर-सोर से बरनन कइ रहल बानीं। अब कुकुर हमरा देने बढ़लन सँ। हमरा हाथ से माइक छुटत नइखे। हम जान बचावे खातिर पुकार रहल बानीं। कुकुर हमरा एकदम नियरा आ गइलनसँ। हमरा से भागले नइखे जात।

तबे नींद टूट गइल। पसेना से भींज गइल रहीं। देखलीं घर भर हमरा खटिया के चारो ओर खड़ा बा। श्रीमतीजा हमरा मूँड़ी पर पानी थोपत रही। चिंता भरल आवाज में पूछली—कवनो खराब सपना देखत रहीं का? अब कइसन जीव बा?

प्राचार्य
—एस० पी० जैन-कालेज
सहसराम (रोहतास)

———

www.bhojpurisahityangan.com

समीक्षा

श्रीरामकथा (प्रथम चरित्र) भोजपुरी काव्य *

रामचरित्र पर बहुते साहित्य बिखरल पड़ल बाड़न सें। 'वेद-पुराण-निगमागम' से लेके वाल्मीकि, भवभूति के 'उत्तर रामचरित्र', 'अध्यात्म रामायण' तुलसी आ उन्हुका समय के दोसरो-दोसर रीतिकालीन कवियन आ आधुनिक कलम के धनियन तक में।

गुप्तजी साइत एही से कहले रहलन -

राम तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है।
कोई कवि बन जाय सहज संभाव्य है॥

जहाँतक भोजपुरी के सवाल बा, राम से संबंधित अबहीं ले हमरा नजर से दुर्गाशंकर प्र० सिंह 'नाथ' के 'भोजपुरी रामायण', विद्यार्थीजी के 'कौशिकायन' आ 'सेवक यन' (अप्रकाशित), कुंजनजी के 'सीता के लाल' आ विप्रजी के समीक्षात्मक गद्य-ग्रंथ गुजरला का बाद ई श्रद्धानन्दजी के 'श्रीरामकथा (प्रथम चरित्र)' सामने बा।

सवाल सहज बा कि जब एतना कुछ लिखल जा चुकल त फेरु गावल गीत गावे के का जरूरत रहल हा? एही दृष्टि से जब हम किताब पढ़े के शुरू ककलीं त एकर हर खंड हमरा नया कुछ लेले बुझाइल आ हम मान गइलीं कि आजो के युग में—जहाँ लोग आकाश में डेग बढ़ावत जाता—जादू-टोना आ तिलस्मी मिथकथा से लोग के बहुत देर तक ले भरमावल ना जा सके।

फेरु आज के जमाना में जहाँ तथाकथित जात, धरम, वंश आदमी के बाँट रहल बा आ पूंजी के जड़ोंकनुमा सूँढ़ मे खून पी रहल बा आदमी के आदमिए, का हमनी जागरूक कलाकारन के इहे करतब बा कि हम आम लोग के उहे किस्मत, पूर्वजन्म आ भगवान के नाम पर लुटवावत रहीं? इयाद राखीं—जुलुम करेवाला ओतने दोषी बा जेतना जुलुम बरदाश्त करेवाला आ साथे-साथे जुलुम होत के चुप-चाप देखहूँवाला।

एह सभ तर्क आ सवाल के कसौटियन पर पाण्डेयजी के श्रीरामकथा खरा उतरतिया। हम जादे न कहके एह किताब के कुछ खास खंडन के कहानी थोरे में जना देल चाहतानीं, ताकि अपना अखियान से पाठक एह काव्य के मरम आ अलग-थलग कहानी बूझि जाउ।

अवतार खण्ड में—राम चारो भाई के जन्म के कहानी यज्ञ, बरदान-अभिशाप आ ईश्वर अवतार के जरिए सहजे आइल बा कि दशरथ के तीनो रानी में कौसिला से राम भइलन, कैकेयी से भरत आ सुमित्रा देवी से लखन आ शत्रुहन।

बाल खण्ड में—राम लड़काइएँ से सभ जात के लइकन साथे सम भाव से खेलल पसन्द करत बाड़न। सचहूँ अबोध बालक का जाने कि ओकरे अइसन लइकन में कवन ऊँच हु, कवन नीच, कवन छूए लायक आ कवन अछूत? करमकांडी बसिष्ठ के जब ई नइखे सोहात त ऊ दशरथ के चेतावताड़न कि लरिकन के बाहर कतहूँ भेज दीं ना त बहक जइहन सें।

ज्ञान खण्ड में—राम के शिक्षा-दीक्षा लेके दशरथ के चिन्ता बढ़ता। ऊ मने-मन तलाशताड़न अइसन गुरु जे राम के साँच माने में आदमी बना देवे आ विश्वामित्र उन्हुका मन पर चढ़ जा ताड़न। ऊ खुदे आदर सहित ओह सच्चा गुरु के बोलवा के राम-लखन के सँउपि दे ताड़न।

यज्ञ खण्ड में—राम गुरु के देश में शोषण, अत्याचार के नंगा नाच देखताड़न :

"देखि के फेरत बा मुँह शूद्र से विप्र-समाज छुआत न बा।
अति गर्व से मानि महा निज वंश के, छुअल भोजन खात न बा॥

---

* लेखक : श्रद्धानन्द पाण्डेय, प्रकाशक : रचना प्रकाशन, पो० बोकारो थर्मल—८२९१०७, जिला गिरिडीह (बिहार) मूल्य : चार रोपेया।

www.bhojpurisahityangan.com

छकि के मदिरा, पर-नारि के भोगत, घूस के लेत
लजात न बा।
श्रम के बिन चाभत बा लुचुई, अब दीन के दुःख
सहात न बा॥"

साधारन लोग तबाह बा आ मध्यम वर्ग के चरित्रो पर एह धरम के गलत व्याख्या के कुप्रभाव पड़त जाता।

"देखा-देखी विप्र के करत सभलोग नीच
आचरण छोड़ि के विवेक, लोक-लाज के।
धन, पद, जाति के बड़ाई बा बढ़ल जात,
केहू बा न चाहत कइल श्रम काज के॥"

राम दबल लोग के संगठित कके उन्हुका मदद से अइसन लोग (ताड़का,सुबाहु आदि) के हरावताड़न। तब 'रामरेखा घाट' पर गुरु के देश में जनप्रिय सरकार के फेरु से स्थापना होतिया।

अहल्या उद्धार खण्ड त आउर सोभाविक लागता जब राम गौतम के गाँव में राम ई बूझि जा ताड़न कि एगो औरत फाटल लुगरी में गाँव से बहरी निकाल देल गइल बिया आ ऊ अछूत-नियर उहँही झोंपड़ी बनाके लाजे पथर होके रहतऽतिया। राम के पुछला पर गाँव के मुखिया बतावताड़न कि एह नारी के गोड़ जवानी में ऊँचा-खाला पड़ गइल रहे जेकर फल ओकर पति आ समाज आज दे रहल बा।

राम 'गलती कइल' मानव के सहज गुन बतावत नारी के महातम झलका देत बाड़न आ तब आग्रह करत बाड़न कि समाज के अहल्या जइसन नारी के अपना लेवे के चाहीं। लोग ओइसने करऽता।

बिवाह खण्ड में ई बात चारों ओर फइल चुकल बा कि सीता कुल-हीन ना जाने केकर, कवना जात के धिया हई। उन्हुका बिआह में दिक्कत होखे लागता। समझदार जनक देश-विदेश के राजा लोग के नेवत के ई शर्त राखताड़न कि जे जात, वंश के बन्हन तूरी, सीता ओकरे साथे बिआहल जइहन। बा केहू समाज में अइसन मरद ? सभे एह चुनौती पर मूड़ी गाड़ लेता आ गुरु के कहला पर राम खुशी-खुशी आगे बढ़के बिआह क लेताड़न।

"धनु जाति के तूरत बानी अबे जग में समभाव के राज बदे।
प्रण जीवन मोर समर्पित बा, निज धर्म, स्वदेश, समाज बदे॥"

धरम के ठिकदार परशुराम से भेंट होता; बाकी समुझवला पर उहो मान जा ताड़न कि ई आपसी फूट से देश आ समाज कमजोर होला आ बाहरी दुश्मन के बन आवेला :

"भरमत रहुवे भरम में हमार मति,
सत्य धर्म बाटे श्रीराम जे बतवले।"

अन्त के उल्लेखनीय खण्ड गृहकलह सचहूँ सम्हार से बाहर तब हो जाता ज 'कैकेयी ठान' ले ताड़ी कि राम जाने कवना कुजात के लइकी से बिआह क लेलन, हम उन्हुका के गद्दी पर ना बइठे देबि। राम घर-परिवार, देश-समाज में फूट पड़े का डर से दूध के माछी नियर खुदे मेहर सहित अपना के अलग कइ लेताड़न। संगत के असर भाई लखन पर पड़ल बा। ऊ एह अनेयाय के विरोध करत भाई के साथ देताड़न या एहतरे तीनो आदमी जंगल के राह लेता।

'सही हम काम कइनीं देश, धर्म समाज के खातिर।
अवध गृह-युद्ध में उलझे न हमरा राज के खातिर॥'

खंडे खंड के कहानी के बाद अलग से एकरा विशेषता पर कुछ कहला के जरूरत नइखे रह जात। जरूरत बा खाली मौजूदा परिस्थिति आ आज के संदर्भ में एह कहानी के जँचला, परखला आ उपयोगिता खोजला के।

हमरा विरोध बा त एह लोक-छोड़ुआ (पाण्डेय जी) के किताब के शुरू आ अन्त में लीक पर चलला के। एह इन्कलाबी पुस्तक आ पारंपरिक कहानी के नया रूप देबे में समर्पणम्, ध्यानम्, आत्मकथ्य, प्रस्तावना, बन्दना खण्ड आ श्री रामकथा फलम् आ आरती जइसन क्षेपक के कवनो प्रयोजन ना रहल हा। एह से लोग बरगलाई, कवि के विद्रोही चरित्रो पर संदेह करी।

पुस्तक के शास्त्रीय विशेषता (रस, छंद, अलंकार) आ भाषा हम दोसरा समालोचक खातिर छोड़ दे तानीं। उद्देश्य का आगे ई सभ हमरा गौण लागता।

पुस्तक के साज-सज्जा कुछ आउर आकर्षक बन परित त सोना में सोहागा होइत, लोकप्रियता बढ़ित। तबहूँ पुरान राह पर एह नया कदम बढ़वला खातिर भाई पाण्डेय जी के बधाई।

तैयब हुसैन पीड़ित, हिन्दी-विभाग
जेड० ए० इस्लामिया कालेज, सीवान

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी अकादमी

पत्रिका

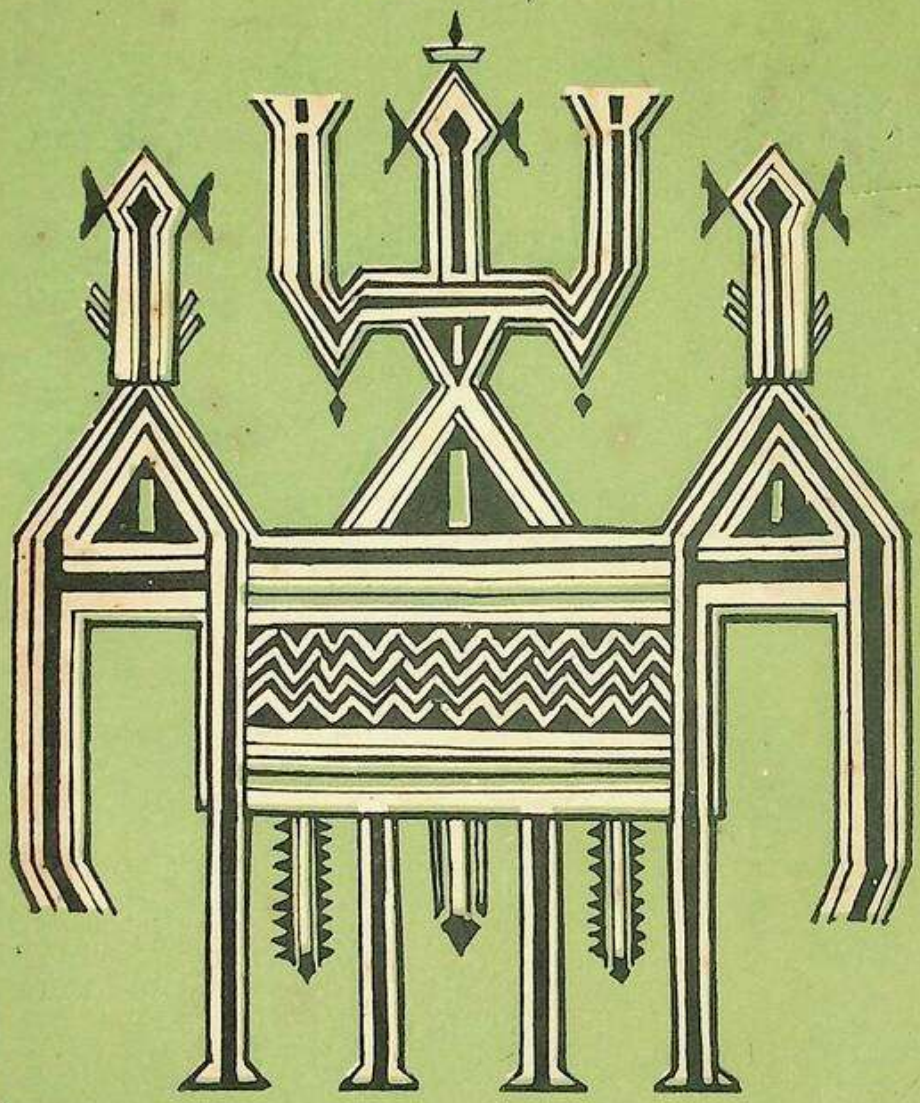

प्रधान सम्पादक

मर्यादा त्रिपाठी स